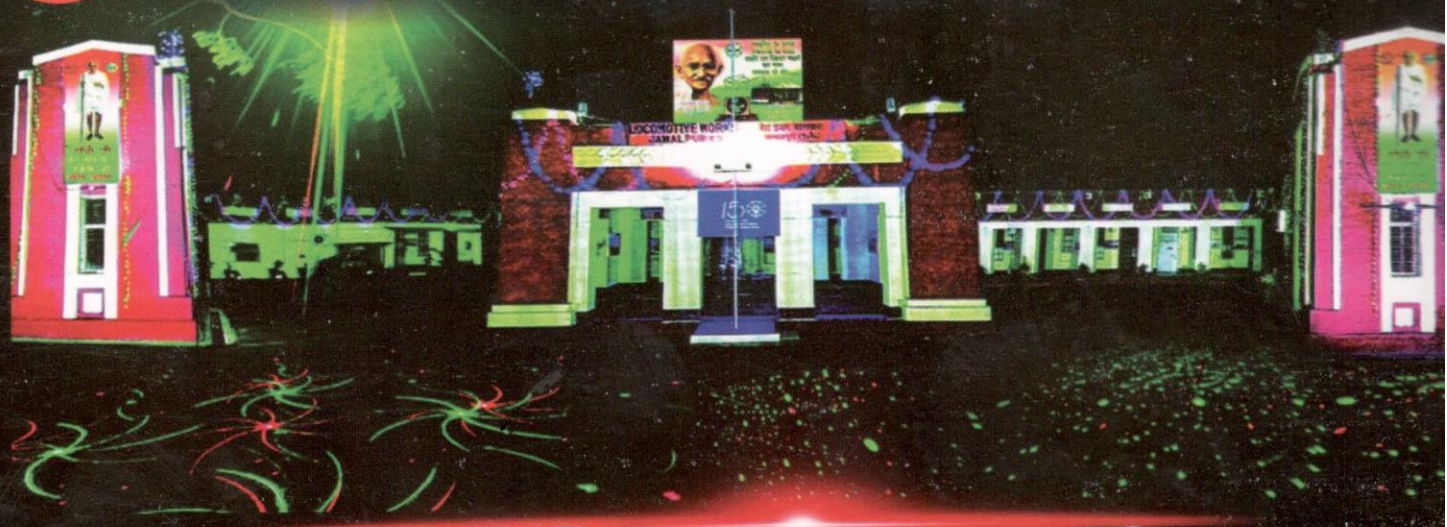
कर्मवीर



25 वाँ रजत अंक

2018

वर्ष – 25



रेल इंजन कारखाना

पूर्व रेलवे, जमालपुर



दि० 19.12.2018 को पुरस्कार वितरण समारोह 2018 में अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए मु० का० प्र० श्री डी० मारांडी (माइक पर) तथा उप मु० या० इंजीनियर (डीजल) श्री उज्जल हलदर



पुरस्कार वितरण समारोह 2018 में दीप प्रज्जवलन के उपरांत प्रतियोगियों को संबोधित करते हुए स०का०अधि० श्री ए०के० दीक्षित एवं मांचसीन मु० का० प्र० श्री डी० मारांडी, उप मु०याँ० इंजी० (डी०) श्री उज्जल हलदर एवं (खड़े हैं) श्री एम०के० झा

हिन्दी हैं हम



राजभाषा पखवाड़ा 2018 के अवसर पर मुख्य अतिथि का स्वागत संबोधन करते हुए उप मुराधि श्री पी० एन० मांझी



सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई इन्टर कॉलेज, जमालपुर की छात्राएं



हिंदी वाक प्रतियोगिता 2018 में अपना वक्तव्य देते हुए प्रतिभागी एवं निर्णायक अधिकारीगण



दि० 14.09.2018 को राजभाषा संदेश का विमोचन करते हुए पूर्व मु० का० प्र० श्री अरविन्द कु० पाण्डेय एवं अन्य अधिकारीगण



राजभाषा पखवाड़ा समारोह 2018 के अवसर पर 18.09.2018 को सभी प्रतिभागी अधिकारियों के साथ पूर्व मु० का० प्र० श्री अरविन्द कु० पाण्डेय (बीच में)



पूर्व रेलवे
EASTERN RAILWAY

Chief Works Manager
Locomotive Workshop
Eastern Railway
Jamalpur 811214
Phone No. : 06344-243105

डी. मारांडी
आईआरएसएमई
D. Marandi, IRSME

शुभकामना संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे, जमालपुर की हिंदी पत्रिका "कर्मवीर" के 25वें अंक का प्रकाशन हो रहा है । यह पत्रिका लौह-नगरी जमालपुर के कर्मवीरों के बीच विगत कई वर्षों से राजभाषा हिंदी के बहुमुखी प्रचार-प्रसार में अहम् भूमिका निभा रही है । किसी भी पत्रिका का बहुआयामी होना अपने आप में श्रेष्ठता का द्योतक है ।

"कर्मवीर" के 25वें अंक के प्रकाशन से जमालपुर कारखाना में कार्यरत रेल कर्मियों में हिंदी के प्रति अभिरूचि एवं हिंदी में साहित्य सृजन की क्षमता बढ़ी है और सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ है ।

मैं हिंदी पत्रिका कर्मवीर के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और सम्पादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ ।

(दयानिधि मारांडी)
मुख्य कारखाना प्रबंधक

कर्मवीर

राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध

* हिन्दी पत्रिका *

वर्ष :25 | रजत अंक | अंक-25

संरक्षक:

दयानिधि मारांडी

मुख्य कारखाना प्रबंधक

पूर्व रेलवे, जमालपुर

●

संचालन समिति:

पी.एन. मांझी

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं

उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (परियोजना)

पूर्व रेलवे, जमालपुर

००

अशुतोष यादव

कारखाना लेखा अधिकारी (प्रभारी)

पूर्व रेलवे, जमालपुर

●

संपादकीय पत्र व्यवहार :

संपादक 'कर्मवीर'

राजभाषा विभाग

रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे, जमालपुर

मुंगेर (बिहार)-811214

प्रधान संपादक :

पी.एन. मांझी

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

●

संपादक :

कौशल किशोर शुक्ल

वरिष्ठ अनुवादक

●

उप संपादक :

मृत्युंजय कुमार झा, वरिष्ठ अनुवादक

एवं

डॉ. मधुसूदन दत्त, वरिष्ठ अनुवादक

●

सह संपादक :

नजरूल इस्लाम खाँ, कनिष्ठ अनुवादक

हिमालय कुमार हिमांशु, कनिष्ठ अनुवादक

●

सहयोग :

आमोद प्रसाद, मुख्य हिंदी टंकक

वितरण नि:शुल्क

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं । रेल प्रशासन या संपादक मंडल उनके लिए जिम्मेवार नहीं है ।

मुख्य पृष्ठ सज्जाकार

के.के. कमलेश

ई.डी.पी. सेंटर, पूर्व रेलवे, जमालपुर



प्रधान संपादक की कलम से...

पी.एन. मांझी
P.N. Manjhi

गतांक से आगे.....

सर्वविदित है कि जमालपुर कारखाने को एशिया का प्रथम कारखाना होने का गौरव प्राप्त है । इस गौरवमयी परंपरा की कड़ी में राजभाषा विभाग, पूर्व रेलवे कारखाना, जमालपुर द्वारा हिंदी पत्रिका "कर्मवीर" का प्रकाशन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है । "कर्मवीर" का 25वॉ अंक आपको सौंपते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है ।

कारखाने के कर्मवीरों ने अपने उत्कृष्ट विचारों को "कर्मवीर" पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है । "कर्मवीर" ने कारखाने के कर्मठ कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी का सुन्दर माहौल तैयार किया है । उनकी साहित्यिक प्रतिभा को "कर्मवीर" के माध्यम से सजाया-संवारा और तराशा गया है । कार्मिकों ने पत्रिका को अत्यधिक उपयोगी बनाने के लिए वैविध्यपूर्ण रचनाओं से इसे संवर्धित और उपयोगी बनाने का प्रयास किया है । उनके इस सराहनीय प्रयत्न ने हर बार "कर्मवीर" के कलेवर को नवीनता प्रदान किया है । कारखाने के कार्मिकों द्वारा लिखे गये इनके उद्‌गार आपको पसंद आये तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेंगे ।

अंत में, सुविज्ञ पाठकों से साग्रह अनुरोध है कि कृपया अंक-25 की त्रुटियों से हमें अवगत कराने का कष्ट करेंगे । हम आपके सुझावों का हार्दिक स्वागत करते हैं ताकि अगली अंक में इसे सुधारा जा सके । "कर्मवीर" पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं इसके प्रकाशन में कार्यरत सभी कार्मिकों को मैं साधुवाद देता है ।

आगे की बातें अगले पृष्ठों में.....

आपका

(पी.एन. मांझी)
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (परियोजना)

कर्मवीर अंक–25

अगले पन्नों पर.....

क्रम सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	मिथिला पेंटिंग	ब्रजेश कुमार	5
2.	आई०एस०ओ०	अवधेश कुमार	13
3.	राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का सफर	रामेश्वर प्रसाद	16
4.	एक अकेला अंगूठा	विजय कुमार गुप्त	18
5.	अपना सपना	सुशीला त्रिपाठी	19
6.	कर्मवीर	जगवीर राय	23
7.	गजल	डॉ. रामबहादुर चौधरी 'चंदन'	23
8.	युद्ध	कामेश्वर पाण्डेय	24
9.	नई जिन्दगी	प्रमोद कुमार	26
10.	कड़वा सच	अशोक आशीष	28
11.	माता वैष्णो देवी की यात्रा	डॉ. अमित कुमार साहु	29
12.	कविता	मो. परवेज इकबाल	30
13.	अजब-गजब लोक	अशोक कुमार शर्मा	30
14.	ग्लोवल वार्मिंग	राजेश कुमार राम	31
15.	विचार और तथ्य	दया शंकर श्रीवास्तव	33
16.	दान के दस रूपये	रेणु कुमारी	35
17.	प्यार न करना दिल्ली में (साभार)	डॉ. विनय कुमार	36
18.	पेड़-पौधे	कृष्णा नन्द चौधरी	36
19.	दरकते रिश्ते की डोर	शंभू साह	37
20.	माता-पिता	प्रीति सहाय	38
21.	राजभाषा हिन्दी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण	बेबी सरोजा	39
22.	ताले की आत्मकथा	रवि कुमार	41
23.	आतंकवाद और मीडिया की भूमिका	उषा देवी	43
24.	जीवन की सार्थकता	अशोक आशीष	45
25.	जिन्दगी	नूतन कुमारी	45
26.	अन्न दोष	गोपाल जी	46
27.	आनंद	अवनीन्द्र नारायण लाल	47
28.	स्वच्छता ही देवत्व	कृष्ण कुमार कमलेश	52
29.	नारी सम्मान का महत्व	नन्दलाल सिंह	53
30.	अजगैबी नाथ धाम	कौशल किशोर शुक्ल	54
31.	राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर	साभार	59

सांस्कृतिक-लेख

मिथिला पेंटिंग



– ब्रजेश कुमार
वरीय अनुभाग अभियंता, विद्युत क्रेन,
उप मु.वि.अभि./जमालपुर

'मधुबनी' जहाँ की भाषा बहुत मधुर एवं सरस है, बिहार प्रान्त का एक प्रमुख शहर है । मधुबनी की मुख्य भाषा मैथिली है । लोगों का कहना है कि मैथिली भाषा इतनी मधुर है कि मिथिला के लोग यदि क्रोधित होकर भी बोलते हैं तो लगता है; कोई मधुर बात जल्दी-जल्दी में कह रहे हैं । उनके अनुसार उस समय में भी भाषा कर्णप्रिय लगती है ।

राजा जनक की भूमि मिथिला अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में विख्यात है । मधुबनी को मिथिला-संस्कृति का केन्द्र माना जाता है । जब मिथिला-संस्कृति की बात करते हैं तो कुछ नाम जो स्वतः ही हमारे मस्तिष्क पटल पर उजागर हो उठते हैं वे हैं- मिथिला पेंटिंग अथवा मधुबनी चित्रकला, पान, मखाना, माछ (मछली) और ललका पाग (लाल रंग की एक खास प्रकार की टोपी, जो विवाह एवं धार्मिक अनुष्ठानों में पहना जाता है।) मधुबनी को विश्व स्तर पर यदि किसी ने पहचान दिलाई तो वह है यहाँ का मिथिला पेंटिंग एवं मखाना का उत्पादन ।

मिथिला पेंटिंग का उद्भव कब हुआ और कैसे हुआ यह ठीक-ठीक बता पाना कठिन है परन्तु यह विधा प्राचीन काल से ही चली आ रही है । ऐसा माना जाता है कि राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों को चित्र बनाने के लिए कहा और उन महिला कलकारों द्वारा जो रचनात्मक कलाकृति बनाई गई वह मिथिला चित्रकला के नाम से प्रचलित हो गई । समयांतराल के बाद धीरे-धीरे इसकी पहचान इतनी बढ़ गई कि इस चित्रकला की पारंपरिक शैली में अब आधुनिक कला शैली का भी समावेश हो रहा है । जिसके परिणाम स्वरूप यह कला दीवारों एवं घर-आँगन के फर्श से उठकर परिधानों, बैग, पर्श, घड़ा, चादर, बेल्ट, कागज, ग्रीटिंग्स कार्ड, निमंत्रण कार्ड, लैंप, साड़ी एवं घरेलू सामान इत्यादि में स्थानांतरित हो गया । इसके फलस्वरूप फैशन के आयाम को एक नया रूप मिल गया जिसे बहुत पसंद किया जा रहा है ।

यहाँ यह उल्लेख करना सार्थक होगा कि 1933-34 में इस चित्रकला के गुण को बारीकी से पहली बार श्री विलियम जी आर्चर (तत्कालीन एस.डी.ओ.) ने पहचाना एवं इसे रेखांकित किया । वास्तव में 1934 में मिथिला क्षेत्र में आए भूकंप की जायजा लेने के लिए श्री आर्चट अपनी पत्नी मिल ड्रेड के साथ क्षेत्र के भ्रमण के दौरान ढ़हे हुए दीवार पर सुन्दर चित्रकारी को देखकर दंग रह गए । वे इस विलक्षण चीज का फोटो खींच कर ले गए । उन्होंने लेख व फोटो के माध्यम से पूरी दुनिया को इस चित्रकला से परिचित कराया ।

मिथिला पेंटिंग मधुबनी, दरभंगा एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है । इस कला के प्रमुख केंद्र हैं- मधुबनी, भवानीपुर, राँटी, जितवारपुर, रैयाम, सिमरी, लहेरियासराय आदि । इस कला में

हिन्दू धर्म से लेकर लोकप्रिय ग्राम कथा एवं उसके प्रभाव की छाप मिलती है । इसमें हिन्दू देवी, देवता, प्रकृतिक चीजें एवं कुछ क्षेत्रीयता विशेष का समावेश रहता है ।

विगत कुछ वर्षों से मधुबनी चित्रकला का प्रदर्शनी विदेशों में भी लगाई जा रही है । जापान, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में इस कला को सर्वोपरि लोक चित्रकला माना जा रहा है । परिणाम स्वरूप आज इस कला की विदेशों में निर्यात की भारी माँग है । इस बात की पुष्टि इससे स्पष्ट होती है, जब मिथिला चित्रकार गंगा देवी को 1988 में जापान के मिथिला म्यूजियम में मिथिला पेंटिंग करने के लिए आमंत्रित किया गया था ।

योगदान -

इस चित्रकला को आगे बढ़ाने में मिथिला की कुछ महिलाओं का बहुत योगदान रहा है । मधुबनी से कुछ किलोमीटर दूर जितवारपुर की सीता देवी (बिहार रत्न एवं शिल्प गुरू से सम्मानित) द्वारा बनाया गया चित्र का प्रदर्शनी दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता के साथ-साथ विदेशों में भी हुआ है । सन् 1976 में इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इसके साथ-साथ यहाँ कि जगदम्बा देवी द्वारा बनाये गये चित्रों का भी देश एवं विदेश में भारी माँग है । जगदम्बा देवी को राष्ट्रीय पुरस्कार एवं पद्मश्री से सम्मानित किया गया है । इसी पंक्ति में उरबा देवी एवं यमुना देवी मिथिला की पहली प्रसिद्ध हरिजन चित्रकार हैं । लोक-कथा पर आधारित इनका चित्र बहुत प्रसिद्ध है ।

इस प्रकार से अनेकों नाम हैं जो मिथिला पेंटिंग को एक खास मुकाम तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व योगदान दिये हैं, वे हैं -

महासुन्दरी देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार एवं पद्मश्री से सम्मानित)
शान्ति देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
बौआ देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
यमुना देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
चानो देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
विंदेश्वरी देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
चंद्रकला देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
शशिकला देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
लीला देवी (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
गोदावरी दत्ता (राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित)
पूनम दास (राष्ट्रीय पुरस्कार पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा सम्मानित)
बाछो देवी, भूमा देवी इत्यादि ।

इस कला को जीवन्त बनाए रखने में कुछ ऐसे भी नाम हैं जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान नहीं मिला है परन्तु अपने क्षेत्रीय समाज में एवं परिवार में इस कला को विकसित रखने में अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं । वे हैं-

ललिता देवी (रामायण कथा चरित चित्रकला के लिए प्रसिद्ध)

नीलम कर्ण (कोहबर चित्रकला एवं चादर पर रामायण कथा चरित चित्रकला के लिए प्रसिद्ध)

शीला रानी दास (सीता स्वयंवर एवं राधा-कृष्ण लीला एवं अन्य वैवाहिक संबंधी मिथिला चित्र बनाने में निपुण)

शोभा दास (छोटे-छोटे कागज पर मिथिला चित्रकला का प्रयोग कर ग्रीटिंग्स, घरेलू साज-सामान, परिधानों में चित्र (उकेरने अथवा बनाने में निपुण)

ये वो नाम हैं जो स्वयं अपने बल पर बिना किसी सहयोग के इस चित्रकला के माध्यम से मिथिला संस्कृति की परंपरागत शैली को जिंदा रखे हुए हैं ।

चित्रकारी :

मिथिला पेंटिंग की चित्रकारी में बहुत-सी चीजों पर ध्यान रखना पड़ता है यथा - चित्रकारी कहाँ की जा रही है - दीवार पर, कैनवास पर या कागज पर । उसके अनुसार रंगद्रव्य का चुनाव करना पड़ता है । साथ ही, कूची या ब्रश के प्रयोग को भी जानना पड़ता है । इस चित्रकला को बनाने के पूर्व कुछ खास चीजों की आवश्यकता पड़ती है वे हैं -

(क) दीवार अथवा कैनवास अथवा कागज

(ख) आवश्यक रंगद्रव्य

(ग) कूची अथवा ब्रश अथवा तूलिका

सबसे पहले चित्रकारी हेतु दीवार की सतह को समतल किया जाता है । सतह को समतल करने को मिथिला भाषा में 'दू-लेब करब' कहा जाता है । चिकनी मिट्टी के घोल से सतह को चिकना करने की क्रिया 'छछारब' एवं चूने से सतह को रंगने की क्रिया 'ढ़ौरब' कहलाता है ।

अब बारी आती है रंगद्रव्य की । पहले इस चित्रकला में प्राकृतिक तरीकों से तैयार किये गये रंगों का प्रयोग किया जाता था जिसका स्थान अब रासायनिक रंगद्रव्यों ने ले लिया है । पहले पलास के फूल से नारंगी तथा कुसुम फूल से लाल रंग, बेलपत्रों से हरा रंग बनाए जाते थे । कटहल की गोन्द एवं फिटकीरी को साथ-साथ खौलाकर पीला रंग बनाया जाता था । नील, गोन्द और फिटकीरी को गर्म करके नीला रंग बनाय जाता था । अपराजिता के फूल को गोन्द के साथ खूब खौलाकर बहुत तेज नीला रंग तैयार किया जाता था । दीपक की स्याही में गोबर मिलाकर काला रंग बनाया जाता है । लाल रंग के लिए सिन्दूर का भी प्रयोग किया जाता है ।

दीवार एवं रंग द्रव्य की तैयारी के पश्चात इसका प्रयोग करने हेतु प्राकृतिक कूचियाँ बनाई जाती हैं । रंग को भरने के लिए कूची बनाई जाती हैं । रंग भरने के लिए पुराने कपड़े के टुकड़े को लपेट कर बत्ती बनायी जाती है । रेखाओं एवं छोटे-छोटे चित्रों के अंकन के लिए बांस की कड़ची (टहनी) का प्रयोग किया जाता है । ये घरेलू तरीकों से निर्मित कूची अथवा तूलिका जब कुशल चित्रकार के हाथ में आते हैं तो यह व्यवसायिक रंगद्रव्य एवं ब्रश को भी मात दे देते हैं ।

इस चित्रकला में कूची को एक प्रवाह में रखकर रेखा का अंकन किया जाता है । यह एक मुक्त

हस्त चित्रकारिता है । इसमें कूची के सहयोग से एक आकृति का निर्माण किया जाता है । इस शैली को **'लिखिया'** कहते हैं ।

इस चित्रकला शैली में आकृति को दो तरीकों से रंगा जाता है । आकृति के बाह्य रेखा (आउटलाईन) को काले रंग से उजागर कर उस आकृति में कई मनमोहक रंग भरा जाता है । ठोस रंग को भरने की इस शैली को **'भरनी'** (सेडिंग) कहा जाता है । जब आकृति एवं चित्र को बहुत बारीक अथवा अवश्यकतानुसार मोटी रेखा द्वारा भरा अथवा अंकन किया जाता है तो इस शैली को **'कचनी'** (हैचींग) कहा जाता है । यह प्रायः एक ही रंग का होता है । इसी कचनी और भरनी शैली का प्रयोग पेंटिंग के बार्डर रेखा बनाने में भी किया जाता है । जिससे पेंटिंग की खुबसूरती देखते ही बनती है ।

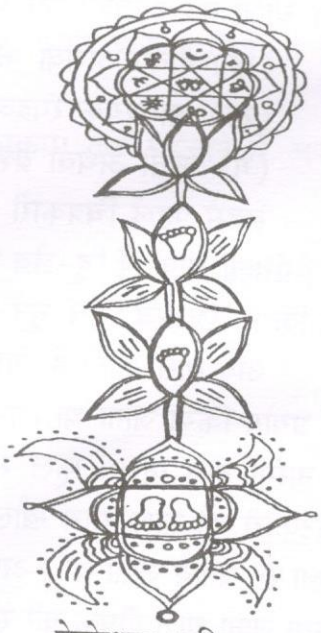
मिथिला पेंटिंग मिथिला की संस्कृति को आदिकाल से एक अलग पहचान दिलाते आ रही है । इस पेंटिंग के अंतर्गत भीत्तिचित्र, भूमिचित्र, अरिपन, रंगोली, कोहबर एवं दिवारों पर बार्डर डिजाइन बनाना आदि आते हैं । यह पेंटिंग अथवा चित्र मुख्यतः पाबनि-तिहार (पर्व-त्योहार), विवाह, यज्ञोपवीत, सांस्कारिक कर्म काण्ड, मुण्डन आदि सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा-पाठ के अवसर पर घर के द्वार, दीवार, फर्श एवं कागज पर (आधुनिक शैली) बनाए जाते हैं ।

अरिपन :

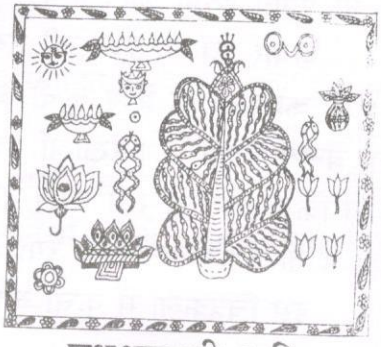
'अरिपन' मिथिला लोक कला की सशक्त विधा है । यह मिथिला चित्रकला का महत्त्वपूर्ण एवं बड़ा आयाम है - अरिपन कला शैली एवं भूमिचित्र शैली । अरिपन संस्कृत भाषा अलेपन से आया है ।

अरिपन बनाने के लिए एक पेस्ट (थोड़ा धुलनशील) का प्रयोग किया जाता है जो अरबा चावल को सिलोट (पत्थर) पर जल के साथ पीसकर तैयार की जाती है । अरवा चावल के इस पेस्ट को अथवा घोल को मिथिला में 'पीठार' कहा जाता है । महिलाएँ इस पीठार में अपनी तीन, दो या एक ऊँगली डुबाकर बड़े ही सुन्दर तरीके से अपने कलात्मक हाथों को घुमाकर एक ज्यामितीय आकृति अथवा पैटर्न बनाती हैं जो देखने में बड़ा ही कलात्मक, रचनात्मक एवं मनमोहक लगते हैं । अरिपन में जो कलाकृति बनाए जाते हैं उन सबका धार्मिक दृष्टिकोण से खास महत्त्व होता है । अरिपन हर पूजा, धार्मिक अनुष्ठान, विवाह में, त्योहार में, उपनयन में एवं बहुत से सामाजिक अनुष्ठानों में बनाया जाता है । अरिपन में 'पीठार' से बनाए गए आकृति के ऊपर सिन्दूर से बीच-बीच में कहीं-कहीं बिन्दू दिए जाते हैं जो इस कलाकृति में और जान डाल देते हैं ।

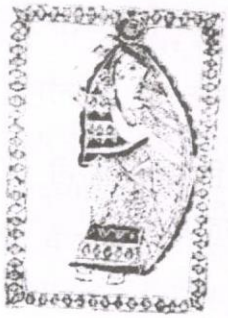
प्रत्येक शुभ अवसर पर अलग-अलग अरिपन बनाने का विधान है तथा सभी अरिपनों की पृष्ठभूमि में कुछ-न-कुछ धार्मिक भावना अंतर्निहित होती है ।



देवोत्थान अरिपन



मधुश्रावणी अरिपन



नयना योगिन
चित्रकला

सांझ अरिपन-संध्या देवी की खुशी हेतु बनाया जाता है ।

देव उत्थान अरिपन को देवोत्थान एकादशी के दिन बनाया जाता है जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष के एकादशी को मानाया जाता है । इस दिन सांझ में तुलसी चौड़ा के पास अष्टदल अरिपन बनाया जाता है । देवता घर में भी अरिपन बनाया जाता है और इन दोनों को जोड़ा जाता है । बीच में पद चिन्ह होते हैं । जैसा कि चित्र में दिखाया गया है ।

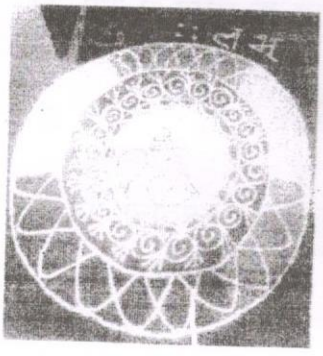
चौठचंद्र (चौरचन) अरिपन चौठचंद्र पूजा में बनाया जाता है जिसमें गोल-गोल एवं कमल फूल वाला अरिपन बनाया जाता है ।

मधुश्रावणी अरिपन मुख्यतः मधुश्रावणी पूजन में बनाया जाता है । इस अरिपन में मैनापात एवं लिपटा हुआ साँप, सूर्य, चंद्र, कमल का फूल, नवग्रह, कलश की प्रमुखता होती है । इसी प्रकार दीवाली की रात को दीवाली अरिपन बनाया जाता है । कुछ खास अरिपन हैं जो मिथिला के लोग उस खास त्योहार में बनाते हैं वे हैं बटसावित्रिक अरिपन, पृथ्वी पूजा अरिपन, भ्रातृ द्वितीया अरिपन, छठि अरिपन, अनन्त पूजा का अरिपन, जितिया अरिपन, कोजागरा अरिपन, तीज अरिपन, शिवरात्री अरिपन, इत्यादि ।

अरिपन में अंकित सभी रेखाएं एवं चिह्न प्रतीक बोधक होते हैं । जो पुराणों और धर्मशास्त्रों के गूढ़ तत्त्वों को द्योतित करते हैं, यथा-त्रिकोण रूप में पृथ्वी अरिपन मातृशक्ति बोधक है । मंदिर रूप में सांझ अरिपन ब्रह्माण्ड का परिचायक है । अष्ट दल अरिपन भगवान विष्णु का प्रतीक है । दो परनी पत्तों का अरिपन जिसमें एक पत्ते के ऊपर दूसरे पत्ते को रेखांकित किया जाता है वह वर-वधू युगल के अविरल और अविछिन्न संबंध का द्योतक है । नवग्रह अरिपन नवग्रह पूजा हेतु बनाया जाता है ।

भित्तिचित्र

भित्तिचित्र में दीवारों को पेंटिंग युक्त बनाकर उस पर चित्रकारी की जाती है । इस कला में माँ काली, माँ दुर्गा, शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, विष्णु, लक्ष्मी, गणेश, सरस्वती एवं दशावतार प्रचलित हैं । भित्तिचित्र में मछली, कछुआ, तोता-मैना, हाथी-घोड़ा, सूर्य-चंद्र, मयूर की प्रमुखता रहती है । इन सभी चित्रों का अपना अलग-अलग महत्व है एवं इनका जीवन के साथ प्रतीकात्मक संबंध है । भित्तिचित्र में नयना-योगिन (नैना-जोगिन), कटहल का पेड़, मोर, सामा चकेवा का चित्रण तथा राजा सल्हेस का चित्रण प्रमुख है । मिथिला के लोग अपने गोसाउनी घर (कुल देवता का कक्ष) में तरह-तरह के भित्तिचित्र मंगल कामनाओं की पूर्ति के लिए बड़े ही रूचि के साथ बनाते हैं । इस कला में महिलाएं बहुत निपुण हैं ।



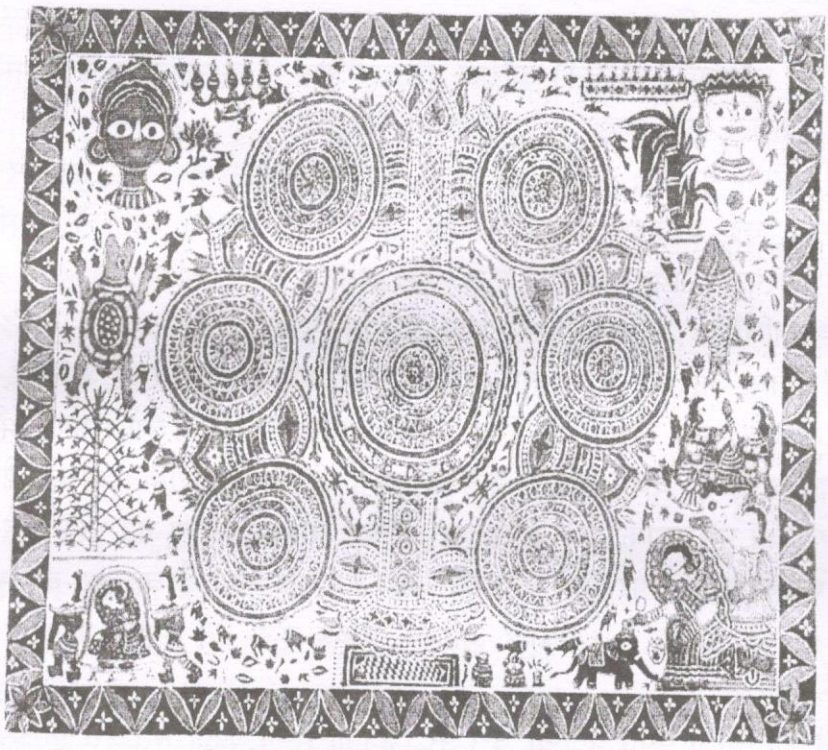
रंगोली :

रंगोली एक प्रकार का भूमिचित्र है । इस मिथिला लोक चित्रकला में भूमि को सर्वप्रथम साफ किया जाता है । फिर इस पर अपनी कलाकृति को चौक अथवा पेन्सिल से भूमि पर उजागर करते हैं । उसके बाद आकृति के बाह्य लाइन (आउटलाइन) को चौरठ अथवा अरवा चावल का आटा से उकेरते हैं । फिर आकृति को रंगे हुए चौरठ से मनमोहक पैटर्न में भर देते हैं जैसा कि चित्र में दिखाया गया है । रंगोली प्रायः दिवाली, दशहरा में घर के मुख्य द्वार

पर बनाया जाता है । रंगोली मिथिला लोकचित्र कला की सबसे रचनात्मक एवं मनमोहक चित्रकला में से एक है ।

कोहबर :

कोहबर मिथिला पेंटिंग का आधार स्तम्भ है । जो अनेक प्रतीक चिन्हों का निरूपण करती है जिसमें मंगल सूचक मान्यताएँ अंतर्निहित होती हैं । यह घर की दिवारों पर बनाए जाते हैं ।



कोहबर चित्रकला का एक रूप

कोहबर घर उस कक्ष को कहते हैं जहाँ शादी की रात दूल्हे के द्वार लगने से पहले तक दुल्हन गौरी माँ की पूजा करती है (जिसे मातृका पूजा भी कहते हैं) एवं शादी के बाद दुल्हा-दूल्हन साथ में चतुर्थी (विवाह के चौथे दिन तक) तक इसी कक्ष में वास करते हैं एवं कोहबर की पूजा करते हैं । महिलाएं बताती हैं कि कोहबर कला के मंगल चिन्ह निर्विध्न वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न होने की कामना को लेकर बनाया जाता है ।

तुलसीदास रचित राम चरित मानस के बालकाण्ड में राम-सीता के ब्याह के प्रसंग में राम को कोहबर में ले जाने का उल्लेख किए हैं -

कोहबरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाई कै ।

(सुहागिन स्त्रियाँ सुख पाकर कुवँर और कुवंरियों को कोहबर में लायीं और अत्यन्त प्रेम से मङ्गलगीत गा-गाकर लौकिक रीति करने लगीं ।)

कोहबर चित्रकारी में चित्र के केंद्र में पुरैन के सात पत्ते बने होते हैं जो एक दूसरे से जुड़े रहते हैं । पुरैन के पत्ते और कमल के फूल सिर्फ फूल नहीं है बल्कि स्त्री-पुरुष के मिलन के प्रतीक है । बांस पुरुष लिंग एवं वंशवृद्धि के प्रतीक हैं । इस प्रकार कमल के फूल और पत्तों के साथ बांस का चित्रण नवदम्पति के सुखद जीवन के साथ वंशवृद्धि की कामना की जाती है । जिन्दगी के उतार-चढ़ाव के बीच भी ये कमल की तरह दमकते रहें ऐसी कामना की जाती है । कोहबर में कई तरह के फूल, पक्षी, जीव बनाए जाते हैं जिसका प्रतीकात्मक बोध अलग-अलग मान्यताओं पर आधारित हैं वे हैं -

कछुआ - दीर्घायु के प्रतीक, सृष्टि उत्प्रेरक के प्रतीक ।

मछली - शुभ अपेक्षा के प्रतीक, कामोत्तेजना एवं सम्मोहन का प्रतीक, ऊर्वरता (फरटिलीटी) का प्रतीक।

मोर - पुरुष की सुन्दरता के प्रतीक, प्रेम का प्रतीक ।

सुग्गा-मैना - काम वाहन का प्रतीक, मधुर बोली के प्रतीक ।

भ्रमर - नवव्याहता के प्रति आकर्षित पुरुष भाव को दर्शाता है ।

सिंह - शक्ति का प्रतीक ।

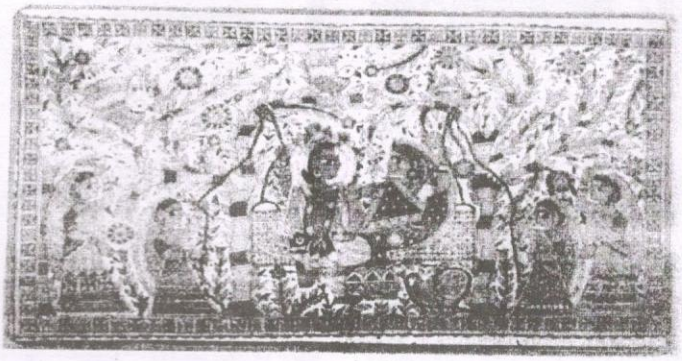
हाथी-घोड़ा - ऐश्वर्य का प्रतीक ।

हंस-मयूर - शांति का प्रतीक ।

सूर्य-चन्द्रमा - दीर्घ जीवन का प्रतीक ।

इसके अलावा कोहबर में देवी-देवता का चित्र जिसमें दुर्गा, काली, सीता-राम आदि प्रमुख हैं । पूजा में प्रयोग होने वाली सामग्री शंख, पुरहर, पातिल, पटिया आदि इस कला में चित्रांकित होते हैं । दुल्हा-दुल्हन का चित्र, साथ ही अपने ससुराल की ओर विदा होती दुल्हन, हाथी के चित्र बने होते हैं । इसमें साँप, कमल, कुण्डलिनी, स्वास्तिक, मंगल-कलश आदि अंकित होते हैं । यह सब चित्रकारी जीवन चक्र की भावना को प्रस्फुटित करते हैं ।

मधुबनी पेंटिंग के यह कोहबर कला हिन्दू विवाह की आत्मा को अंकित करता है जो कि जीवन के मूलभूत सिद्धांत हैं । मिथिला में ऐसे भावपूर्ण चित्र को दीवार पर लिखने का तात्पर्य वर-वधू को उनमें छिपे भावों को बताना रहता है ।



राधा-कृष्ण लीला
(चित्रकार शीला रानी दास)

मिथिला पेंटिंग में सीता-राम स्वयंवर, डोली-कहार (दुल्हन को डोली पर बिठा कर ससुराल ले जाते कहार) का चित्र, राधा-कृष्ण लीला (जैसा की चित्र में दिखाया गया है), माँ दुर्गा, माँ काली, लक्ष्मी, रामायण कथा (सारांश), महाभारत कथा का चित्रण, शिव-पार्वती विवाह का चित्रण, विष्णु-दशावतार का चित्रण विश्व प्रसिद्ध है ।

समय के साथ-साथ चित्रकार की इस विधा में पासवान समुदाय के लोगों द्वारा राजा सल्हेस के जीवन वृत्तान्त का चित्रण भी किया जाने लगा । इस समुदाय के लोग राजा सल्हेस को अपने देवता के रूप में पूजते हैं ।

इस प्रकार इस मिथिला लोक चित्रकला के वर्णनों के बाद हम पाते हैं कि मिथिला पेंटिंग सिर्फ एक पेंटिंग नहीं वरन् मिथिला की संस्कृति को प्रकट करने का एक सशक्त एवं रचनात्मक माध्यम है । इस पेंटिंग की अपनी एक शैली है । इसकी अपनी एक तकनीक है, भाव है, आयाम है जो अन्य पेंटिंग से इसे अलग एवं विशिष्ट पहचान दिलाती है । मिथिला की संस्कृति आदिकाल से अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं । मिथिला पेंटिंग उस उन्नत संस्कृति का जीता-जागता प्रमाण है जो कई वर्षों से यहाँ के लोक जीवन में प्रवाहमान है निरंतर भविष्य में भी प्रवाहमान रहेगी ।

इस कला के बारे में एक वाक्य में हम कह सकते हैं मिथिला पेंटिंग थी, है और हमेशा रहेगी ।

अन्य मिथिला पेंटिंग्स





आई. एस. ओ.

– अवधेश कुमार
वरि. अनु. अभियंता
आई० एस० ओ० सेल, जमालपुर

1. आई० एस० ओ० क्या है :-

अधिकांश कम्पनियां अपने सामग्रियों का उत्पादन या ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने की सेवा उपलब्ध करती हैं । कई बार उसकी आवश्यकताओं को पूरा करना प्रतिबंधित है फिर भी तकनीकी विशिष्टता कोई गारंटी नहीं देता कि ग्राहकों की आवश्यकता नियमित रूप से पूरी की जाय । इसमें तैयार उत्पाद की गुणवत्ता, गुणवत्ता पद्धति से संबन्धित है । इसमें निर्माता और आपूर्तिकर्ता से लिखित गुणवत्ता पद्धति और उसे निर्वाह करना जो कि नियमित रूप से ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार उत्पाद या सेवा को सुनिश्चित करता है । इस प्रकार आई० एस० ओ० प्रतिकात्मक उत्पाद पर प्रकाश डालता है और व्यापारिक क्रिया कलापों के साथ गुणवत्ता को जोड़ता है।

2. आई० एस० ओ० क्यों आवश्यक है :-

1. हमारे कारखाना में गुणवत्ता का कार्य होता है ।
2. वर्तमान कार्य-पद्धति में गुणवत्ता के लिए सुधार करना ।
3. असफल लागत को कम करना ।
4. भविष्य की योजना के लिए अच्छा कार्य करना ।
5. कारखाना के प्रत्येक कर्मचारी की कार्य क्षमता बढ़ाना ।
6. टीम भावना को बढ़ावा देना ।

3. गुणवत्ता के लाभ :-

1. संगठन में प्रत्येक व्यक्ति का आत्म विश्वास बढ़ता है, जिससे वह गलतियां कम करेगा ।
2. गलतियां कम करने से खराब काम में सुधार की आवश्यकता कम पड़ेगी ।
3. लिखित दस्तावेज होने के कारण काम करने का आधार मिलता है तथा एक कर्मचारी के ना होने के कारण दूसरा कर्मचारी उस काम को आसानी से कर सकता है ।
4. कर्मचारी को अपने कार्य में की गयी त्रुटियों को पहचानने और सुधारने का मौका मिलता है ।
5. भविष्य में आने वाली कठिनाइओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है ।
6. कार्य प्रणाली में पारदर्शिता होगी और सही निर्णय लेने में सुविधा होगी ।
7. बाजार में नवीनतम पद्धति और मशीन उपलब्ध होगा जिससे काम करना आसान होगा और ज्यादा उत्पादन किया जा सकेगा ।
8. तैयार माल में खराबी कम आएगी और कच्चे माल की बचत होगी जिससे उत्पादित माल के दाम में भी कमी आएगी ।
9. अच्छी गुणवत्ता और कम दाम वाले माल की बाजार में ज्यादा मांग होगी जिससे काम में बढ़ोत्तरी होगी और ज्यादा काम मिलेगा ।
10. ज्यादा काम मिलने से **ज्यादा नियुक्तियां** होगी और लोगों को **ज्यादा नौकरियां** मिलेगी ।

<u>जमालपुर कारखाना को प्राप्त आई० एस० ओ० प्रमाणपत्र</u>

1. आई० एस० ओ० 9001-2015

2. आई० एस० ओ० 14001-2015
3. आई० एस० ओ० 18001-2007
4. आई० एस० ओ० 50001-2011

4. आई० एस० ओ० के मूल सिद्धान्त :-

1. ग्राहकों की संतुष्टि पर केन्द्रित ।
2. अच्छी कार्य कुशलता ।
3. लिखित दस्तावेज (Documents) के आधार पर कार्य ।
4. कस्टमर, सप्लायर और वेण्डर के साथ अच्छा संबंध ।
5. जरूरत के आधार पर लगातार प्रशिक्षण ।
6. क्वालिटी में वृद्धि के प्रति सभी का योगदान ।
7. लगातार सुधार ।

5. गुणवत्ता नीति का अनुपालन कैसे करें और उनके लाभ :-

1. अपने कार्य का निष्पादन सही समय पर करें ।
2. यथानिर्देशित प्रक्रियाओं के अनुसार अपने कार्यो का निष्पादन करें ।
3. कार्य निष्पादन हर वक्त ठीक से करें ।
4. कार्य का निष्पादन कभी भी रोकें नहीं, तत्काल करें ।
5. अपने ग्राहकों को पहचानें ।
6. यह सुनिश्चित करें कि आप के कार्य से आपका ग्राहक प्रसन्न है ।
7. अपने ग्राहकों की सेवा में हमेशा तत्पर रहें ।
8. अपने कार्य प्रणली में सुधार लाएं ।
9. सबसे पहले गुणवत्ता नीति और गुणवत्ता उद्देश्य बताना होगा । गुणवत्ता नीति सभी कर्मचारियों को याद करना होगा । हो सके तो सभी कर्मचारियों को पॉकेट कार्ड छपा कर बांट दें ।
10. जितने भी मापक यंत्र हैं उनका कैलीब्रेशन मास्टर गेज द्वारा कराना पड़ेगा । मास्टर गेज का कैलीब्रेशन किसी बाहरी कम्पनी से कराया जाता है । जिस यंत्र का कैलीब्रेशन हो गया हो उस पर स्टीकर लगा होना चाहिए तथा कैलीब्रेशन का प्रमाणपत्र भी निर्गत होना चाहिए । वेल्डिंग मशीन का भी कैलीब्रेशन होना चाहिए ।
11. प्रत्येक शॉप/सेक्सन में परफार्मेंस बोर्ड लगा होना चाहिए ।
12. निम्नलिखित दस्तावेज पर निम्नलिखित मुहर लगा होना चाहिए :-

    मास्टर कापी पर - पीछे तरफ, बाएं ऊपर कोना पर नीले रंग का ।
    कंट्रोल कापी पर - सामने, दाएं ऊपर कोना पर लाल रंग का ।
    रेफरेंस कापी पर - सामने, ऊपर मध्य में लाल रंग का ।

13. आई० एस० ओ० मानक के तहत लगातार सुधार हेतु पर्यवेक्षक को अपने उत्तरदायित्व के अनुसार कार्य करना पड़ेगा ।

6. आई० एस० ओ० का पालन करने के लिए एक पर्यवेक्षक का क्या उत्तरदायित्व है ?

1. कार्य निर्देश (Work Instruction) को अपनाएं और उसके अनुसार काम करें ।
2. गुणवत्ता नीति और गुणवत्ता उद्देश्य को याद रखें ।
3. फाइल/रजिस्टर के मास्टर लिस्ट के अनुसार रिकार्ड को फाइल और रजिस्टर में मेन्टेन करें ।
4. फाइल/फार्मेट्स के मास्टर लिस्ट के अनुसार रजिस्टर में फार्मेट्स को मेन्टेन करें ।
5. कार्य निर्देश के अनुसार रिकार्ड मेन्टेन करें ।

6. उत्पाद की गुणवत्ता को प्रभावशाली बनाने के लिए पर्यवेक्षक और कर्मचारी को उनकी योग्यता का विकास करने हेतु प्रशिक्षण हेतु भेजें ।
7. प्रशिक्षण में जाने वाले कर्मचारी का रिकार्ड रखें ।

6. आई० एस० ओ० का पालन करने के लिए एक पर्यवेक्षक का क्या उत्तरदायित्व है ?

8. कर्मचारी को दिए गये प्रशिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करें और उसका फीडबैक बी०टी०सी० को दें ।
9. यह सुनिश्चित करें कि फर्श, छत, कार्य स्थल, प्रकाश, फिक्सचर और गजेट्स प्रभावी गुणवत्ता प्रणाली के लिए उपलब्ध है ।
10. सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदित उत्पाद संबन्धी लक्ष्य का रिकार्ड (एस० आर०, एन० एस० आर०, मेक 65 इत्यादि) रखें ।
11. मासिक लक्ष्य और मासिक आउट टर्न को मेन्टेन रखें और उसका रिकार्ड रखें ।
12. कार्य स्थल पर ड्राइंग की उपलब्धता को सुनिश्चित करें ।
13. उत्पाद की अवस्था को बताएं, उसे अलग करें और चिन्हित करें कि यह तैयार माल है, कच्चा माल है, निष्क्रिय माल है, आगममाल है, कार्य प्रगति पर है और असमान माल है ।
14. आलमारी और लॉकर साफ रखें और सामग्री अलग अलग सुव्यवस्थित तरीके से, पहचान स्लिप के साथ रखें ।
15. अनुभाग साफ होना चाहिए और प्रस्तुत करने योग्य तथा अच्छा वातावरण होना चाहिए ।
16. यह सुनिश्चित करें कि मशीन, टेस्ट बेंच में फिट गेज और सेक्सन द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मापक औजार कैलीब्रेट किया हुआ है ।
17. यह सुनिश्चित करें कि सेक्सन द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सभी लिफ्टिंग टेकल का नियमित चेकिंग होता है ।
18. कैलीब्रेट प्रमाण पत्र और परीक्षण प्रमाण पत्र एक अलग फाइल में रखें और इसका नियमित रूप से समीक्षा होनी चाहिए ।
19. तैयार माल का परीक्षण रिकार्ड रखें ।
20. बर्बाद और फेल माल के लिए निवारक और सुधारक (Preventive & Corrective action) कार्य करें ।
21. ग्राहकों की शिकायतों को प्रथम वरीयता देना होगा ।
22. सुरक्षा मानक को अपनाएं और प्राथमिक उपचार बाक्स अपनी पहुंच में रखें ।
23. सेक्सन/ऑफिस को साफ रखने हेतु समय अवधि के तहत समाप्त हुए दस्तावेजों को नष्ट कर दें ।
24. यह सुनिश्चित करें कि बिना सक्षम अधिकारी के अनुमोदन के कार्य निर्देश, फाइल/रजिस्टर और फार्म/फार्मेट्स की बदली या बदलाव नहीं किया गया है । यदि बदली या बदलाव करते हैं तो सक्षम अधिकारी से अनुमोदन लें तथा सक्षम अधिकारी और प्रबन्धन प्रतिनिधि के पास जो संबन्धित दस्तावेज है उसे भी बदल दें ।
25. उपयुक्त पर्फार्मेंस बोर्ड लगाएं -
    - अ) टार्गेट विस ए विस - आउट टर्न
    - ब) आउट टर्न विस ए विस - रीजेक्सन/फेलियोर (कस्टमर फीड बैक)
    - स) टेक्निकल डाटा

"आई० एस० ओ० अपनाएं
गुणवत्ता बढ़ाएं"

हिन्दी विश्व की महान भाषा है ।
-राहुल सांकृत्यायन

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

"राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा" के रूप में हिन्दी का सफर

– रामेश्वर प्रसाद
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (जीव विज्ञान)
पूर्व रेलवे इंटर कॉलेज, जमालपुर

"हिन्दी तुझे चलना है, तब-तक, जब-तक कि तुम्हें मंजिल न मिल जाए । यों तो बिना ध्येय का किसी कार्य की कल्पना ही व्यर्थ है भले ही, परीक्षार्थी का अपने लक्ष्य तक पहुँचने का अथक प्रयास हो अथवा किसी राहगीर का अपना सफर । हर एक की अपनी मंजिल, अपना उद्देश्य तय होता है । फिर विश्व की सबसे प्राचीनतम भाषा संस्कृत की कोख से जन्मी हिन्दी के सफर की अपनी ओर मंजिल न हो, यह कल्पना ही व्यर्थ सा लगता है ।"

आर्यों ने मध्य एशिया से होते हुए भारत में प्रवेश किया, उन दिनों भारत में बोल-चाल की भाषा वैदिक संस्कृत थी । वैदिक संस्कृत ही समय के कालचक्र में संशोधित, परिमार्जित एवं व्याकरणिक नियमों से सुसज्जित होकर लौकिक संस्कृत बन गयी । जिसका काल 500 ई.पू. से 1000 ईसा पूर्व का था जिसमें पाणिनी की 'अष्टध्यायी' जैसे ग्रन्थ की रचना हुई । लौकिक संस्कृत नीर की भांति आगे बहती गई और 500 से 1000 ईसा पूर्व तक "पाली" भाषा के नाम से विभूषित हुई । जिसमें तात्कालीन बौद्ध साहित्य का खूब प्रचार-प्रसार हुआ । बौद्धों के प्रसिद्ध धर्मग्रंथ 'त्रिपिटक' पाली में ही लिखे गये हैं । जैनों के आगमन के पश्चात इसने प्राकृत भाषा का स्वरूप ग्रहण कर लिया । प्राकृत से ही अपभ्रंश की सात प्रसिद्ध बोलियों का विकास हुआ । जिनमें शौरसेनी अपभ्रंश, अर्द्धमागधी, मागधी, ब्राचड़, सिन्धी, लहँदा एवं पंजाबी प्रमुख है । इस प्रकार आज की हिन्दी पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी आदि का सामूहिक नाम है । हमारी सभ्यता ने जैसे-हजारों सावन और पतझड़ देखे हैं, ठीक वैसे ही हिन्दी भी अपने दामन में भाषाओं की आंधी को चलते, उड़ते भी देखा है । बल्लभी के राजा धारसेन ने अपने अभिलेख में 'अपभ्रंश साहित्य' का वर्णन किया है । उनके अनुसार पुरातन हिन्दी का काल 400 ई. से 550 ई. के बीच ठहरता है ।

परन्तु हिन्दी के वास्तविक जन्मदाता तो अमीर खुसरो ही थे, जिन्होंने 1283 ई. में हिन्दी को जन्म देते हुए 'हिन्दुई' शब्द का प्रयोग किया । सन् 1937 ई. में अमीर खुसरो ने हिन्दी शब्द का प्रयोग प्रथम बार करते हुए कहा कि "हमारे पूर्वज तुर्की हैं, तथापि मेरा जन्म भारत में हुआ है । आजकल इन दिनों विभिन्न प्रदेशों में एक विचित्र एवं स्वतंत्र भाषा प्रचलित है, जिनका एक-दूसरे से कोई संबंध नहीं है । ये हैं - हिन्दी, लाहौरी, कश्मीरी, डोगरी, कन्नड़, बँगला, अवधी, गुजराती एवं पश्चिमी हिन्दी । अमीर खुसरों ने क्या खूब कहा है-

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी नाव की धार ।
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार ।।

भारत में प्रयुक्त संस्कृत शब्द 'सिंधु' से हिन्दी शब्द की उत्पति हुई । 'सिंधु' नदी के आस-पास बोली जाने वाली भाषा 'सिंधी' कहलायी । इरानी में 'स' शब्द की ध्वनि का उच्चरण 'ह' के रूप में होता है ।

शनैः-शनैः प्राचीन हिन्दी, अपभ्रंश साहित्य का माध्यम बन गयी । जो धीरे-धीरे परतंत्र भारत की मुक्ति की आवाज बन गयी जिसने भारत की जातीय साहित्य को मुखरित होने का गौरव प्रदान किया ।

साधारणतः जो भाषा राजकाज के रूप में, विधि-विधान, कानून व्यवस्था, नियम, अभिलेख एवं राजपाट के कुशल संचालन में प्रयुक्त होती है, वह राजभाषा कहलाती है । जिस प्रकार अशोक के बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पश्चात् मगध की राजभाषा पाली का खूब प्रचार-प्रसार हुआ ठीक उसी प्रकार 12वीं सदी के पश्चात् तुर्की एवं अफगानों के आगमन के पश्चात् (संस्कृत, पालि, प्रकृत तथा अपभ्रंश) फारसी भाषा के रूप में राजभाषा बन गयी । भारत में चूँकि

हिन्दुओं का बाहुल्य था, इसलिये संस्कृत प्रधान हिन्दी सत राजभाषा के रूप में साथ-साथ चलती रही । अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय अभियान के परिणामस्वरूप यह 'दक्किनी' हिन्दी के नाम से भी जानी जाती है ।

मुगलकाल में 'फारसी' राजभाषा के गौरव से भले ही विभूषित थी मगर उस दौरान भी हिन्दी का सफर थमा नहीं । बादशाह अकबर का 'हिन्दी' से विशेष लगाव था । वे स्वयं हिन्दी में लेखन कार्य करते थे । अकबर के नवरत्नों में अब्दुर्रहीम खानखाना हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे । मुगलकाल में हिन्दी में शनैः-शनैः पाँव पसारना शुरू कर दिया जिसका ज्वलंत उदाहरण शेरशाह सूरी के सिक्के का प्रचलन था जहाँ फारसी के साथ-साथ हिन्दी समावेशित था । अधिकांश मराठी शासकों जैसे-पेश्वा, होल्कर, सिंधिया आदि की राजभाषा हिन्दी थी ।

हिन्दी के सफर की गति बीच-बीच में मंथर जरूर दिखती है, पर वह कहीं भी अवरूद्ध, हताश या पड़ाव पर ठहरी प्रतीत नहीं होती है । हिन्दी अपनी गुणवता एवं वैशिष्ट्य के कारण अनवरत अविरल आगे बढ़ती रही हैं । उसने अपने जीवन काल में पतझड़ के साथ-साथ वसंत को भी देखा एवं परखा है । कहीं उसे संरक्षण प्राप्त होता सा दिखता है तो कहीं शासक वर्ग के द्वारा अपमानित । फिर भी वह राजभाषा के रूप में अनवरत बहती रही है । हिन्दी अपनी वैज्ञानिक विशेषताओं के कारण कभी वह गोरखनाथ के काव्य की शोभा बढ़ाती रही है, तो कभी नानक के काव्य की भाषा बनकर, कभी मराठी कवि नामदेव की, कभी रामदास की तो कभी शिवाजी के दरबारी कवि "भूषण" से सुशासित होती रही है ।

इस कड़ी में आगे चलकर कलकत्ते (वर्तमान में कोलकता) के फोर्ट विलियन कॉलेज, नवागत अंग्रेजों एवं सदल मिश्र के गद्य की पुस्तकें लिखकर हिंदी की खड़ी बोली गद्य की पूर्व परंपरा के विकास में कुछ सहायता की ।

हिन्दी का पहला समाचार पत्र "उदंत मार्तंड" सन 1826 ई. में कलकत्ते से प्रकाशित हुआ । आर्य समाज और अन्य सांस्कृतिक आंदोलनों ने भी 'हिन्दी' आंदोलनों को गति प्रदान किया । हिन्दी को राजभाषा का सम्मान यों ही नहीं मिला और न ही किसी की कृपा-दृष्टि से, बल्कि यह सैकड़ों वर्षों के संघर्ष से प्रतिफलित उसका अधिकार है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के द्वारा हिन्दी के निम्नलिखित लक्षणों को प्रतिपादित किया गया -

(1) हिन्दी के द्वारा भारत के आपसी समाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हो सकती है ।

(2) यह भारत वर्ष में बहुतायत बोली जानेवाली भाषा है ।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1940 में हिन्दी प्रचारणी सभा, मद्रास में अपने व्याख्यान के दौरान यह कहा कि- हिन्दी के द्वारा सारा भारत एक सूत्र में पिरोया जा सकता है । गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने एक निबंध में लिखा है- 'जिस हिन्दी भाषा के खेत में ऐसी सुनहरी फसल लगीं है, वह भाषा कुछ दिन भले ही ऐसी पड़ी रहे, तो भी उसकी स्वभाविक उर्वरता नहीं मर सकती, वहां फिर खेती के सुदिन आयेंगे और पौश मास में नवान्न उत्सव होगा।

महात्मा गांधी ने भागलपुर में महामना पं. मदन मोहन मालवीय का हिन्दी भाषण सुनकर मार्मिक वक्तव्य दिया कि - पंडीत जी का अंग्रेजी भाषण चांदी की तरह है । किंतु उनका हिन्दी भाषण मानसरोवर से निकली हुई गंगा का प्रवाह सूर्य की किरणों में सोने की तरह चमक रहा है ।

श्री चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, जिन्होंने राजभाषा के रूप में एक समय हिन्दी का विरोध किया था, ने स्वयं 1955-56 में माना कि हिंदी ही भारत की बहुमत की भाषा है ।

अनुच्छेद 344 के अनुसार हिन्दी भारत संघ की राजभाषा है । वह अपनी गुणवता, सांस्कृतिक महत्व तथा सौ करोड़ से भी अधिक भारतवासियों के मध्य बोली जाने के कारण संपर्क भाषा तथा राष्ट्रभाषा बनने का दम-खम रखती है । सन् 1949 से लेकर आजतक हम इस दिशा में प्रयासरत् हैं और राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त की अमर वाणी को साकार करने की भारत सरकार की प्रतिबद्धता भी इस दिशा में साकारात्मक परिलक्षित होती है ।

'है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी ।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है देवनागरी ।।'

एक अकेला अंगूठा

– विजय कुमार गुप्ता
कार्यालय अधीक्षक
निपटारा अनुभाग/कार्मिक शाखा
पू.रे/जमालपुर

एक अकेले अंगूठे ने
वसीयत कर दी सारी अंगूठियाँ
ऊंगलियों के नाम

रोका, गालों पे लुढ़कते हुए
आँसू की असंख्य बूदों को
एक अकेले अंगूठे ने
ऊंगलियों के गासे में भरा हुनर
तलहत्थियों को दी बित्ताभर लंबाई
हथेलियों को भर-मुट्ठी क्षमता

आकाश के ललाट पे बढ़कर लगाया
"विजयी भव" का सूर्य-तिलक

अंगूठे को पिस्टन बनाकर
हमने भी कई बार उगलवाया
डबडबाये हुए नल के हलक से पानी

शरारती हुए तो काटी चिकोटी
मस्ती में आये तो बजायी चुटकी

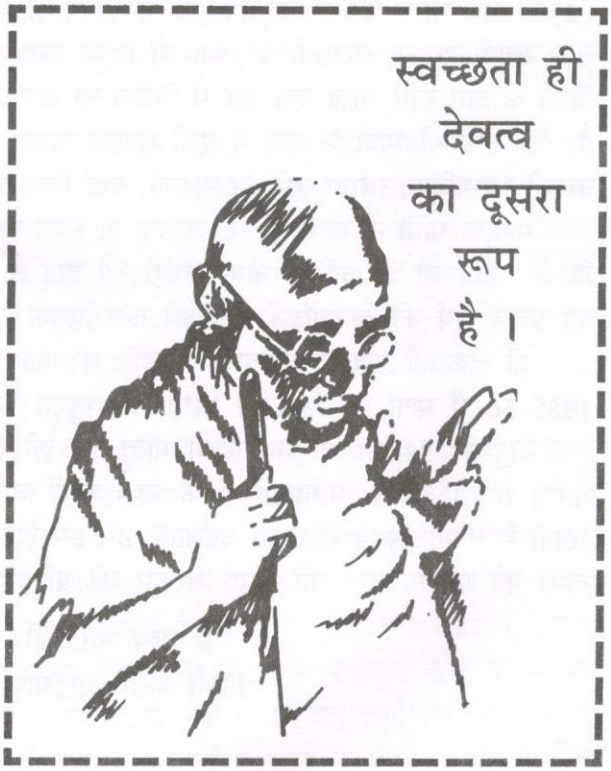
अफसोस
इसी अंगूठे से लिया गया
कोरे कागज पे काला टिप्पा
रची गयी हर बार
जीने के हक से बेदखल करने की साजिश

अंगूठे का दर्द वो ही जाने
जिन्होंने जमीन में घंसाया अंगूठा
हल के फाल की तरह
और खाँच दी चाहतों की क्यारियां

एकलव्य का कटा हुआ अंगूठा
दर्द के संबोधन-चिन्ह की तरह
एक बार जरूर खड़ा हुआ होगा
द्रोण के समक्ष भी

इधर अंगूठे ने भी बदले तेवर
दांये-बांये डोलकर सिर्फ दिखाता नहीं ठेंगा
बल्कि सफलीभूत होने पर तनकर कहा 'डन'

ज्यों नाचता लट्टू लोहे के गुने पर
घूमती रहेगी पृथ्वी
अकेले अंगूठे की टेक पर



स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अपना सपना

- सुशीला त्रिपाठी
चीफ मैट्रोन/मेडिकल,
पू.रे., जमालपुर

नियत समय पर कर्मा की नींद खुल गई । रोज सोच कर सोता है सुबह देर से उठेगा, पर ऐसा होता नहीं, वह कोई लाट साहेब नहीं जो आराम करता फिरेगा । उसके पास बाप-दादा की सौंपी जमीन नहीं जो बेचकर खा लेगा । बैल की तरह रोज रिक्शा जोत कर हांड़मांस तुड़वाता है तब जाकर दो वक्त की रोटी नसीब होती है । माई का कहा माना होता तो पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी कर रहा होता । अब अफसोस मनाने से क्या होगा ? कहते हैं, मिहनत करने वालों का नसीब चमक उठता है, उसका कहाँ चमका ? वह रोज इस बात को विचार कर दुखी होता है । बिमली समझती है पर उसे नहीं समझा पाती ।

आँखें मलते-मलते उसने नजर दौड़ाई, बिमली चाय बना रही होगी पर यह क्या, वह मुँह ठाँपे सो रही है । वह झुंझला उठा । हाथ बढ़ाकर उसे झिंझोड़ना चाहा तो घबड़ा गया, वह बुखार में तप रही थी । बमुश्किल आँखें खोल बुदबुदाने लगी । तभी गमछा ओढ़ कर बाहर भागा और रिक्शा ले आया । वह उसे जल्द से जल्द अस्पताल ले जाना चाहता था । उसे बिठा कर तेजी से पैडल मारने लगा ।

अस्पताल की गेट पर खड़े दरबान से डॉक्टर के बारे में पूछने लगा । अनमने ढंग से उसने ऊँगली दिखाई । वह उधर बढ़ गया । सामने टूल पर बैठा वार्ड बॉय चपर-चपर पान चबाते हुए एक पर्ची थमा दी और बैठने का इशारा किया । ढेर सारे लोग बैठे हुए थे । डॉक्टर को आने में देर थी । बिमली को बिठा वह चाय की जुगाड़ में निकल पड़ा । शादी को चार साल हो गये, वह पहली बार बिमार पड़ी है । हर वक्त हँसती मुस्कुराती घर का काम करती रहती है । मिट्टी के घर-आँगन को लीप-पोतकर सजाऐ रहती है । उसने बहुत सुख नहीं दे रखा है, फिर भी शिकायत नहीं करती उल्टे, बर्त्तन-चौका के लिए दो चार घर काम पकड़ना चाहती है । वह कभी नहीं चाहता ।

ठेले वाले से चाय पी कर वह लौट पड़ा । नौ बज रहे हैं । डॉक्टर आ गये होंगे ।

बिमली बैठे-बैठे ऊंघने लगी । ज्वर तेज हो आया है प्यास से गला सूखने लगा तो उसने इशारा किया । तभी झट हैंड पम्प से पानी ले आया । वह गट-गट पी गई । नंबर आने पर उसे सहारा देता हुआ अंदर ले गया । लंबे-गोरे डॉक्टर बाबू को देखकर सहम गया । मुस्कराते हुए डॉक्टर ने बिमली को टूल पर बैठने को कहा और पूछने लगे । धीमी आवाज में बिमली ने अपना कष्ट बताया । देखो, उन्होंने समझाते हुए कहा, लगता है टायॅफड हो गया है । पानी उबाल कर नहीं पीते ? पिया करो और नल के आस-पास सफाई रखा करो । इसी से बीमार पड़ते हो । "बिमली के साथ-साथ कर्मा को भी समझ में नहीं आया । म्युनिसिपेलिटी का पानी पीने से कोई बीमार पड़ सकता है ? दोनों टुकुर-टुकुर देखने लगे । - लो, ये खून जाँच की पर्ची है । लैब में जाकर ब्लड दे दो और भर्त्ती हो जाओ । यहाँ सुई-दवाई समय पर मिल जायेगी । जल्दी ठीक हो जायेगी ।"

पर्ची थामे दोनों बाहर निकल आये । वार्ड बॉय ने सब समझा दिया । खून देकर वह बिमली को वार्ड में ले आया । सफेद कपड़ों में बैठी दीदी ने उन्हें बेड पर जाकर बैठने को कहा और सुई निकालने लगी । कर्मा सिहर उठा । बिमली को कष्ट होगा । वह भी आँखे भींचे लेट गई ।

घर-अस्पताल करते हुए एक सप्ताह बीत गया । अब बुखार नहीं आ रहा । दो-तीन दिनों में घर आ जायेगी । कर्मा को बुरा लग रहा है । पूरा घर अस्त-व्यस्त है । वह लौट कर आयेगी तो क्या देखेगी । वह झांड़ू देने लगा ।

लोग उसे जोरू का गुलाम बुलाते हैं । वह परवाह नहीं करता । शाम को जब रेलवे लाईन किनारे ताड़ी-पानी पीने वाले जमघट लगाते वह बिमली का हाथ बँटा रहा होता । ऐसी बात नहीं; वह कभी पीता नहीं था पर जब से बिमली ने कसम दिलाई है वह तोड़ नहीं पाता । वह खुश है ।

तड़के उठकर रोटी बनाई । आज उसे ले आयेगा । रिक्शा भगाता अस्पताल पहुँच गया । बिमली फट-फट रोटी खा गई । पति के हाथों बनी रोटी किसी पकवान से कम नहीं लग रही थी । कर्मा बाहर आकर द्वार पर बैठ गया, डॉक्टर आते ही होंगे ।

उनके आते ही उठ गया । 'प्रणाम हुजूर', सुनकर डॉक्टर मुस्करा उठे ।

थोड़ी देर बाद उसे चैंबर में बुलाया ।

- क्या करते हो ?
- हुजूर, रिक्सा चलाते हैं ।
- अपना ?
- नाहीं, मालिक के ।
- क्यों ? खुद का क्यों नहीं ?
- का बोलते हैं हुजूर, इत्ता पईसा कहाँ से लावेंगे ।
- अरे ! क्यों नहीं हो सकता, तुम्हें सरकार देगी ।

बैंक से कर्ज मिलेगा और तुम्हारा अपना रिक्शा हो जाएगा ।

- हुजूर, इत्ता बड़-बड़ लोगन से हम कईसे मिल सकत हैं । हमरा जिंदगी अईसे ही चलीहें ।
- ऐसी बात नहीं है । वे लोग तुम्हारी सहायता करेंगे । पहले जाओ तो... मिलोगे नहीं तो जानोगे कैसे ?

'...हुजूर ई का बोल रहे हैं । भला हम गरीबन के भाग में अपन रिक्सा लिखल है । ई बड़ा आदमी है ना, इहे अईसा बोल रहे हैं । दू पईसा कमा लेत हैं ऊहे हमार किसमत । बस इहे सुकर है ये भीख नाही मांग रहे...लेकिन ईहो सोचे बाला बात है, बड़ लोग कुछू समझावत है त ऊमे बजन होत है...।

कर्मा सोचता-सोचता डॉक्टर साब से बोल पड़ा, आप ही बतलाएं, केकरा से मिले पड़ेगा ।

- 'कल बैंक चले जाना । किसी भी कर्मचारी से पूछना, बता देगा ।'

ठीक है माई-बाप, वह जैसे पैरो में लोट जाना चाह रहा था, पीछे से खड़े लोगों की वजह से बाहर चला आया । उसका मन बल्लियों उछल रहा था । बिमली सुन कितना खुश होगी इसका अनुमान लगाने लगा । ऊ तऽ चाहती थी एक ठो अपना रिक्सा हो, जे पईसा बचेगा ऊ से एक दो बकरी ले लेवेंगे, ओकर बच्चा बेच-बेच के जे पईसा बनेगा ओसे गईया खरीदे लेवेंगे...ऐ तरह बहुते पईसा हो जायेगा.... अब ओकर सपना जरूर पूरा हो जावेगा. .. सोचता....बिमली को खुश खबरी दी ।

खबर सुन बिमली की आँखे चमक उठीं । कितने दिनों से यह सपना पल रहा था । रिक्शा पर बैठी हवा में उड़ने लगी । कर्मा भी हवा में रिक्शा उड़ाता घर पहुँचा । बिमली के लिए दो सब्जियाँ बना रखी थी ऊपर से जिलेबी खरीद लाया । दोनों ने छक कर खाया ।

अब कर्मा रोज बैंक-कचहरी के चक्कर लगाने लगा है । जब तक अपना रिक्शा नहीं होगा, उसे चैन नहीं पड़ेगा ।

दो महीने गुजर गये, अब तक फार्म नहीं मिल पाया है ।

'हुजूर, रिक्सा दिलवा दें; आपका अहसान होगा । दू महीने से दऊड़ लगा रहे हैं ।'

'देखो, इतना आसान नहीं है समझे ।'

'सरकार त बतलाती है झट जावो, पट पावो ।'

'वो सब सरकारी नीति है, तुम नहीं समझोगें ।'

जाओ, पान लेकर आओ ।'

दो महीने से लगातार बैंक का चक्कर लगाने, और बाबू को चाय-पान कराने के पश्चात रिक्शा मिलने की प्रक्रिया का पता लग पाया है । ग्राम सेवक, मुखिया, या वार्ड कमिशनर आदि से व्यक्तिगत पहचान प्रमाण-पत्र हासिल करने की लंबी प्रक्रिया से गुजरना होगा । यह सुनकर उसे झुंझलाहट हो रही है पर घर से निकलते वक्त बिमली जो मंत्र उसके कानों में फूँकती है वह रामबाण का काम कर गई । वह उसे रोज समझाती है, का करोंगे, दूसर का मरजी के काम है, देर-सबेर त लगेगा, हिम्मत रखो, गुस्सा जन करो, काम बनेगा । हमार मन बोलता है एक ठो 'अपना रिकसा ई दुआर पर जरूर लगेगा, बुझे ।'

पूर्णमासी के चाँद की तरह हर रोज उनका सपना बढ़ता जा रहा है । अपना रिक्शा के धुन में उत्साहित लाल सूर्ख साड़ी उधार लाकर बिमली को पहना दिया । अब वह गुनगुनाता रिक्शा चलाता है । आज उन सब पर थोड़ा पानी अवश्य फिरा है । थके मन से घर पहुँच बिमली को सारी बात बताई । 'त का हुआ, लग पड़ो, ई काम कऊनो मुसिकल नाहीं समझे । खाना खाकर निकल पड़ो । काम बन जावेगा ।' बोलती खाना परोस दिया । बिमली की उत्साहरंजित बातें सुनकर उसे ढ़ाँढस मिला और पुनः संचारित उर्जा के साथ खा कर निकल पड़ा ।

काम आसान नहीं और ना हि झट संपन्न होने वाला है । हर किसी के द्वार तक पहुँचना और काम करवाना टेढ़ी खीर साबित हो रही है । वह रिक्शा चला कर घर संसार चलाए या उन लोगों की सेवा चाकरी करे समझ नहीं पा रहा । मालिक को जमा-राशि देने और घर-खर्च निकालने के पश्चात जो भी बच रहा है सब उनलोगों को होम कर रहा है ।

पंद्रह दिनों की मश्क्कत के बाद ग्राम सेवक ने प्रमाण-पत्र थमाया है अब आगे की प्रक्रिया चलेगी ।

दोपहर को थका मांदा घर पहुँचा तो बिमली ने पाया उसे ज्वर है । चिंता में रोने लगी । 'का होगा, इत्ता मिहनत जन करो, बिमार पड़ जावोगे त कऊन देखेगा चल कर ऊ डागडर बाबू से दिखला लो । रहे दो, देह बचेगा त न रिकसा खींचोगे ।' कर्मा की भी हिम्मत नहीं हो रही । गला सुख रहा है । उसे अस्पताल कौन ले जायेगा ? बिमली भागी और मोड़ से रिक्शा ले आई । दोनों अस्पताल पहुँचे । बिमली इधर-उधर खोजती रही पर वो डॉक्टर साब नहीं मिले । बिमली अपनी तरह उसे भी अस्पताल में भर्ती कराना चाह रही थी, कर्मा तैयार नहीं हुआ । दवा लेकर दोनों घर पहुँच गये । इस बार अस्पताल से उसका मन उखड़ गया । डॉक्टर की अनुपस्थिति से उचाट हो आया । एक बारगी उसे लगा, अब जीवन नहीं सुधरेगा । उसकी आँखे भींग आई । आगे का काम थम गया, दस दिन लग गये उसे पूरी तरह स्वस्थ होने में । इतने दिनों में तीन सौ की उधारी हो गई । उसका मन पूरी तरह टूट गया है । अब उधारी चुकाएगा कि बाकी काम पूरा करेगा, दुविधा में फँस गया । चढ़ावा चढ़ाने के पैसे देनदारों को देने लगा है । इसमें दस पंद्रह दिन और निकल गये । आजकल उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा । बिमली पाव भर दूध मोल ले आती है । उसे कर्मा की सेहत की फिक्र है । वह चिड़चिड़ा उठता है, 'काहे बेकार मा दूध पिला रही हो, ई पईसा जोरो, अभी काम बाकी है, फालतू में खरच जन करो, पगली ।'

भारी मन से रिक्शा खींचना उसे जल्दी थका देता है । इसलिए फेरे कम लगा पाता है, तो पैसे भी कम पड़ जाते हैं । इससे तो पहले ही मन प्रफुल्लित रहा करता था । जब आँखे ठोस धरातल व नीले आसमान देखती थीं । उसे पता रहता था, जीवन इन्हीं पगडंडियों से गुजरता उम्र पार करेगा । अब संदर्भ बदल गया है । उसका मन जिद पर उतर आया है । सपने टूटने की किरीचें थुमने लगी हैं । हालाँकि नकारात्मक परिणाम नहीं आया है । फिर भी आशंकित है । बिमली भी उदास रहने लगी है । कितना आगे तक सोच आई थी । गाय, बकरी, पक्का मकान, गहने और ना जाने क्या-क्या, सब यूँ ही औंधा मुँह बिचकाता-सा महसूस हो रहा है । गरीबी में जीना और बात है, गरीबी का एहसास हो जाना, खुद को शर्मीन्दा करना है । इससे पहले हर वक्त खुश रहा करती थी । पति

के संग रोटी-नमक में भी जीने की जीजिविषा बचाए रखती थी । लाख उसे समझा ले, मन उसका भी निराशा से जूझ रहा है ।

कर्मा द्वार-द्वार फिर से घूमने लगा है । छः महीने जुगर गये हैं अब तक रिक्शा मिलने का आसार नजर नहीं आ रहा । अचानक उसकी मुलाकात उन्हीं डॉक्टर साब से हुई । देखते उसकी आँखे चमक गई जैसे सपनों को नए पंख मिल जायेगें ।

- हुजूर परनाम ।'
- कौन ?
- हुजूर ऊहे रिकसा बाला ।'

हाँ-हाँ, कैसे हो ? रिक्शा मिल गई ?'

- 'कहाँ माई-बाप', बोलते उसकी आँखे भर आई ।

नाहि मिल सका है । दुआरे-दुआरे दऊड़ लगाते महीना बीत गया है । अबहिं तक कागजे पत्तर पूरा नहीं पड़ा है । रिकसा कईसे मिलेगा ।'

- सुनकर डॉक्टर द्रवित हो उठा । 'बेकार इसकी मुट्ठी में ख्वाब थमा दिया, ओह ।'
- उस पर ध्यान गया वह दुबला और कमजोर भी लग रहा है ।

'अब क्या करोगे ?' यूँ ही पूछ लिया, झेंप भी हुई, बिचारा करेगा क्या, वही रिक्शा खींचेगा । देश में कितने गरीब हैं । मिहनत करके भी इज्जत नहीं कमा पाते, धन संचय नहीं कर पाते । सरकार नीतियाँ बनाती है, क्रियान्वयन करने वाले ईमानदार कोशिश नहीं करते । पर्याप्त सहायता उन तक पहुँच नहीं पाती । बिचौलिए मलाई उड़ा लेते हैं और गरीब-गरीब ही रह जाते हैं । यह पूरा तंत्र ही सड़-गल गया है । यह बिचारा दौड़ता भागता थक-हार बैठेगा और फिर दोबारा प्रयास नहीं करेगा । मैंने ठीक नहीं किया । राह सुझाई है तो मंजिल तक पहुँचाना होगा, यही मानवता होगी ।'

- सुनो, मेरे घर पर आ जाना ।'
- कहाँ हुजूर ? उत्साहित हो बोल पड़ा, अउर काहे माई-बाप ?
- टावर देखे हो ना, दायीं तरफ सड़क जाती है, उस पर चल कर पूछना किसी से बता देगा । कल पाँच बजे तक, समझे ।'
- हाँ-हाँ, आप भगवान हैं, उसे समझ नहीं आ रहा, अखिर घर पर क्यों बुला रहे हैं । बिमली ने सुना तो समझाया, जरूर उनकर रिकसा होगा जे तुमका देगें, देख लियो ।'

बेसब्री से दोनों कल पाँच बजे का इंतजार करने लगे । नहा धोकर, साफ कपड़े, जो बिमली ने दोपहर को धो-सुखा दिये थे, पहन डॉक्टर के घर पहुँचा । सामने बरामदे पर डॉक्टर और उनकी सुंदर पत्नी बैठी थीं । मेम साब ने छोटे से कप में चाय उड़ेल कर दो बिस्कुट के साथ उसे पीने को दी । वह बिल्कुल शरमा गया भला ऐसे इज्जतदारों के बीच वह पी पाता । उठ कर गार्डन की तरफ निकल आया । डॉक्टर ने बुला कर बिना किसी भूमिका के कहना शुरू किया, 'देखो कर्मा, हमारे पास एक पुराना पर ठीक-ठाक रिक्शा है । मेरे बच्चे जब छोटे थे उस पर स्कूल जाया करते थे । अब बड़े हो गये हैं, सो रिक्शा बेकार पड़ा है । तुम चाहो तो उसे ले जा सकते हो । एक तरह से तुम्हारा हो जायेगा । तुम्हारे पैसे बचेंगे ।

कर्मा ने आधी बात सुनी आधी कहाँ उड़ गई । वह तो जैसे खुशी से पागल हो रहा था । 'यह बिन माँगे मोती मिले' सी बात हो गई । उसने दोनों के पैर पकड़ लिये । गला रूंध गया था, अस्पष्ट स्वर निकालता बोला, 'हुजूर आप त सच में भगवान निकले । ई कलयुग में कऊन केकरो पूछता है । माई-बाप हम एक ठो बीनती करना चाहते हैं ।

'क्या ?'

'हमका अईसे रिकसा जन दें हुजूर । हम ईका उधारी समझेंगे । थोड़ा-थोड़ा कईके पईसा जमा कराते रहेंगे । इ बिनती मंजूरे कर लेवें हुजूर,' हाथ जोड़ता रो पड़ा । डॉक्टर आगे बढ़े और उसकी पीठ थपथपाने लगे - 'रोते क्यों हो, देखो तुम चाहते थे ना कि 'अपना रिक्शा हो' लो हो गया । ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी, वैसा करना । अब खुश हो जाओ ।'

'आप का समझत हैं हम रो रहवें हैं । नाहि, ई त खुशी के आँसू हैं, हम त धन-धन हुई गये हुजूर ।' मेम साब की तरफ मुड़ कर बोला, 'मईडम जी, कऊनो चिंता जन करेंगी, हम बजार-हाट रोज दिन कर देंगे । आप त लक्षमी हैं ।'

दोनों को मन भर दुआ देने के बाद हँसता घर लौटने को निकल पड़ा । आज उसका रिक्शा हवा से बातें कर रहा था, बिल्कुल पंख निकल आए हों जैसे । आज उसने तय किया है, बिमली के ऊहे लाल साड़ी पहिना कर सिनेमा ले जायेंगे, कुलफी खिलावेंगे ।

वह गुनगुनाता भागने लगा ।

कर्मवीर

-जगवीर राय
टेक.-I, प्रगति विभाग
पूर्व रेलवे, जमालपुर

इस कदर तेरी जुल्मों से घिरा हूँ कि,
बनकर दीवाना, कई नजरों से गिरा हूँ,
होश आता है तो कहते हैं कि, दीवाना हो गया
बेहोश होता हूँ तो कहते हैं बेमौत मारा गया,
धड़कनों ने आहट को पहचानना सीख गया
मालूम नहीं खुदा ने, किस्मत में क्या लिख दिया,
कभी जो सांसें रूक जाए मुझे इलजाम न देना
अपनी मोहब्बत के लिए मरा हूँ, पैगाम दे देना,
नजरों से चली तीर, दर्द का अहसास नहीं देता
जख्म देता भी है तो, जख्म का निशान नहीं देता ।

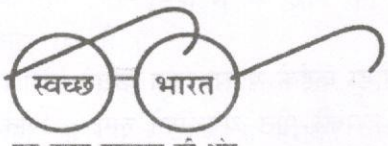
गजल

- डॉ. रामबहादुर चौधरी 'चंदन'
फुलकिया/बरियापुर , मुंगेर

हर बात में तू गीत पैदा कर,
संवाद में संगीत पैदा कर ।
अभ्यास को लययुक्त कर नियमित,
तू हार में भी जीत पैदा कर ।
तस्वीर दुनिया की बदलने को,
नफरत के बदले प्रीत पैदाकर ।
इतना बड़ा कर ले लू दिल अपना,
सारे जहाँ में मीत पैदा कर ।
जो आदमी को आदमी समझे,
तू प्यार की वो रीत पैदा कर ।
इस जिन्दगी की ना-उम्मीदी में,
उम्मीद आशातीत पैदा कर ।
आकाश छना है अगर तुमको,
परवाज की तरकीब पैदा कर ।
दुनिया बदलनी है अगर यारो,
जग में नई तहजीब पैदा कर ।

हिन्दी के पौधे को हिन्दू-मुसलमान दोनों ने सींचकर बड़ा किया है-

-जहूरबक्श



युद्ध

– कामेश्वर पाण्डेय
पूर्व राजभाषा अधिकारी
पूर्व रेलवे, हावड़ा

युद्ध का इतिहास अति प्राचीन है । जब से मानव का वजूद है तभी से युद्ध अस्तित्व में है । अगर Mkoh d s "Survival of the fittest" और विकासवादी सिद्धान्त को माना जाय तभी से अस्तित्त्व की लड़ाई प्रारम्भ है । यही कारण है कि इंसान पाषाण युग, ताम्र युग, लौह युग और आदि कालों से टकराता रहा है। उसके बौद्धिक विकास के साथ जब सुविधाएँ उपलब्ध होने लगी तो इसका प्रादुर्भाव हुआ । मनुष्य की आस्था जब ईश्वरीय शक्ति में बढ़ने लगी तो राक्षस भी वजूद में आये और उनका संग्राम सीधे दैवी शक्ति से होने लगी । देवासुर संग्राम इस बात का सबूत है कि शक्ति और वजूद के लिए युद्ध अवश्यम्भावी है। समुद्र मंथन के समय अमृत और विष के बँटवारे के समय भी राक्षसों एवं देवताओं में युद्ध हुआ और परिणाम स्वरूप राहु एवं केतु को अमरत्व की प्राप्ति हुई।

रचनाकारों, समीक्षकों, इतिहासकारों एवं कवियों तथा लेखकों के समक्ष भी यही विषय सदा खड़ा रहा है। ये सभी चिन्तक मानव एवं समाज के कल्याणार्थ यही सोचते रहे कि क्या युद्ध ही किसी समस्या का विकल्प है ? इसी उधेड़बुन में कई चीजें मुखरित हुई और आज भी इन समस्याओं पर विचार और बहस जारी है । युद्ध की विभीषिका से कवि और लेखक का मन आक्रान्त होता है और उसके परिणामों के बारे में सोचकर उसका कोमल मन सिहर उठता है । रचनाकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को यह बताना चाहता है कि युद्ध का परिणाम हमेशा बुरा होता है । द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों से आहत होकर दिनकर जैसे कोमल कवि ने इसके विकल्प को खोजने का प्रयास किया है । अपनी प्रसिद्ध रचना "रश्मि रथी" के कवि शांति की खोज में इतिहास लोक तक पहुँचता है। माँ ! वरदे से विनती स्वरूप विकल्प मांगते हुए दिनकर कहते हैं :-

"शारदे ! विकल संक्रान्ति काल की नर में,
कलिकाल भाल पर चढ़ा हुआ द्वापर में ।
संतप्त विश्व के लिए खोजते छाया,
अम्बर में था इतिहास लोक तक आया ।।"

कवि इतिहास के पन्नों में विकल्प खोजता है लेकिन वहाँ भी इसे धधकता हुआ अम्बर मिलता है, शीतल छाया नहीं और तभी "कुरूक्षेत्र" की रचना में महाभारत का सहारा लेकर कवि कहता है :-

"मुहूर्तं ज्वलितं श्रेयं, न च धूमायितं चिरं ।"

अर्थात् क्षमा मात्र में जल जाना श्रेयस्कर है न कि बहुत देर तक धुआँ देना । यह अधिकार और सत्य की पुकार और हुंकार है ।

विज्ञान की प्रगति से मनुष्य सुविधा सम्पन्न हुआ है और इसी होड़ में असली द्वन्द्व भी बढ़ा है। सोहरत और वैभव की चाह में हर आदमी एक दूसरे को पीछे छोड़ने में लगा है । परिणाम की चिन्ता किये बिना 'येन केन प्रकारेण' लक्ष्य की प्राप्ति में दौड़ रहा है जबकि सही लक्ष्य का मार्ग उसे पता ही नहीं है । सुख की परिभाषा को इतना संकीर्ण बना दिया है कि उसमें आध्यात्म एवं रचनात्मकता का समावेश ही नहीं हो सकता है । वैभव और स्मृद्धि की चकाचौंध में इंसान को अपना और पराया समझने में अक्षम बना दिया है तभी तो समाज में क्रूर, अत्याचार एवं अमानवीय कृत्य किये जा रहे हैं । अपने अभीष्ट की प्राप्ति में इन्सान अंधा हो गया है और उसके सामने हर अभीष्ट के लिए युद्ध ही दिखाई पड़ रहा है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब मानव अपनी लीक से हटकर बर्बरता की ओर बढ़ा है तब-तब समाज में विध्वंस हुआ है और मानव एवं मानवता का विनाश हुआ है । यह दुहराने की जरूरत नहीं है क्योंकि आप सुधी पाठक भी इसी समाज और समुदाय के एक अंग है । जीवधारी मनुष्य के रूप में आप सभी संवेदनाओं, भावनाओं एवं कल्पनाओं से

भली भांति परिचित हैं ।

मैं भी इसी भौतिक आपाधापी में अन्य लेखकों एवं विचारकों की तरह समाज में युद्ध के विकल्प खोजने का असफल प्रयास कर रहा हूँ । युद्ध दो तरह से होता है, मानसिक युद्ध और शारीरिक युद्ध । मैं मानसिक युद्ध का समर्थक हूँ क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष क्षति नहीं होती है । आदमी भावनाओं से मर्माहत जरूर होता है लेकिन कहीं धन, वैभव का नाश नहीं होता है । परिणाम इतना ही होता है कि अनबन हो जाती है और वैचारिक आदान-प्रदान बन्द हो जाता है । इसमें दोनों पक्ष अपने को मूल्यांकित भी कर लेता है । अगर कर्मियों पर ध्यान और अमल हो जाता है तो संबंध पुनर्स्थापित हो जाता है और अगर अहं (Ego) आड़े आ जाता है तो दोनों पक्ष मनमसोस कर अपना-अपना पुआ पका लेते हैं स्थिति यथावत रह जाती है । लेकिन युद्ध अगर शारीरिक होता है तो इसमें परिणाम भयावह होते हैं । दोनों पक्षों में धन, वैभव और जान-माल की भारी क्षति होती है । अहंकार, ज्ञान और नैतिकता पर इतना प्रभावी हो जाता है कि बच्चे और बूढ़े तथा महिलाएँ तक भी बख्शी नहीं जाती हैं और भारी विनाश लीला हो जाती है । इसका दूसरा पक्ष और प्रभावी है क्योंकि उस युद्ध के परिणामों का असर आगे भी बना रहता है । कई पुश्तों तक वह शत्रुता स्थानान्तरित होती रहती है । अगर पिता किसी के खून का प्यासा रहता है तो बदले की भावना उसके पुत्र में भी आ जाती है और पिता के मरणोपरान्त भी वह शत्रुता उसी मात्रा (Quantum) में कायम रह जाती है । मैं मानता हूँ कि मनुष्य से मनुष्य का वैचारिक मतभेद हो सकता है लेकिन उसका निराकरण वैचारिक और बौद्धिक स्तर पर ही हो जाय तो समाज और उस व्यक्ति के लिए लाभदायक है । कम से कम भौतिक क्षति तो नहीं होती और आगे के लिए रास्ता भी खुल सकता है । लेकिन ये विचार केवल मेरे हैं इसे कितना अमल में लाया जा सकता है यह मैं आप पर ही छोड़ता हूँ । अगर इसका 01% भी असर आप या समाज पर पड़े तो मैं अपने को धन्य मानूँगा क्योंकि स्थिति इतनी असहज हो गयी है जिसकी कल्पना ही नहीं की जा सकती है ।

आइये ! इन्हीं बिन्दुओं पर विचार करने के लिए मैं आपको द्वापर और त्रेता युगों में ले चलता हूँ जहाँ महाभारत और राम-रावण का युद्ध हुआ है । पाण्डवों ने अधिकार विहीन होना स्वीकार किया, निर्वसन स्वीकार किया लेकिन युद्ध तब तक नहीं चाहा जब तक उनके मन में आस थी कि कौरवों के मन में अवश्य दया भाव जगेगी और वे केवल पाँच ग्राम देकर समझौता का अवसर देंगे । लेकिन जब सब प्रयास निष्फल हो गया तो युद्ध हुआ और समर क्षेत्र में सभी भाइयों का सर्वनाश हुआ । हालांकि यह बात अलग है कि युद्ध जीतने के बाद भी महाराज युधिष्ठिर के मन में संताप रह जाता है और वह कहते है :-

'राज सुख लहू भरे कीच का कमल है ।'

उसके मन में संताप के असंख्य दीपक हमेशा जलते रहते हैं ।

उसी प्रकार राम-रावण युद्ध में भी प्रभु श्री राम सर्वशक्तिमान होते हुए भी युद्ध को नकारना चाहते थे लेकिन अहंकारी रावण जब सारे संधि और विनय प्रस्ताव को ठुकरा देता है तो श्रीरामजी के मन में यह कल्पना आती है और परिणाम आप सब जानते हैं । माँ जानकी को वापस लाना उनकी नैतिक जिम्मेदारी थी । अगर वे नहीं लाते तो उनके पौरूष की हार होती । यहाँ युद्ध अधिकार के लिए था, किसी को बर्बाद करने के लिए नहीं । वाद-विचार के दोनों तर्कों से मेरा आकुल-व्याकुल मन घंटों टकराता रहा और इस टकराव की स्थिति में मैं फैसला आप पर छोड़ता हूँ । युद्ध या शांति दोनों ही वैचारिक वृक्ष की शाखाएँ हैं । युद्ध निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर तभी होने चाहिए जब शांति के सारे मार्ग बन्द हो जाऐं । अनावश्यक अहंकार के वृक्ष पर विनाश के ही फल लगते हैं ।

●

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश का सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात हिन्दी ।

-रवीन्द्रनाथ ठाकुर

नई जिन्दगी



– प्रमोद कुमार
व. लिपिक/उप मु.वि.अभि. कार्यालय,
पूर्व रेलवे, जमालपुर

'इतनी रात गए; कहाँ थे स्वामी ?' – अपने लड़खड़ाते पति का दामन थामती हुई सुषमा ने जैसे ही उनकी आँखों में झाँकना चाहा कि नजरें झुकाकर झल्ला उठा था उसका पति ।

'चुप हरामजादी ! कहीं था तुम्हें मतलब ? तुम होती कौन हो पूछने वाली ।'

'आपकी बीबी ।'

'हूँ ऊँ...ये बीबी क्या होती है ? मैं ईबी-बीबी कुछ नहीं मानता । मानता हूँ तो केवल साकी, शराब और मयखाना ।' – और गिरकर बेहोश हो गया था । साथ ही, गिर पड़ी थी सुषमा भी । पति को सँभाल नहीं पायी थी वह ।

सुषमा की गोद में उसके पति का सिर था । मानो सावित्री की गोद में सत्यवान पड़ा हो । रात के बारह बज रहे थे । पति के इन्तजार में आँखें बिछाए रहने की वजह से सुषमा की आँखें तो यूँ ही बोझिल थीं । रोजमर्रे की बेवसी में अश्क गिरते रहने के कारण मानो आँखों में कजली पड़ गयी थी ।

बेवसी दिनोंदिन और लाइलाज रोग बनता जा रहा था । पति को सही राह पर लाने के लिए सुषमा न जाने क्या-क्या यत्न करके थक चुकी थी । सुबह बड़े प्यार से पति को खिला-पिलाकर ड्यूटी के लिए विदा करती किन्तु शाम तक ढ़ाक के फिर वही तीन पात । बात बनने के बजाय और बिगड़ती जा रही थी ।

कालान्तर में सुषमा का धैर्य जबाब देने लगा था । एकदिन उसने जिन्दगी का कड़ा फैसला लिया । उसने घर छोड़ दी, वह भी चुपके-से; पति की अनुपस्थिति में ही । शाम जब नशे में धुत्त पति घर आया तो पत्नी को सामने नहीं पाकर चिल्ला पड़ा –

'सुषमा...अरी कहाँ हो ? अरी आज कहाँ मर गयी साली ? अरे...घर में तो कोई नहीं है ? अच्छा हुआ साली बिना भगाए ही भाग गयी । अब मेरा रास्ता क्लियर – कहते-कहते कटे वृक्ष की भाँति धड़ाम से गिर पड़ा था वह ।

फिर उठने की असफल कोशिश करते हुए कहा था- 'अरे...लगता है सचमुच भाग गयी साली । खैर चलो-अब मुझे साकी से शादी करने से कोई नहीं रोक सकता ।'

अगले दिन वह मयखाना में था; जहाँ सोलहों सिंगार कर घुँघट में बैठी साकी को देखकर उसकी बाँछें खिल उठी । वह चहकते हुए बोला – 'अरे वाह ! कितना हसीन अंदाज है तुम्हारा; निहायत वसन्त में रंग-बिरंगे फूलों से लदी गदरायी जवानी की मलिका ! बिल्कुल दुल्हन की भाँति । आज मैं सच में दुल्हन बनाऊँगा रानी और घर लेकर जाऊँगा ।'

'क्या आपको पत्नी नहीं है ?' – घूँघट से आवाज आयी थी ।

'नहीं तो....'

'मैं नहीं मानती । आप झूठ बोल रहे हैं ।'

'थ-थ-थी किन्तु अब नहीं है । भाग गयी साली ।'

'क्यूँ-क्यूँ भाग गयी ?'

'यूँ ही...एक दिन अचानक भाग गयी ।'

'क्योंकि आपने पत्नी के प्यार का कद्र नहीं किया ।'

'हाँ...नहीं....नहीं तो....'

'नहीं क्या ? यही बात है । इतने दिनों से मैं आपके साथ हूँ । आपको अच्छी तरह जानती हूँ ।'

'हाँ....'

'तो फिर मैं भी नहीं जाती आपके घर आपकी दुल्हन बनकर । क्या गारंटी है मेरे साथ पहले जैसा व्यवहार नहीं करेंगे आप ? मेरे प्यार का भी कद्र नहीं हुआ तो....'

'नहीं...रानी । यकीन दिलाता हूँ कि तुम्हारे प्यार का कद्र करूँगा । तुम्हें तो मैं पलकों पर बिठाकर रखूँगा । - खुशामदी लहजे में बोला था वह ।

'कैसे यकीन करूँ तुम शराबी पर । तुम तो नशे में सबकुछ भूल जाते हो ।'

'ऐसी बात है तो आज से मैं शराब पीना ही छोड़ दूँगा । मैं कान पकड़ता हूँ ।'

'सच में...'

'सच में रानी ।'

'तब तो जाऊँगी मैं तुम्हारे घर दुल्हन बनकर ।'

'चलो किसी मन्दिर में जाकर शादी कर लेते हैं ।'

'उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि हम दोनों तो पहले से पति-पत्नी हैं' - सुषमा घूँघट उठाते हुए बोली - 'मैं तो पहले से आपकी दुल्हन हूँ । मैं हूँ आपकी सुषमा ।'

'तुम सुषमा ! ये कैसे संभव है ? तुम यहाँ कैसे ?' - उसके पति का सारा नशा मानो काफूर हो चुका था एक झटके से ।

'चलिए घर जाकर सबकुछ बता दूँगी ।'

'सुषमा...मैंने तुम्हें बहुत तकलीफ दिया है । तुम तो मेरी सावित्री थी किन्तु कभी कद्र नहीं किया तुम्हारे प्यार का । ये जान तो कब की चली गयी होती ! यदि, तुम मेरी पत्नी न होती ! कई बार तुमने मुझे मौत के मुँह से बचाया है । आज तुमने मेरी आँखें खोल दी । यह शराब, साकी और मयखाना सब कुछ बर्बादी की सीढ़ी है । जिसने अपनी पत्नी के प्यार का कद्र नहीं किया । उसकी जिन्दगी बिल्कुल मेरी तरह नरक से भी बदतर हो जाती है । काश, मैं मूरख पहले संभल गया होता ! काश, बहुत पहले तुम्हारी बात मान लिया होता !'

'कोई बात नहीं स्वामी । सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाय तो उसे भूला नहीं कहते । चलिए हम दोनों आज से एक नई जिन्दगी की शुरूआत करें ।'

'हाँ, चलो मेरी प्यारी सुषमा, मेरी जिन्दगी । तुम्हारे प्यार की जीत हुई और तूने प्यार से मेरे नफरत को प्यार में बदल दिया । आज से हमदोनों एक नई जिन्दगी की शुरूआत करें । अब हमदोनों के बीच कोई नहीं आएगा । न शराब, न साकी, न मयखाना ।'

....और इस तरह दो दिल फिर से एक हो गए । एक बसा-बसया घर उजड़ने से बच गया । सुषमा घर से भागी नहीं थी बल्कि पति को सही राह पर लाने के लिए एक योजना के तहत घर छोड़ी थी । साकी को पैसे की लालच देकर पति की जिन्दगी से उसे दूर करने में कामयाब हो पायी थी ।



कड़वा सच

लघु कथा

– अशोक आशीष
तकनीशियन-।।।
समाडि, पूर्व रेलवे, आसनसोल ।

रेल यात्रा में चाय, पानी, कोल्ड ड्रिंक्स, लस्सी, स्नैक्स, केक-बिस्किट, सोहनपापड़ी, फल, झालमुढ़ी, लिट्टी-चोखा, इडली आदि से लेकर खाने पीने, पहनने-ओढ़ने, पढ़ने-लिखने जैसी चीजों के हॉकर हाँक लगाते चलन्त दीख जाते हैं । इन चीजों को बेचने के अन्दाज अलग-अलग होते हैं । वैसे भी आज के व्यावसायिक दौर में चीजों को बेचना भी एक कला ही समझा जाता है ।

वह दुबला-पतला, छरहरा-सा युवक भी एक सामान्य हॉकर था । जिस प्रकार भगवान शिव के गले में साँपों की माला लटकती रहती है उसी प्रकार उसके गले में तम्बाकू, गुटखा, पान-मशाला के भाँति-भाँति के लच्छे लटक रहे थे । हाथ में एक झोला था जो इन्हीं चीजों से भरा पड़ा था ।

थोड़े-थोड़े अन्तराल में वह पूरी लय में यात्रियों का ध्यान आकर्षित कर रहा था, "रजनीगंधा, पान-पराग, मधु, शिखर, तुलसी, फ्लैक....."

वह जैसे ही मेरे बगल में गुजरा, मैं अनायास पूछ बैठा, "दुनिया का सारा जहर बेच रहे हो या कोई जहर बाकी भी है ?"

"जहर !" उसके स्वर में बेतकल्लुफी थी ।

"बाबूजी ! अमृत कहिये अमृत ।" उसके जबाव में व्यंग्य था ।

मेरे प्रश्न से वह कहीं-न-कहीं आहत हुआ था ।

"क्या बक रहे हो ?" मैं खीझ उठा ।

मेरी बातों का आशय उसकी ज्ञानेन्द्रियों के रडार की पकड़ में आ चुका था ।

उसने ठहर कर कहा, "बाबूजी ! आज यही जहर ज्यादातर लोगों की जरूरत है, पहले मैं भी ट्रेन में फल बेचा करता था । सीजनल फल । तब कस्टमर खूब मीन-मेख निकालता था । कभी कहता-दाम अधिक है, बाजार में तो यह दर मिलता है । कभी कहता माप-जोख कम है । कोई कहता ये बेचने वाले यात्रियों को ऐसे ही लूटता है...बगैरह-बगैरह । सच कहूँ बाबूजी सुन-सुन कर कान पक जाता था । उस पर भी न बिका तो सड़ने-गलने का रिस्क अलग ।"

वह साँस लेने के लिए रूका था । फिर चालू हो गया "आज सेहत-बेहत पर कितने लोग ध्यान देते हैं । दूध-दही बेचने वाला गली-गली भटक रहा है और दारू....अब इसी जहर को देखिए साहब, जीरो टेंशन है, न सड़ने-गलने का डर, न तोल-मोल का किचकिच, जिसके लत लगा है, झख मारकर लेगा । हर आइटम का रेट फिक्स है । लेना है तो लो नहीं तो अपना जय सियाराम ।"

वह पूरी रौ में कड़वा सच उगल रहा था । और जाते-जाते उसने आखिरी वाक्य जोड़ा था, "साहब पहले घर-परिवार चलाना मुश्किल होता था । आज कम से कम इस टेंशन से तो फ्री हूँ ।"

उसके कड़वे सच के आगे मैं स्तब्ध था ।

माता वैष्णो देवी की यात्रा

यात्रा-वृतांत



– डॉ0 अमित कुमार साहु
सहायक मंडल चिकित्सा अधिकारी,
मुख्य अस्पताल, जमालपुर ।

जम्मू-कश्मीर के जम्मू मंडल में कटरा के निकट त्रिकुटा पर्वत पर स्थित 'माता वैष्णो मंदिर' देश के प्रमुख तीर्थस्थलों में गिना जाता है । हिन्दू धर्म में माता वैष्णो देवी को अवतार बताया गया है । माता के दरबार में पहुँचने के लिए बस एवं ट्रेन सुविधाएँ राजधानी दिल्ली से उपलब्ध है । राजधानी दिल्ली से 'श्री शक्ति एक्सप्रेस' ट्रेन से सीधा कटरा तक की यात्रा की जा सकती है, जहाँ से भवन तक की दूरी करीब 12 कि.मी. है । मुख्य भवन के निकट 'सांक्षी छत' तक के लिए अब कटरा से हेलीकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है, लेकिन ज्यादातर यात्री इस दूरी को पैदल ही पार करते हैं । जम्मू से आगे कटरा तक रेल लाइन भी पहुँच चुकी है और यहाँ श्री माता वैष्णो देवी के नाम से स्टेशन बनाया गया है । राजधानी दिल्ली समेत देश के अनेक प्रमुख शहरों से यहाँ के लिए सीधी ट्रेन सेवा उपलब्ध है ।

माता वैष्णो देवी की यात्रा अत्यंत मनोहारी एवं मन को अभूतपूर्व शांति प्रदान करती है । कटरा पहुँचने के बाद यहाँ बहुत सारे होटल हैं जो रहने खाने के साथ-साथ आसपास घुमाने एवं स्टेशन छोड़ने के लिए गाड़ी भी देते हैं । कटरा, जम्मू एयरपोर्ट से 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, पर रेलवे स्टेशन से काफी नजदीक है । इसलिए यहाँ पहुँचने के लिए रेलमार्ग अत्यंत उपयुक्त है ।

कटरा में कमरा लेने के बाद चढ़ाई के लिए जो जरूरी समान जैसे-गर्म कपड़े, टॉर्च, पैसा इत्यादि अपने साथ ले लेना है । यहाँ ऊपर में ठंड रहती है तथा चढ़ाई पर चढ़ने के लिए ज्यादा समान लेने की जरूरत नहीं होती इसलिए बैग रूम में रखकर तथा जरूरी समान लेकर होटल की तरफ से मिली गाड़ी से हम माता की यात्रा पर निकल पड़े । वहाँ पहले पंजीकरण कराना पड़ता है; जहाँ फोटो एवं किस राज्य एवं जिला से आए हैं ? पूछा जाता है । फिर, वहाँ से जो रसीद मिलता है वह यात्रा में दो जगह-एक शुरूआत में बाणगंगा में तथा दूसरा अर्धकुमारी में यह पंजीकरण रसीद दिखाना पड़ता है ।

माता के भवन तक पहुँचने के लिए दो मार्ग हैं तथा प्रत्येक मार्ग पर सीधी चढ़ाई तथा सीढ़ी मार्ग मौजूद है । हमलोगों ने बाणगंगा से अपनी यात्रा की शुरूआत की, 'जय माता दी' - 'जय माता दी' की गूँज चारों ओर रहती है । मन एवं चित्त एकदम धार्मिक एवं माता के दर्शन को लालायित रहते हैं । 12 किमी. की दूरी छोटी बन जाती है, जैसे ही हम लगभग 6 कि.मी. की दूरी तय करते हैं तो अर्धकुमारी का स्थल आता है । कहा जाता है जहाँ माँ पत्थरों के बीच छिप गई थी । वहाँ का टिकट शुरूआत में चढ़ते समय ही लेना चाहिए । क्योंकि अत्यंत भीड़ के कारण ऊपर से उतरने के बाद टिकट लेने पर ज्यादा इंतजार करना पड़ सकता है । अर्धकुमारी का टिकट लेने के बाद फिर से माता के भवन की ओर हम अग्रसर होते हैं, शाम 4 बजे चढ़ाई शुरू करने के पश्चात् हम माता के दरबार में 11 बजे रात को पहुँचते हैं । जहाँ श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की ओर से ठहरने एवं प्रसाद के लिए फिर वही पंजीकरण रसीद दिखाना पड़ता है ।

यहाँ पहुँचने के बाद स्नान एवं नए कपड़े पहनने के बाद सुबह 4 बजे हम माता वैष्णो देवी के अद्भूत दर्शन कर कृतार्थ होते हैं, यहाँ जगह-जगह लॉकर की सुविधा भी है जहाँ हम अपने साथ लाए बैग को रखकर आराम से माता के दर्शन कर सकते हैं ताकि भीड़-भाड़ में अन्य यात्री को असुविधा ना हो ।

माता के दर्शन कर फिर हमारी यात्रा श्री भैरव नाथ मंदिर जो वहाँ से 3 कि.मी. की और ऊँचाई पर है शुरू करते हैं । यहाँ हम सुबह 3 बजे पहुँचते हैं । यहाँ पर भी प्रसाद लेने के बाद, पूजा अर्चना करते हैं । फिर सामने ही एक भोजनालय में भोजन कर थोड़ा आराम करते हैं । यहाँ का दर्शन बिल्कुल अलौकिक है, और प्राकृतिक दृश्य मनोहर है । फोटोग्राफी के लिए यह स्थान काफी लोकप्रिय है ।

यहाँ से फिर हम नीचे उतरते हैं, नीचे उतरने वक्त बंदरों की टोली मिलती है जो राहगीरों के पास से प्रसाद छीनने का प्रयास करते हैं, सतर्क रहना आवश्यक होता है । यहाँ बैग या बच्चों को उतारने एवं चढ़ाने के लिए पिट्ठू का सहारा लिया जा सकता है, जो आपकी यात्रा को सुगम बनाते हैं । वहाँ से उतरते वक्त रास्ते में अर्धकुमारी की गुफा आती है जहाँ दर्शन कर हम नीचे उतरते हैं नीचे उतरकर प्रसाद ले कर फिर होटल द्वारा मिले लोकल सिम से कॉल कर उसे बुलाते हैं जो हमें होटल तक पहुँचा देता है ।

माता वैष्णो देवी की यात्रा अत्यंत सुखद एवं आलौकिक होती है, अपने जीवन में एक बार सपरिवार अवश्य दर्शन करें ।

कविता

– मो. परवेज इकबाल
सीजीसी/जे एम एस वाई
जमालपुर

दामे फरेब में मुझे लाती है जिन्दगी,
क्या-क्या न सब्ज बाग दिखाती है जिन्दगी ।

बढ़ते हैं जब भी मेरे कदम मंजिलों की ओर
दीवार बन के राह में आती है जिन्दगी ।

चुनता हूँ जब भी अपने लिए कोई फूल मैं,
बादे खज़ा से मुझको डराती है जिन्दगी ।

संसार का निर्माण जब मेरे लिए हुआ
फिर क्यों मेरा वक़ार घटाती है जिन्दगी ।

लिख कर हमारे नाम जहाँ भर की तोहमतें
कुछ दर्दे दिल को और बढ़ाती है जिन्दगी.

परवेज क्या बताऊँ मैं ये हाले रोज व शब
मुझको हँसा-हँसा के रूलाती है जिन्दगी ।

अजब-गजब लोग

– अशोक कुमार शर्मा
भूतपूर्व वरीय अनु. अभि.
वैगन रिपेयर शॉप-I

गूंगे से पूछते गुड़ का स्वाद,
बहरे से गुप्त बात करते ।
अंधे को बनाते चौकीदार
दुराचारियों को माला पहनाते ।
झूठ, मक्कारी बाहन इनकी,
चापलूस इनके सारथी होते ।
देते भाषण लम्बी-चौड़ी
गिरगिट जैसी रंग बदलते ।
करते शोषण निर्धनों का,
दुर्बलों को आँख दिखाते ।
झूठ, हिंसा के पुजारी
बापू जिन्दबाद ! नारे लगाते ।
बनते मसीहा गरीबों के
अमीरों को सरकारी प्रसाद बांटते
स्लाइन चढ़ाते मुर्दों को
कुत्ते को हॉर्लिक्स पिलाते ।

ग्लोबल वार्मिंग



– राजेश कुमार राम
लिपिक-।।
उप मु.यां.अभि.(वैगन) कार्यालय
पूर्व रेलवे, जमालपुर ।

'ग्लोबल वार्मिंग' (Global Warming) आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या के रूप में विराजमान है । इसके कारण हमारी पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है । इस समस्या से न केवल मनुष्य बल्कि धरती पर रहने वाले प्रत्येक प्राणी प्रभावित हैं । ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या से निपटने के लिए विश्व भर में अनेक प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु समस्या कम होने के बजाय दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है ।

ग्लोबल वार्मिंग क्या है ?

हमारी पृथ्वी प्राकृतिक तौर पर सूर्य की किरणों से ऊष्मा प्राप्त करती है । ये किरणें वायुमंडल से गुजरती हुई पृथ्वी की सतह से टकराती है और वहीं से परावर्तित होकर पुन: लौट जाती है । पृथ्वी का वायुमंडल कई गैसों से मिलकर बना है जिनमें कुछ ग्रीन हाउस गैसें भी शामिल हैं । इनमें से अधिकांश गैसें धरती के ऊपर एक प्राकृतिक आवरण बना लेती है । यह आवरण लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के वातावरण को गर्म बनाए रखता है । ग्रीन हाउस गैसें जैसे-CO_2, N_2O, CH_4 इत्यादि में वृद्धि होने पर धरती के ऊपर बना यह आवरण और भी सघन हो जाता है । ऐसे में यह आवरण सूर्य की अधिक किरणों को रोकने लगता है जिससे पृथ्वी के वातावरण के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है ।

ग्रीन हाउस क्या है ?

विभिन्न प्रकार की गैसें-हाइड्रोजन (H_2), ऑक्सीजन (O_2), नियॉन (Ne), हीलियम (He), मिथेन (CH_4), एवं कार्बन डाइ-ऑक्साड (CO_2) का अपना एक प्रतिशत होता है । इन गैसों से बना एक आवरण जो पृथ्वी पर सुरक्षा परत की तरह काम करता है । ग्रीन हाउस कहलाता है । जिसके असंतुलित होते ही ग्लोबल वार्मिंग जैसी भीषण समस्या सामने आती है ।

ग्लोबल वार्मिंग क्यों हो रही है ?

- ग्लोबल वार्मिंग की समस्या के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार मनुष्य की गतिविधियाँ है । वाहनों एवं उद्योगों से अंधाधुंध होने वाले गैसीय उत्सर्जन और प्रदूषण की वजह से वातावरण में कार्बन डाइ-ऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रोजन ऑक्साइड आदि ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में बढ़ोतरी हो रही है जिससे वातावरण में गैसों का संतुलन बिगड़ता जा रहा है तथा बड़ी संख्या में हो रहे जंगलों का विनाश भी ग्लोबल वार्मिंग का प्रमुख कारण है ।
- आधुनिकीकरण के कारण, गाँवों का शहरीकरण में बदलाव, हर खाली जगह पर मकान, कल-कारखाना या कमाई के अन्य कई स्त्रोत खोले जा रहे हैं । खुली या ताजी हवा के लिए कोई स्त्रोत नहीं छोड़ा जाना ।
- अपनी सुविधा के लिए प्राचीन नदियों के जल की दिशा में बदलाव, जिससे नदी का प्रवाह कम होते-होते स्वत: समाप्त हो जाती है ।
- आधुनिक परिवेश में विश्व के कुछ देश अपने सामरिक शक्ति परीक्षण के कारण परमाणु परीक्षण कर रहे हैं । इससे भी वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है ।

- जंगल से पेड़ों की कटाई कर मनुष्य अपने घर-मकान, ऑफिस आदि जगहों पर लकड़ी से निर्मित जरूरत के सामान का अत्यधिक प्रयोग कर रहे हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव :

ग्लोबल वार्मिंग एक आपदा है, जिसका प्रभाव बहुत धीरे-धीरे होता है । यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि अन्य किसी दूसरी आपदाओं की भरपाई तो मनुष्य किसी तरह कर लेता है, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग से हो रहे नुकसान की भरपाई मनुष्य अपने जीवन के अंतिम सांस तक नहीं कर सकता है ।

- ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई पशु-पक्षी व जीव-जंतु की प्रजाति ही विलुप्त हो चुकी है ।
- जिस जगह साल के बारह महीने बर्फ की चादर ढ़ँकी रहती थी, वहाँ ग्लोबल वार्मिंग के कारण बर्फ पिघलने लगा है । जिससे नदियों के जलस्तर में वृद्धि हो रही है ।
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण रेगिस्तान का विस्तार होने लगा है । जिससे आने वाले वर्षों में और अधिक गर्मी बढ़ने की संभावना है ।
- इसके कारण पृथ्वी पर मौसम असंतुलित हो गया हे, जिससे जब चाहे अति वर्षा, गर्मी व ठण्ड पड़ने लगी है या सुखा पड़ने लगा है । इसका सबसे बड़ा असर फसलों पर पड़ रहा है ।
- ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण का सबसे ज्यादा नुकसान हो रहा है । जिस कारण प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त है । कुछ शहरों में तो शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिलने के कारण मनुष्य घुटन की जिंदगी जी रहा है ।

ग्लोबल वार्मिंग का निराकरण :

- ग्लोबल वार्मिंग के निराकरण के लिए बहुत ही आवश्यक है कि पर्यावरण को बचाया जाए । इसके लिए दैनिक जीवन में बहुत ही छोटे-छोटे कार्यों में हो रहे बदलाव को सही दिशा देकर इस समस्या को सुलझाया जा सकता है ।
- पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाकर एवं अत्यधिक मात्रा में वृक्षारोपन कर भी इस समस्या को कम किया जा सकता है ।
- लंबी दूरी की यात्रा के लिए कार के बजाय ट्रेन की यात्रा करें । अपने दैनिक जीवन में जहाँ तक हो सके दुपहिया वाहन के बजाय साईकिल का उपयोग करें ।
- बिलजी से चलने वाले साधनों की अपेक्षा, सौर ऊर्जा वाले साधनों का प्रयोग करें ।
- जल का दुरूपयोग न करें । प्राचीन व प्राकृतिक जल संसाधनों का नवीनीकरण ऐसा न करें जिससे वह नष्ट हो जाय ।
- आधुनिक वस्तुओं के उपयोग को कम करें तथा घरेलु व देशी वस्तुओं का उपयोग अधिक करें ।
- पॉलिथीन का उपयोग न करें एवं प्लास्टिक से बनी वस्तुओं को न जलायें ।
- पेट्रोल, डीजल एवं बिजली का उपयोग कम कर हानिकारक गैसों का उत्सर्जन कम करना चाहिए ।

अगले 10 वर्षों में हमारी पृथ्वी आज से 4 डिग्री और गर्म हो जाएगी । हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं । आज विश्व के सभी विकसित और विकासशील देश ग्लोबल वार्मिंग से चिंतित हैं । अब समय आ गया है इस समस्या से निपटने के लिए सार्थक प्रयास किये जाएँ । यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं बल्कि हम सभी देशवासियों को भी इसके लिए प्रयत्न करना होगा ।

हिन्दी के बिना भारत की राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है ।

-बी.बी. गिरि

विचार और तथ्य



- दया शंकर श्रीवास्तव
प्रधानाचार्य, एम.पी. स्कूल
जमालपुर ।

विकासवाद ने आज विश्व को वैश्विक गाँव के रूप में परिवर्त्तित कर दिया है । दुनिया व मनुष्य ने आज हर क्षेत्र में प्रगति का परचम लहराया है । पाँच-सात दशक पहले जो स्वप्न सरीखा लगता था आज वह हमारी ऊँगलियों पर कदमताल कर रहा है। चाहे वह शिक्षा जगत हो, सामरिक क्षेत्र हो, चिकित्सा का आँगन हो, या फिर मानवीय सुविधाओं का संसार, विज्ञान ने सबकुछ जैसे एक थाली में परोस कर रख दिया है ।

विज्ञान के विकास ने केवल भौतिक समृद्धि की इबारत ही नहीं लिखी है वरन् वैचारिक चेतना को भी इसने प्रभावित किया है । आज हम बेबाकी से अपनी राय रख रहे हैं, जो किसी जमाने में अनदेखा कर दिया जाता था, असभ्य माना जाता था, या फिर उसे उदासीनता के आगोश में ढकेल दिया जाता था ।

विचारों में बेबाकीपन आना सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ एवं सुदृढ़ कदम हो सकता है, लेकिन तथ्यों से परे विचार रखना और यह कहना कि कोई सहमत हो या नहीं हमारा यही विचार है, मैं समझता हूँ वर्षों पहले अनदेखा करने की प्रवृति से ज्यादा खतरनाक है। अनदेखा करने से यहाँ तात्पर्य यह है कि शायद लोग उसे तथ्यों के साथ जोड़कर पेश करने में असमर्थ रहे हैं। इसलिए उसे टाला जाना ही उन्हें श्रेयस्कर लगा हो। परन्तु आज विचारों को प्रस्तुत करने की जिद ने विचारों के बेबाकीपन की निश्चलता को ही समाप्त कर दिया है। हमारे विचार भले ही तथ्यों का माखौल उड़ाए, परन्तु विचारों को पेश कर भ्रम पैदा करना एवं सस्ती लोकप्रियता हासिल करना ही आज लक्ष्य हो गया है ।

सोशल मीडिया के दौर में इस तरह की मानसिकता को ज्यादा बल मिला है, यहाँ यह कहना उचित एवं वाजिब होगा कि सोशल मीडिया नकारात्मक है, गलत होगा, परन्तु वैचारिक समागमों के दौरान यह बात ज्यादा उभर कर परिलक्षित हुई है कि लोग अपने विचारों को तथ्यों से ज्यादा तरहीज व तव्वजो दे रहे हैं। हमारे विचारों में तथ्य हो या न हो, हमारी जुबान दिल के साथ युगलवंदी करे न करे परन्तु विचार प्रकट करना अनिवार्य है । हम शिक्षित जो हो चुके हैं, भले ही हम सभ्य व संस्कारी हों न हों ।

पाँच-सात दशक पहले लोग शुचिता के साथ बात रखना पसंद करते थे, परन्तु आज वह शुचिता हमारे समाज व विचार दोनों में अनुपस्थित है ।

लोग प्राय: कहा करते थे मतभेद स्वाभाविक है, मनभेद नहीं, परन्तु आज लगता यह है कि अगर अगला सही भी कह रहा है तो उसका समर्थन करने की बजाए उसके प्रत्युतर में प्रवल विरोध ही लाजिमी है । बात यहीं तक रहती तो शायद समाजिक विरोधामास की खाई इतनी चौड़ी नहीं होती । फैशन यह हो गया है कि ऐसे विरोधाभाषियों की पीठ थपथपाकर एक जमात में तब्दिल करना ही वैचारिक बेबाकीपन हो गया है भले ही हमारी जुबान लड़खड़ा क्यों न रही हो ?

स्त्री वंश, समाज व सभ्यता की जननी है । पर उसका उचित स्वाभिमान व सम्मान आज भी समाज से गायब है । सदियों से उस पर हमले होते आ रहे हैं । चाहे कोई भी समाज हो स्त्रियाँ त्रस्त व त्यक्त हैं । सभी शुभ कार्यों में वगैर स्त्री के कार्य नहीं सम्पन्न होते, ऐसा मानने वाला समाज उसके अधिकारों की स्वच्छंदता एवं इच्छा पर मौन है । उनकी आजादी को यह पुरूषवादी समाज हमेशा से अपनी जागीर समझता आया है । जबकि तथ्य यह है कि वह पुरूष की जननी है । यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि प्रत्येक सफल पुरूष के पीछे एक महिला होती है परन्तु जब वही स्वच्छंदता के साथ कुछ चाहत रखती है तो यही पुरुष समाज उस पर नियंत्रण करने के येनकेन प्रकरेण उपाय ढूँदने लगता है ।

चाहे कोई भी समाज हो रूढ़िवादी प्रवृतियाँ

आज भी प्रभावी है, और इनको बनाए रखने के लिए वैचारिक कुत्तकों का दौर भी उतनी ही शिद्दत से जारी है । तीन-तलाक, दहेज प्रथा, प्रेम विवाह जैसे रूढ़िवादी मामलों पर छिड़ी वहस ने एक बार पुन: यह सिद्ध किया है कि चाहे धर्मग्रंथ इसकी इजाजत दे या न दे। वैज्ञानिक सोच व मानवीयता उसकी पैरोकारी करे या न करे तो भी वैचारिक दिवालिएपन का साम्राज्य ध्वस्त न हो ।

राष्ट्रवाद व संस्कृति जैसे मुद्दों पर जिस तरह से विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं यह आगाह व सचेत करनेवाली है । क्या हमारी मर्यादाएँ इतनी कमजोर व असभ्य हो गयी है कि हमारे विचारों की तथ्यपरक प्रस्तुति को छोड़; वैचारिक जिद पर आश्रित होने लगे हैं। इसे जाति, धर्म व सम्प्रदाय के नजरिए से देखा जाने लगा है । आज हमारी शिक्षा को यह बताना होगा कि ऐतिहासिक भूल सुधारना कोई पाप नहीं है, परन्तु उस भूल को इतिहास मान लेना व उसके साथ छेड़छाड़ का दावा करना दोगली मानसिकता का परिचायक है ।

राजनीति अपने नफा-नुकसान के आधार पर फैसले लेती रही है और सभ्यता, संस्कृति व वैचारिक चैतन्यता ही उसे राह दिखाने का कार्य करती रही है, परन्तु आज के दौर में शायद वह असमर्थ दिखने लगी है । तो क्या यह समझना वाजिव न होगा कि विश्लेषण करने का हमारा नजरिया अपने नफे-नुकसान पर आधारित है न कि शुचिता मर्यादा व नैतिकता पर। यहाँ एक बात और द्रष्टव्य है कि भौतिकता की प्रवृति व प्रगति के आयाम हमें संवेदनाहीन कर रहे हैं । विकासवाद का यही खोखलापन ही आज हमारी लाचारी का सबब है ।

भीड़तंत्र में तथ्य (सच) से छेड़छाड़ संभव है, परन्तु तथ्य अकेला ही मुकाबिल है, पराजित नहीं, ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार बादल कुछ समय के लिए सूरज को अपनी आगोश में छुपा सकता है परन्तु सदैव कि लिए नहीं । वैचारिक जिद क्षणभंगुर है, तथ्यों के साथ वैचारिक पुष्टि की जीत हमेशा से हुई है और होती रहेगी संभव है इसके लिए ज्यादा कुवार्नियाँ देनी पड़े ।

पश्चिमी सभ्यता में एक स्तर के बाद तथ्य को स्वीकार करने का प्रचलन आज भी है । इसके अनेकों राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक उदाहरण भरे पड़े हैं। हमारी सभ्यता से सीखने वाले हमसे आगे चले गए और सभ्य हो गए और हम अपनी संस्कृति को छोड़ कर कौन सा उदाहरण पेश कर रहे हैं इसको देखना समीचीन होगा ।

विचार ही वह निर्धारक है जो ईश्वर की अनुपम कृति मनुष्य को जानवरों से अलग करती है । हम अपने विचार प्रकट कर सकते है परन्तु जानवर नहीं। लोग दुर्घटना में मर रहे है और हम Video supply कर रहे हैं । दोस्त नदी पुल से दारू पीकर शोले सदृश एक्टिंग कर रहे हैं और दोस्त रोकने के बजाय Videography कर message viral करने में अपनी योग्यता दर्शा रहे हैं । हमारे विचार भी अपेक्षाओं एवं तथ्यों से परे हो जाए तो मनुष्य एवं जानवर की निशानी को ही बयां करता है, जाहिलपन को ही दर्शाता है । फिर तो हमारे मनुष्य होने पर ही सवाल उठने लगेगें कि हमारे और उनमें अंतर ही क्या रहा ?

हमारी बौद्धिकता यह इशारा कर रही है, कि हमें अपने बौद्धिक स्तर का प्रदर्शन उतना ही ठोस ढंग से करना होगा ताकि हम अपने आप पर गर्व कर सकें हमारे दिल और जुबान लड़खड़ाऐं नहीं और वैचारिक शून्यता हमारा माखौल न उड़ाए यही हमारे व्यक्तित्व की ऊँचाई को दर्शाएगा । हमारे जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने कभी भी वैचारिक ओछेपन का समर्थन नहीं किया बल्कि सच के लिए, मर्यादा के लिए उन्होंने अपने पद को, सुख-सुविधाओं को त्याग दिया और सच तथा तथ्यों की कभी अनदेखी नहीं किया । कुर्बानियों से भी पीछे नहीं हटे । उनके ये आदर्श हमें इसी बात की प्रेरणा देते हैं कि हम उनके पद-चिन्हों पर चलते हुए उस ओछेपन का यथाशीघ्र त्याग करें और वैचारिक शुचिता को अपने व्यक्तित्व एवं समाज का अंग बनाएं तभी हम वैचारिक रूप से सबल एवं समर्थ्य राष्ट्र की परिकल्पना को साकार कर सकने में समर्थ होंगे ।

अगर हिंदुस्तान को हमें एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है -

-महात्मा गाँधी

दान के दस रूपये

– रेणु कुमारी
मुख्य मेट्रोन,
पूर्व रे. मु. अ., जमालपुर ।

दिसंबर का महीना था । ठंडी हवा जोर-जोर से चल रही थी । हवा के साथ बूँदा-बूँदी भी हो रही थी । ठंड के कारण लोगों को घर से निकलना मुश्किल हो गया था । लोग अपने-अपने घरों में गर्म कपड़ों के सहारे डुबके पड़े थे । कहीं-कहीं चौक-चौराहों पर ग्रामीणों के द्वारा आग का अलाव भी जल रहा था ।

उसी ठंड में दीनू झा बुझे-मन से सहमते-ठिठुरते हुए उस तरफ जा रहे थे जहाँ एक छोटा सा तालाब था । एक ऐसा काम करने जा रहे थे, जो उनका दिल नहीं चाह रहा था । लेकिन उनके पैर धीरे-धीरे आगे की तरफ बढ़ रहे थे । अंत में वे अपने निर्णायक स्थान पर पहुँच गये । चूँकि इसके पश्चात उनके पास और दूसरा विकल्प नहीं था । दर असल बात यह थी कि दीनू झा बहुत ईमानदार, सत्यनिष्ठावादी एवं गरीब ब्राह्मण थे । भिक्षाटन करके वे अपना एवं परिवार का भरण-पोषण करते थे । चूँकि प्राचीन काल में ब्राह्मण को यह कार्य दिया गया था कि शास्त्रों को पढ़ना और पढ़ाना, दान लेना-दान देना । इसलिए दीनू झा भिक्षाटन पर ही आश्रित थे । करीब चार-पाँच दिनों से उन्हें भिक्षा में कुछ नहीं मिला था । उनके बच्चे और पत्नी का भूख से बुरा हाल था । तत्पश्चात, यह दृश्य देखकर उन्हें सहन नहीं हो रहा था । अंत में उन्होंने यह निर्णय लिया कि अब मछलियाँ पकड़ना ही एक मात्र रास्ता मेरे पास बचा है जिससे मैं अपने बच्चे एवं पत्नी को जिंदा रख सकूँगा । इसलिए वे मछलियाँ पकड़ने के उद्देश्य से तालाब की ओर जा रहे थे ।

तालाब जाकर उन्होंने तीन-चार मछलियाँ पकड़ी और उसे हाथ में लेकर आ रहे थे । वे रास्ता भर सोचते आ रहे थे कि प्रभु ये कैसा दिन देखना पड़ रहा है । ठीक उसी समय उधर से रामू काका आ रहे थे । उन्होंने झा जी को प्रणाम किया । फिर पूछा – ब्राह्मण देवता आप कब से मछलियाँ खाने लगे हैं । क्या आप मछली खाते हैं ?

इस प्रश्न को सुनकर झा जी ने कुछ उत्तर नहीं दिया चूँकि समाज में ब्राह्मण का स्थान भगवान के बाद दूसरा स्थान के रूप में माना जाता है । ब्राह्मण के वचन भगवान के आदेश के रूप में स्वीकार किया जाता है । ब्राह्मण देवता के बिना न तो कोई शुभ कार्य सम्पन्न होता है न ही शुभ फल का संकेत देता है । ब्राह्मण सभी कार्यों को करने में अग्रणी के रूप में रहते हैं । किसानों के घर में जब नए फसल तैयार होने के बाद आते हैं । किसान उस अनाजों का कुछ भाग ब्राह्मण को दान में देते हैं ।

इसलिए रामू काका का आश्चर्य-चकित होना स्वाभाविक था । कुछ दिन पहले की बात है । रामू काका के गाँव में बहुत भव्य रूप से श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन हुआ था । रामू काका धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे । धर्म के कार्यों से उन्हें बहुत लगाव था इसलिए वे प्रतिदिन कथा सुनने जाते थे ।

कथावाचक कथा में प्रवचन कर रहे थे कि धन के तीन रूप होते है । प्रथम-दान – दूसरा-भोग, तीसरा-धन की समाप्ति । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक दिन कुछ न कुछ दान करना चाहिए । लेकिन दान उसी व्यक्ति को देना चाहिए जो दान की राशि का सदुपयोग करे । अन्यथा दान देने का फल नहीं मिलता है ।

रामू काका आज दान देने के उद्देश्य से घर से निकले थे । उन्होंने उस ब्राह्मण को दान में दस रूपये दिये फिर चुपके से उनका पीछा करने लगे । इधर झा जी को दान मिला उन्होंने मछलियों को वहीं फेंक दिया दूकान की तरफ भागे । दूकान से खाने-पीने की सामग्री लेकर जैसे ही घर पहुँच कर थैला रखा वैसे ही उनके बच्चे दौड़े-दौड़े आये और कच्चे गेहूँ चावल खाने लगे । इस दृश्य को देखकर रामू काका का हृदय करूण से ओत-प्रोत हो गया । उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने

लगी । उन्होंने झा जी को गले लगा लिया । अपनी स्थिति के अनुसार उन्होंने ढेर सारा धन झा जी को दिया ।

वर्तमान युग में । इस प्रथा की समाप्ति हो गयी है । मनुष्य जागरूक हो गया है । शिक्षा का विस्तार से प्रचार-प्रसार हो रहा है । आदमी खुद अपने आप पर निर्भर हो रहा है । फिर भी दान देना कोई बुरी प्रथा नहीं है । दान देने से तन-मन और धन की शुद्धि होती है । साथ ही, आत्मा में शांति मिलती है । मन में खुशी के साथ पुण्य की प्राप्ति होती है गरीबों में दान देने से गरीबों को सहारा मिलता है लेकिन दानकर्ता को उनकी आत्मा से निकली दुआ मिलती है ।

इसलिए हमारे शास्त्रों आदि में दान के ऊपर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी है । शाब्दिक अर्थ में कहा जाय तो भूखों को खाना, प्यासों को पानी अवश्य पिलाना चाहिए । इससे पूर्वजों के आशीर्वाद की प्राप्ति होती है ।

प्यार न करना दिल्ली में

– डॉ. विनय कुमार

मनोचिकित्सक, पटना

("एक मनोचिकित्सक के नोट्स"
पुस्तक से 'साभार')

पूरी साड़ी फटी हुई है, नई किनारी दिल्ली में ।
तरल आग की लहर बेचती, बर्फ हमारी दिल्ली में ।।

हश्र हवा में गुब्बारों-सा, होगा गर जेबें खाली ।
हल्के हैं इन्सान; बहुत हैं सिक्के भारी दिल्ली में ।।

हर मजहब तंदूर छाप, हर नीयत खुद में खोई सी ।
खंजर जिसके हाथ लगा, वो शख्स शिकारी दिल्ली में ।।

टंग जायेंगे छिले हुए मुर्गे से, अगर लजीज दिखे ।
नरम गोश्त में, दाँत गड़ाने की बीमारी दिल्ली में ।।

दो आने में दिल की फोटो कॉपी बिकती रहती है ।
सब कुछ करना प्यार न करना कारोबारी दिल्ली में ।।

पेड़-पौधे

– कृष्णानंद चौधरी

फुलकिया (ब्रह्म स्थान), बरियापुर, मुंगेर

कुछ पौधे लगाए थे पिताजी ने,
बागवानी का बड़ा शौक था उन्हें,
देखते-देखते वे पौधे, बड़े हो गए ।
धरती से अपनी उर्जा
स्वयं ही ग्रहण करने लगे
यानी अपने पैरों पर खड़े हो गए ।
पिताजी अब बूढ़े हो चुके थे,
विस्तर पर पड़े-पड़े,
पेड़ों को देखते रहते ।
उनमें नीम का भी एक पेड़ था,
चैत में निकले उसके किसलय
छरहरी टहनियों पर हवा संग झूमते रहते,
उन पत्तियों की छाया,
पिताजी के बदन पर, इस तरह पड़ती,
मानो कोई बेटी, अपने पिता की दुखती देह को सहला रही हो ।
एक दिन पिताजी से मैंने कहा-
कितनी जल्दी बड़े हो गए ये पौधे !
पिताजी ने मेरी ओर, प्यार से निहारते हुए कहा-
बेआ, यही तो जिंदगी है...।

एक दिन वह आएगा कि भारत निवासी इस भारतीय भाषा हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा होने के गौरव से अलंकृत देखेंगे ।

-बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर

दरकते रिश्ते की डोर



– शंभू साह
वरिष्ठ अनुभाग अभियंता
डी.सी.एस.

रिश्ता–यानि लगाव, अपनापन और नजदिकियों का सोच जिनके लिए सदा अच्छा सोचा जाय सपनों में भी बुरा न सोचा जाय यही तो रिश्ता कहलाता है ।

पहले लोग गाँव–घर एवं समाज में अपने आस–पास के लोगों से भाई–बन्धु, चाचा–चाची, दादा–दादी का रिश्ता बिना भेद–भाव एवं जाति–पाति का विचार किये बगैर बनाते थे । उनमें कोई स्वार्थ नहीं था केवल सामाजिकता, एक अलग किस्म का लगाव, अपनापन था । ऐसा अनुभव होता था कि हम सभी बहुत दूर–दूर तक एक परिवार ही है । वहाँ जाति–पाति का गंधमात्र नहीं था, छोटे–बड़े, गरीब–अमीर का भेद नहीं था । "बसुधैब कुटुम्बकम्" को चरितार्थ करता था । ये रिश्ते की डोर समाजिक ताना–बाना को जिंदा रखे हुए था ।

अब ये रिश्ते की डोर दिन–ब–दिन दरकता जा रहा है । अपना सगा–सम्बन्धी भी दूर होते जा रहे हैं । स्थापित समाजिक ताना–बाना छिन्न–भिन्न होता जा रहा है । आज का सोच समाज को बिखण्डित कर रहा है ये ऐसा सोच बनता जा रहा है कि समाज क्या एक परिवार के लोगों की भी सोच आपस में नहीं मिल रही है दादा–दादी, नाना–नानी, भाई–भौजाई तक कौन कहे पति–पत्नी का भी रिश्ता कमजोर हो रहा है । यहाँ तक देखने को मिल रहा है कि जिस अग्नि देवता को साक्षी मानकर इनका सात फेरे लगाकर, शादी के बन्धन में बँधते हैं जन्म–जन्मान्तर तक साथ–साथ रहने की कसमें खाते हैं, वे भी समय के कुछ पल बाद तलाक जैसे घिनौने कदम उठाकर इस मजबूत रिश्ते की डोर को तार–तार कर डालते हैं । ऐसा लगता है कभी ये एक दूसरे के साथ थे ही नहीं । यही कारण है कि आज बुर्जुग अकेला जीने को मजबूर हैं । यही एकाकीपन उनकी आत्महत्या का कारण भी बनते देखा गया है ।

बूढ़े माँ–बाप तक आज पुत्र–पुत्री के लिए भी बोझ बन रहे हैं । जिस माँ की गर्भ में नौ माह रहकर इस संसार में आया, कितने वर्षों की परवरिश के बाद अपने पैरों पर खड़ा हो सका । जब माँ–बाप ने उसे फल देने लायक बनाया तो फलदार पुत्र–पुत्री माँ–बाप तक को अकेला छोड़कर सारे रिश्ते की डोर को तोड़ देते हैं ।

क्या हुआ इस संसार एवं समाज के उस रिश्ते की डोर को जो कभी इतना मजबूत था कि हम किसी दूसरे का भी बुरा नहीं सोचते थे तो अपना क्या ? माँ–बाप ही क्यों समाज एवं राष्ट्र दूर–दूर तक सभी अपनों जैसे ही लगते थे । एक देश दूसरे देश का सहयोगी, एक राज्य दूसरे राज्य का समर्थक, एक गाँव दूसरे गाँव का पोषक, एक समाज दूसरे समाज का हमसफर एवं एक परिवार दूसरे परिवार का पालनहार बन जाते थे । कहाँ गये वो पीर और फकीर जो हमें एक रिश्ते की डोर में बंधे रहने का प्रवचन एवं संदेश देते थे । वे बुरा करने वाले को बुरा एवं भला करने वाले को भला होने का संदेश देते थे ।

आज ये कोई नहीं सोच रहा है कि मैं कहाँ हूँ, मैं दूसरे का भला कैसे कर सकता हूँ ? अपने अंदर कोई नहीं झाँक रहा है केवल दूसरे का अवगुण ही ढूंढ़ रहा है ।

आखिर कब तक हम इस दरकते रिश्ते के सहारे जी सकते हैं । ये समस्या हमें अपने आपको भरे बाजार में अकेला महसूस करा रहा है, खोया–खोया, बुझा–बुझा रहने को मजबूर कर रहा है । एक दूसरे के पास रहते हुए भी दूर–दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा है । लगता है, पास में भी बैठे सारे अपने बेगाने हो गये हैं । ऐसा सोच ही हमें अपने आप में सिमटा कर 'बसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को खण्डित कर रहा है, जला रहा है, विध्वंस के रास्ते की ओर ढ़केल रहा है ।

अब ऐसा समय आ गया है कि हम फिर से इस दरकते रिश्ते की डोर को मजबूत करें, समाज के उत्थान के लिए यह परमावश्यक है । केवल अपने ही

घर की उन्नति के लिए नहीं अपितु समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए भी इस रिश्ते की डोर को मजबूत एवं सुदृढ़ करना होगा । समाज के हर ताने बाने को बरकरार रखना होगा । इस रिश्ते की डोर को नये सिरे से परिभाषित कर इसे जीवंत करना होगा । सबों को एक दूसरे की उन्नति करने तथा प्रगति की दौड़ में आगे बढ़ने का मौका देना होगा ।

आज तक जितने भी महामानव, महामना हुए सबों ने अपना सुख, ऐश्वर्य त्याग कर दूसरे की उन्नति के लिए अपना बलिदान दिया है । राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ ऐसा कर गये जो 'बसुधैव कुटुम्बकम्' को चरितार्थ कर अपना नाम इतिहास में अमर-अमर कर गये।

यह तभी संभव है जब हम सभी जाति-पाँति, ऊँच-नीच, भाई-भतीजावाद एवं अपने तक सीमित रहने की प्रवृति को त्याग कर इससे ऊपर उठकर सर्वे हितार्थ, सर्वे सुखाय की राह पर चलें । छोटे-बड़े का आदर एवं बड़े छोटे को स्नेह की अविरल धारा प्रवाहित कर सकें । हमें समाजिक रिश्ते की डोर को टूटने से बचाने के लिए प्रेम रूपी धागे एवं नि:स्वार्थ सोच रखने का प्रण लेना होगा । तभी हमारा समाज, राष्ट्र मजबूत एक साफ-सुथरी, चमत्कृत, बन्धु-बान्धवों के रिश्ते की डोर को स्थायी बना सकेगा । जीने की नई सोच एवं उत्साह पैदा कर सकेगा । नया सवेरा ला सकेगा जहाँ सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द मिल सकेगा । कोयल की कूक में अपनों की सुमधुर आवाज की प्रतीति हो सकेगी । पानी के कल-कल लहर में भी जीवन के राग सुनाई देगा, हवा की शीतलता अपनी एहसास करा सकेगी, भौंरे की गुन-गुन भी एक मधुर संगीत सा लगेगा इस जीवन के वीराने पल को सुगन्धित रंग-विरंगे फूलों की क्यारियों से सजा सकेंगे ।

सबों को अपने में समाहित कर हम सभी एक नये युग में नये रिश्ते की डोर से 'बसुधैव कुटुम्बकम्' को चरितार्थ कर सकेंगे, सुगम, सरल, मनोहारी एवं मधुमय रिश्ते बना सकेंगे ।

●

कविता

माता-पिता

- प्रीति सहाय, वर्ग-8
नोट्रेडेम एकेडमी,
सुपुत्री-**श्री बालमुकुन्द सहाय,**
एसएसई/डब्ल्यू.आर.एस-II

माँ-बाप खुशनसीबों को ही मिलते हैं
बिन माँ-बाप के अनाथ ही कष्ट और दर्द झेलते हैं ।
यह बात तो हम सभी जानते हैं,
कुदरत की करिश्मा को हम सभी पहचानते हैं ।
जो आया था वो जाएगा, और
जो आएगा वो भी जाएगा ।।
वो माँ ही होती है दोस्तो
जो हमारे घाव पर मलहम लगाती है
दूध में केसर डालकर रोज रात को नींद खराब
कर पिलाती है । और,
वो पिता ही होते हैं दोस्तो
जो अपनी छाप छोड़कर हम सबको लाते हैं
थोड़ा-सा डाँटकर हम सब को अपने पैरों पर
खड़ा कर डालते हैं ।।
जिंदगी में तुम माँ-बाप के एहसानों को
कभी नहीं चुका पायोगे ।
वो आँसूओं का दिन होगा जब तुम धोखा
देकर चले जाओगे ।
ऐ ! मेरे दोस्तो, बस इतना ज्यादा करना उनके लिए ।
सुख देने के लिए बस थोड़ा ज्यादा पढ़ना ।।
अपने पैरों पर खड़ा होकर
उनका नाम रौशन करना ।।

●

हिन्दी राष्ट्रभाषा है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को,
प्रत्येक भारतवासी को इसे सीखना चाहिए।
-रविशंकर शुक्ल

राजभाषा हिन्दी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण



– बेबी सरोजा
कार्यालय अधीक्षक
स्था–04, कार्मिक शाखा ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रविभूषण ने दिनांक 31/10/2011 के प्रभात खबर में हिंग्लिश के पक्ष में सरकार शीर्षक से एक चौंकाने वाले सरकारी परिपत्र की चर्चा की है । भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के सचिव ने 26 सितंबर 2011 को राजभाषा हिंदी से संबंधित एक परिपत्र सरकार के सभी मंत्रालय एवं विभागों को जारी किया है जिस पर हिंदी–भाषियों, कवियों–लेखकों, पत्रकारों, संपादकों, छात्रों–अध्यापकों – सबको ध्यान देना चाहिए । यह परिपत्र हिंग्लिश के पक्ष में है । परिपत्र के आरंभ में 28 जुलाई 2011 को अयोजित केन्द्रीय हिन्दी समिति की 30वीं बैठक का जिक्र है, जिसकी अध्यक्षता करते हुए प्रधान मंत्री ने "राजभाषा हिन्दी के सरल स्वरूप को प्रोत्साहित करने पर बल" दिया था । इसी बैठक के क्रम में 8 सितंबर, 2011 को गृह–राज्य मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित अंतर मंत्रालय एवं अंतर विभागीय समन्वय और समीक्षा बैठक में अनेक अधिकारियों ने हिन्दी भाषा के सरल रूप को व्यवहार में लाने की बात कही । पाँच दिन बाद हिंदी दिवस था । हिंदी दिवस (14 सितंबर) के अवसर पर गृह–मंत्री ने राष्ट्र के नाम दिये अपने संदेश में यह कहा–'सहज सरल और बोल–चाल की हिन्दी ही समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों में लोकप्रिय होगी और स्थायी–रूप से अधिक विशाल क्षेत्र में प्रयोग में लायी जायेगी । 19 जुलाई 2010 के निर्देश में यह कहा गया है कि अंगरेजी या दूसरी भाषाओं के आम इस्तेमाल में आने वाले शब्दों के कठिन हिन्दी शब्द बनाने की बजाय उन्हीं शब्दों को देवनागरी लिपि में लिख देना चाहिए । संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार के समय का यह निर्देश है, जिसके अनुसार अँगरेजी शब्द देवनागरी लिपि में लिखे जायें । 17 मार्च, 1976 का निर्देश उससे भिन्न था । उसमें कहा गया था कि "यदि हिन्दी में लिखा तकनीकी शब्द कठिन लगे तो कोष्ठक में अंगरेजी पर्याय लिख देना चाहिए । "उपर्युक्त परिचय में हिन्दी पत्रिकाओं" को आधार बनाया गया है । इसके अनुसार हिन्दी पत्रिकाओं में जो हिंदी का नया या सरल रूप दिखाई देता है कुछ ऐसा ही रूप सरकारी कमाकाज में अपनाये जाने पर इसका–व्यापक प्रसार हो जायेगा । हिन्दी के कुछ दैनिक समाचार पत्र हिंग्लिस का प्रयोग डंके की चोट पर कर रहे हैं । अब सरकार उनका अनुसरण कर रही है । यह केवल भाषा पर हमला नहीं एक नयी हिंदी गढ़ने का, एक नया समाज गढ़ने से संबंध रखता है । यह बाजार के लिए है, उसके हित में है । परिपत्र से पारिभाषित शब्दावली का महत्व घट जाता है । परिपत्र में "हिन्दी भाषा की आधुनिक शैली के जो छह उदाहरण दिये गये हैं । उनमें प्रत्येक वाक्य में अंगरेजी के कई शब्द हैं । पहले उदाहरण में पोजेक्ट–अवेयरनेस, कैंपस और एरिया शब्द है । क्या इनके स्थान पर क्रमश: परियोजना जानकारी, परिसर और क्षेत्र का प्रयोग गलत होगा ?

कहना न होगा कि हिन्दी के बोधगम्य शब्दों के रहते हुए, जान बूझकर अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग, एक घातक प्रवृत्ति है । इससे हिन्दी के शब्द संग्रह में कमी आयेगी । हिन्दी के जिन मनीषियों ने खड़ी बोली को संवारा और परिष्कृत किया, उनके प्रति यह अन्याय है । यह हिन्दी के उन तपस्वियों यथा राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन, सेठ गोविन्द दास, बाल कृष्ण शर्मा नवीन आदि का अपमान है, जिन्होंने हिन्दी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिलाया । यह उन महानुभावों का मखौल उड़ाना है जिन्होंने अपने अधिक परिश्रम से हिन्दी के परिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया । इसमें कोई

संदेह नहीं कि पारिभाषिक शब्दावली के बढ़ते भंडार से भारतीय भाषायें एक दूसरे के निकट आयी हैं । - हिंग्लिस से भारतीय भाषायें एक दूसरे के निकट नहीं आयेंगी । जाने-माने हिन्दी के लेखक और आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने 'वागर्थ' पत्रिका के अक्टूबर 1995 अंक में लिखा था - "केवल टी.वी. (दूरदर्शन) पर ही नहीं, हमारे घरों में भी हिन्दी-अंग्रेजी के धालमेल से एक खिचड़ी भाषा बोली जा रही है, जिसे हिंग्लिस या हिंग्रेजी कहा जा रहा है । 'रेल राजभाषा' (संयुक्तांतक) में अपने निबन्ध "विश्वभाषा के रूप में हिंदी" नये प्रतिमान में लिखा - "आज न तो हम अंग्रेजी बोल पाते हैं और न ही हिन्दी बोल पाते हैं । हम आज हिंग्रेजी बोल रहे हैं । हमारी कविताओं में आधे शब्द हिन्दी के और आधे शब्द अँग्रेजी के होते हैं । हम दरअसल मिलावट और प्रदूषण के शिकार हो रहे हैं । राजभाषा हिन्दी की एक समस्या 'अनुवाद' को लेकर है । उपर्युक्त अंक में ही दो बड़े विद्वानों के उद्‌गार उद्‌घृत किये जा रहे हैं । तत्कालीन निदेशक, राजभाषा, श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने 'अपनी बात' शीर्षक लेख के अंतर्गत कहा है - "आज अँग्रेजी का वर्चस्व इतना बढ़ गया है कि हिंदी को मात्र अनुवाद की वैशाखियों पर चलाने का प्रयास किया जा रहा है । क्या संविधान निर्माताओं की यही मंशा थी ? 10 जुलाई, 1999 को केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने कहा कि सरकारी दफ्तरों में जब तक अंग्रेजी अनुवाद की परंपरा समाप्त नहीं होगी, तब तक राजभाषा हिन्दी की वास्तविक प्रगति संभव नहीं हैं । श्री मलहोत्रा ने कहा कि अनुवाद में भाषा की आत्मा लुप्त हो जाती हैं क्योंकि अनुवाद तकनीकी होता है । इस संबंध में निदेशक, राजभाषा श्री विजय कुमार मल्होत्रा जी ने 'अपनी बात' में कई महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है । उन्होंने कहा कि अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड की ओर से एक विशेष राजभाषा कार्य-योजना तैयार की गयी है । सभी रेलकर्मियों से अपील की जाती है कि वे इसे कार्यान्वित करने के लिए भरसक चेष्टा करेंगे । इस कार्ययोजना में यह अपेक्षा की गयी है कि हिन्दी जानने वाले सभी अधिकारी और कर्मचारी अनुवाद की वैशाखियों को छोड़कर अपना अधिक-से-अधिक काम हिंदी में ही करने का प्रयास करेंगे । स्वाधीनता के पूर्व संविधान-निर्माण के दौरान सारा देश हिंदी के राजभाषा बनाने के पक्ष में था । मल्होत्रा जी कहते हैं - "यह कैसी विडंबना है कि आज से 50 वर्ष पूर्व संविधान - सभा की बैठक में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव प्रसिद्ध तमिल नेता श्री गोपाल स्वामी आयंगर द्वारा रखा गया था । आज की पीढ़ी को संभवत: इस बात पर विश्वास नहीं आएगा कि आज से 50 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय स्तर के सभी नेतागण इस बात पर एकमत थे कि हिंदी को स्वतंत्र भारत की राजभाषा बनाया जाए । वर्त्तमान में जो परिस्थितियाँ हैं, उनके परिप्रेक्ष्य में हिन्दी क्षेत्र के हिन्दी भाषियों का दायित्व बढ़ गया है । वे शेष क्षेत्रों के भाषा-भाषियों से बिना मनमुटाव के राजभाषा की उत्तरोत्तर विकास-यात्रा को आगे बढ़ाने का संकल्प लेंगे । फिर कोई कारण नहीं कि हिन्दी राजभाषा के रूप में, अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सके । हमें गौरव है कि भारतीय रेलों के प्राय: सभी विभाग राजभाषा के उन्नयन में दत्तचित हैं । भारतीय रेलों में कार्यरत समस्त अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण, चाहे उनकी मातृभाषा हिन्दी हो अथवा वे गैर-हिन्दी भाषी हों, सच्चे हृदय से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं । हमें विश्वास है एक दिन ऐसा आएगा जब हिन्दी अपने गौरव को प्राप्त करेगी ।

चरैवेति चरैवेति चरन्वै मधु विन्दति !

●

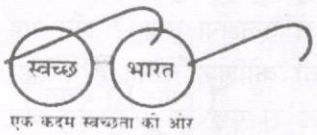
हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विसारत है ।

-माखनलाल चतुर्वेदी

ताले की आत्मकथा

हास्य-व्यंग्य

– रवि कुमार
पद - टेक-II, टि.सं.-1437
शॉप-डब्लू.आर.एस.-I



नमस्कार दोस्तो !

हालांकि लिखने की कला तो मुझमें पहले से ही कूट-कूट कर भरी है । परन्तु वर्त्तमान में नौकरी में आने के बाद अपने कर्त्तव्य को निभाते-निभाते यह कला कहीं धूमिल होकर छिपती जा रही है । पर-आज मेरी नजर जैसे ही गेट नं. 01 पर लटके, उस निर्जीव बेजान और सुस्त पड़े हुए, बूढ़ें से दिखने वाले बड़े से ताले पर पड़ी तो महसूस हुआ मानो वह चीख-चीख कर मेरी अंतर्रात्मा को झकझोर रहा था और मेरी सोई हुई कला को फिर से जगाने की दुहाई दे रहा था । शायद वह मुझमें छिपी कला पहचान गया था, कि मैं लिखने के साथ साथ निर्जीव चीजों से बात भी कर सकता हूँ । इस आस के साथ वह अपनी व्यथा मन ही मन मेरी अंतर्रात्मा में उतार रहा था, ताकि मैं उसकी व्यथा कागज पर उतार सकूँ ।

तो आईए, दोस्तो ! जातने हैं ताला ने अपने बारे में मुझे क्या-क्या बताया ?

राम-राम, 'मैं हूँ ताला' गेट नं.-01 का ताला, लेकिन क्यों कोई पूछता ही नहीं ? ना छुट्टी ना पर्व त्यौहार, बस कर्त्तव्य निभाना, यही मेरा काम ।

जिम्मेवारी पर मत जाओ साहब, पूरे कारखाने की सुरक्षा मेरे ही ऊपर है, परन्तु मेरी दशा आज 'उस सुंदर महल के नींब की ईंट' की तरह हो गई है, जिसे कोई नहीं पूछता सभी कंगूरे के ईंट को ही सलामी ठोकते हैं।

साहब ! ओ, आर.पी.एफ. साहब, देखो ! कितनी निश्चितंता से कुर्सी पर बैठकर भ्रमित हो रहे हैं, कि पूरे कारखाने की सुरक्षा उसी के भरोसे है, परन्तु वह भी जानता है, कि इस निश्चितंता का अहसास मेरी वजह से ही है । सुना है, कारखाना में और कई गेट है, उनकी सुरक्षा भी मेरे ही भाई-भतीजे कर रहे हैं परन्तु आज तक मुझे अपने भाई-भतीजों से मिलने का मौका नहीं मिला । लगता है बूढ़ा हो गया हूँ "साहब" । अंदर के सारे कल-पूर्जे ढीले से पड़ गए हैं, लेकिन जब बात कर्त्तव्य की हो तो ऐसी खुलता और बंद होता हूँ मानो मक्खन की परत पर तेज चाकू फिर रहा हो ।

मैं सबको जानता हूँ साहब, पहचानता भी हूँ, कैसे आते हैं, कैसे जाते हैं ? कभी मुस्कराते हुए चेहरे, कभी दुख भरे चेहरे, कभी थका-हारा सा शरीर कभी नए चेहरे कभी पुराने चेहरे । मैं सभी को आवाज देता हूँ, ओ शर्मा जी, ओ वर्मा जी, क्या बड़ा बाबू ? बड़े दिनों के बाद, कैसे हो ? रिटायरमेंट के बाद और क्या चल रहा है ? क्या मोटू आज पैदल ही, क्या बात है ? बी.पी. और शूगर लेवल ठीक तो है ना, ऐ ! पेपर वाले चल साईकिल थोड़ा साईड में लगा । लेकिन जालिम दुनिया मेरे इन प्रश्नों को अनदेखा कर आगे बढ़ जाता है । जबाब बेशक ना दे परन्तु मुस्कुरा कर एक बार सर तो हिला ही सकतें हैं । रोज-रोज ऐसे हाल-चाल आज के जमाने में कौन पूछता है, "साहब" । मैं ही पागल हूँ कि लोगों द्वारा अनदेखा करने के बावजूद अपनी आदत से बाज नहीं आता । सचमुच मैं पागल ही हूँ, अब तो यह नया नवेला सी.सी.टी.वी. कैमरा और बैरियर भी हँसते हैं, मुझपर । पहले से ये दो वट वृक्ष कम थे क्या ? बात अलग है कि ऊपर लगी घड़ी, बगल में बना नया छोटा गेट अंदर बना ए.टी.एम. भी मुझ पर हँसते हैं । परन्तु इनसे इतना बुरा नहीं लगता क्योंकि इनसे आँख मिचौली दिन में दो-चार बार ही होती है। कभी-कभी मौका देखकर मैं भी इन तीनों से चुटकी ले लेता हूँ ।

साहब, ऊपर वाली घड़ी तो आजकल बीमार चल रही है । बस इसी बिमारी का मुद्दा उठाकर कभी-कभी मैं भी उसकी खिंचाई कर लेता हूँ । ए.टी.एम. बाबू से मैं मिलता तो नहीं बस आवाज सुनता हूँ । सुना है, आजकल नोटबंदी के कारण इतने व्यस्त हो गए हैं कि खिचें-खिचें से रहते हैं, तो उलझे हुए से उलझना क्या ? और यह नया पिद्दा-सा मेरे बगल में बना यह गेट, "आजका बनिया कल का सेठ" बनने की कोशिश करता है । यही कर्मचारियों को समय से पूर्व चुपके से भगाता है, विश्वास ना हो तो सी.सी.टी.वी. भाई से पूछ लो । मैं बार-बार समझाता हूँ । उम्र में तुम्हारे दादा के समान हूँ, कुछ तो लिहाज कर, अभी तुमने दुनिया देखी ही कहाँ है ?

दादा शब्द बूढ़े होने की ओर इशारा करती है, सचमुच बूढ़ा ही हो गया हूँ, परन्तु अपने कर्त्तव्य, अपनी कार्यशैली और अपनी याद्दाश्त् से, मैं कतई बूढ़ा नहीं हूँ । क्या मैं अपना कर्त्तव्य ठीक से नही निभाता 'साहब' ? जो आप लोगों ने मेरी मदद के लिए ये तीन महारथी सी.सी.टी.वी. भाई, बैरियर भाई और यह छोटा गेट लगवा दिया है । तीनों मुझे दाँत निपोर कर यह अहसास दिलाते हैं कि शायद मैं अपना कर्त्तव्य ठीक से निभा पाने में असमर्थ हो रहा हूँ, यह सब देखकर सचमुच मेरी अंतर्रात्मा को बहुत ठेस पहुँचती है 'साहब' ।

क्या मैं लोगों पर नजर नहीं रखता ? क्या मैं लोगों को नहीं पहचानता ? पहचानता हूँ 'साहब' अच्छी तरह से पहचानता हूँ । एक बार पूछो तो 'साहब' । क्या मुख्य कारखाना प्रबंधक की गाड़ी, तमाम सारे उप. मुख्य यांत्रिक अभियंताओं की गाड़ी, डब्लू.पी.ओ. की गाड़ी, सभी अधिकारियों की गाड़ी, मैं दूर से देखकर ही पहचान लेता हूँ, और तो और मैं वह समय भी बता सकता हूँ कि कब कौन अधिकारी आते हैं, और कितने बजे जाते हैं । मैं तो इनके आने पर सलामी भी ठोकता हूँ 'साहब', अभिवादन करता हूँ । मगर अफसोस ये बड़े अधिकारी भी मेरी ओर नहीं देखते, शायद गाड़ी में शीशे लगे रहने के कारण मैं छिप जाता हूँ, दिखाई नहीं देता । अधिकारी हैं 'साहब' बस एक बार मुस्कुरा कर मेरा अभिवादन स्वीकार कर लें तो शायद इस बूढ़े की जिंदगी सफल हो जाए ।

मेरी याद्दाश्त् तो ऐसी तेज-तर्रार है कि यूनियन वालों के भाषण मैं दो के पहाड़े की तरह भरभरा कर एक साँस में बोल दूँ । गेट पर घटने वाली हरेक घटना मेरे जेहन में इस प्रकार छपी है कि पूरा इतिहास की पुस्तक लिख सकता हूँ । हर वर्ष जनवरी के बाद मैं आस लिए मन-ही-मन पुलकित होता हूँ कि शायद इस वर्ष, इस बड़े से गेट की भांति मुझे भी सुनहरे रंग में रंगा जाएगा, जब सुनहरे रंग की कुछ छीटें मुझपर पड़ती है तो मेरी सुनहरे होने की चाहत और दूगुनी हो जाती है, लेनिक 'धत् तरे के' दूसरे ही पल हर साल की भांति कोई-ना-कोई आकर इन रंगों के छीटों को कपड़े से पोछ देता है । वह नहीं जानता 'साहब' कि वह उस सुनहरे रंगों को नहीं बल्कि मेरे अरमानों को पोछ रहा है । मेरा यह अरमान तो लाजिमि है ना 'साहब' इस महीने कारखाने के सभी गेट, दीवार, छत, टीन इत्यादि का रंग रोहन होता है तो मैं क्यों नहीं ? कम से कम एक बार तो हक बनता है ना 'साहब' । चलिए जाइए ठीक है, मिलते हैं रोज की तरह, सुना है, आजकल बहुत कड़ाई कर दिया है शॉप में ।

पर जाते-जाते मेरा पैगाम, पढ़ने वाले उन तमाम पाठकों को जरूर बता दें कि अगले दिन से यदि मैं उनका अभिवादन करूँ, हालचाल पूछूँ, तो आवाज बेशक ना दें, पर एक बार मुस्करा कर सर तो हिला ही सकतें हैं, इसी की चाहत में, मैं गेट नं.-01 का ताला, आपके अभिवादन के इंतजार की आस में ।.....

●

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य को सर्वांग सुन्दर बनाना हमारा कर्त्तव्य है ।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आतंकवाद और मीडिया की भूमिका



– उषा देवी
पत्नी श्री मनोहर प्रसाद सिंह
प्रयोगशाला सहायक,
सी.एम.टी. कार्यालय

'मीडिया' किसी भी लोकतंत्र का चौथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्तंभ होता है । इसके भी अपने कुछ मौलिक सिद्धान्त हैं । यह लोकतंत्र की मजबूती का एक बहुत ही शक्तिशाली साधन है । इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय लोकतंत्र को उन्नत और सशक्त बनाने में आजतक इसने कारगर भूमिका निभायी है किन्तु प्रतिस्पर्द्धा, अहंकार और अर्थलोलुपता के कारण इसमें भी एक हदतक विकृति आ चुकी है । अपुष्ट और भ्रामक खबरें छापना या उसे प्रसारित करना, भय, लोभ या स्वार्थ के कारण सच को झूठ और झूठ को सच की तरह प्रचारित करना । अकारण और अनावश्यक खबरों को सनसनीखेज बना देना आज की मीडिया के लिए साधारण बात है । इसका मतलब यह नहीं कि मीडिया पूरी तरह गैरजिम्मेदार हो गयी है । ऐसे कुछ आपत्तिजनक कार्य वह व्यावसायिक प्रतिबद्धता की वजह से करती है । ऐसा करना कहाँ तक उचित है, यह तो बहस का एक अलग मुद्दा है । लेकिन यह सर्वमान्य तथ्य है कि सरकार और जनता की बीच की कड़ी के रूप में इसकी निर्भीकता और ईमानदारी का बहुत अधिक महत्व है । पत्रकारिता के सिद्धान्तों को जानने और समझने वाले लोग यह अवश्य मानेंगे कि अगर लोकतंत्र का यह चौथा स्तंभ अपने आदर्शों पर शत-प्रतिशत कायम रहे तो देश और समाज की सारी बिगड़ी हुई परिस्थितियाँ ठीक हो सकती हैं ।

मीडिया को स्वतंत्र और निस्पक्ष होना चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि भारतीय लोकतंत्र में मीडिया न तो शत-प्रतिशत स्वतंत्र हो सकती है और न ही निस्पक्ष । कुछ लोगों को इस बात पर आपत्ति हो सकती है । इस संदर्भ में मैं एक प्रश्न करना चाहूँगा । प्रश्न यह है कि मीडिया को विधायिका और कार्यपालिका की कार्यशैली, उसमें फैले भ्रष्टाचार, उसके पक्षपातपूर्ण रवैये आदि के सम्बन्ध में तथ्यों को उजागर करने की स्वतंत्रता है ? क्या यही स्वतंत्रता उसे न्यायपालिका के सम्बन्ध में भी प्राप्त है ? मीडिया को अगर ऐसा लगे कि न्यायालय का कोई निर्णय पक्षपातपूर्ण है अथवा भ्रष्ट्राचार निर्णय में बिलम्ब कर रहा है तो क्या इन बिन्दुओं पर खुलकर टिप्पणी करने की स्वतंत्रता उसे प्राप्त है ? अगर नहीं तो क्यों ? अगर हाँ तो व्यवहार में इसका अभाव क्यों है ? क्या मीडिया के ऐसे आचरण से न्यायालय की मानहानि होती है ? क्या मीडिया की ऐसी टिप्पणियों से लोकतंत्र का अहित हो जायगा ? अगर ऐसा करने से न्यायालय अपमानित होता हो तो विधायिका और कार्यपालिका भी तो अपमानित हो सकती है । क्योंकि न्यायपालिका की तरह यह भी सर्वोच्च संवैधानिक संस्था है । क्या लाखों लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसद और अरबों लोगों का प्रतिनिधित्व करनेवाले सांसद न्यायालय से कम गरिमापूर्ण संस्था है कि मीडिया इनके आचरण, व्यवहार, आदि पर खुलकर टिप्पणी कर सकती है लेकिन न्यायालय पर नहीं ? सिर्फ न्यायालय के गेट पर वकीलों, पुलिस कर्मियों और सम्बन्धित वादी-प्रतिवादियों की तस्वीर खींचने और उसकी प्रतिक्रिया प्रकाशित करने के अलावा मीडिया और कुछ नहीं कर सकती । शायद यह माना जाता है कि न्यायमूर्त्ति कानून के अंतिम तौर पर ज्ञाता होते हैं और वे कभी न तो किसी दबाव में, लोभ में कोई अनुचित फैसला दे सकते हैं । इनकी कुर्सी आदर्शों का प्रतीक है । सैद्धान्तिक रूप से ये बातें ठीक हो सकती है । लेकिन वर्तमान परिवेश में यह बहुत कम व्यावहारिक है । जो लोग न्यायपालिका का शत-प्रतिशत आदर्श मानते हैं वही कहते है कि न्यायिक प्रक्रिया की बारीकी को समझना मीडिया के वश में नहीं, इसलिए उसे न्यायपालिका पर किसी तरह की टिप्पणी करने का भी अधिकार नहीं होना चाहिए । इस तथ्य में अगर सच्चाई भी हो तो जानबूझ कर मामले को टालना

और आये दिन निम्न अदालतों के फैसलों का ऊँची अदालत द्वारा गंभीर टिप्पणी के साथ रद्द करना क्या साबित करता है ? सारा देश आज न्यायपालिका की नैतिकता और उसमें फैल रहे भ्रष्टाचार को लेकर चिंतित है । यद्यपि इसका संकेत मीडिया से ही प्राप्त हो रहा है किन्तु न्यायालय के उपर्युक्त दोषों का विश्लेषण कर जनता और सरकार को जागरूक बनाने के मामले में मीडिया गौण हो जाती है ।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अंतिम होता है लेकिन अगर उसका कोई निर्णय जनता के हित में न होकर सिर्फ कानून के हित में होता है तो मीडिया को यह अधिकार होना चाहिए कि वह उस निर्णय की खुली आलोचना करे और इसके विरूद्ध जनता को जागरूक करे ताकि संसद ऐसे नियमों के विरूद्ध संविधान में संशोधन के लिए बाध्य हो जाय । अगर ऐसा नहीं है ता हम नहीं कह सकते कि भारतीय लोकतंत्र की मीडिया पूरी तरह स्वतंत्र है। इससे, यह कि जिन कारणों से विधायिका, कार्यपालिका और अब न्यायपालिका भी लांछित हो रही है उन्हीं कारणों से मीडिया भी पूरी तरह निष्पक्ष नहीं है । आखिर, मानवीय कमजोरियाँ से बरी होना हर किसी के बश की बात नहीं है ।

आतंकवाद के मामले में मीडिया का कार्य सिर्फ घटनेवाली घटना को चटपटा बना कर जनता के सामने परोसना भर रह गया है । इस सम्बन्ध में एक-से-एक सचित्र विवरण प्रस्तुत किये जाते हैं । ऐसा करने के क्रम में अगर तथ्यों की अवहेलना भी हो जाती है तो इसकी वे चिंता नहीं करता है । इस सम्बन्ध में वे सरकारी क्रिया-कलापों, पक्ष-विपक्ष की भावनाओं और नीतियाँ से जनता को अवगत भी कराते हैं लेकिन भारत की जनता आतंकवाद के खिलाफ मीडिया के क्रिया-कलापों का सिर्फ दर्शक या श्रोता ही बनी रही है । इस संबंध में देश के बुद्धिजीवियों की टिप्पणियाँ अवश्य प्रकाशित होती हैं लेकिन आम जनता पर मीडिया के कार्यों का कोई प्रभावशाली असर हो- ऐसा नहीं देखा गया है । आतंकवादियों द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर विस्फोट, पुलिस की हत्या, अपहरण, संसद पर हमला जैसे दुर्दान्त कृत्यों के खिलाफ जनाक्रोश पैदा करने में मीडिया कोई कारगर भूमिका नहीं निभा पा रही है । इसका कारण चाहे जो भी हो इतना तो सच है कि मीडिया की यह कमजोरी केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के उन तमाम मुल्कों में भी हो, जो आतंकवाद की समस्या से जूझ रहे हैं ।

ऐसा लगता है कि अगर मीडिया आतंकवाद के खिलाफ जनाक्रोश पैदा कर पाती तो देश की सरकारें अपनी सुविधा के आलोक में आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं करती बल्कि अब वह जनता के दबाव में आकर उनके खिलाफ कोई कठोर निर्णय ले पाती और तब शायद देश को आतंकवाद से मुक्ति मिल जाती ।

मीडिया का शत्रु पर्दा भी होता है । कुछ दिनों पूर्व अमेरिका के एक टी.वी. चैनल ने प्रसारित किया कि वहाँ कुछ लोगों के द्वारा कुरान को जलाया जा रहा है, वहाँ कुरान का घोर अपमान किया जा रहा है । फिर क्या था ? पूरी दुनियाँ के इस्लाम उद्वेलित हो उठे । भारत के काश्मीर प्रान्त में उग्रवादियों ने आम मुस्लिम जनता को उकसाना शुरू कर दिया । भीड़ उग्र हो उठी । पुलिस के साथ उसका मुठभेड़ हुआ और इस घटना में चौदह लोगों की मृत्यु हो गयी । सरकार ने बातचीत करने और शान्ति बनाये रखने की अपील की । इस पूरी घटना के इर्द-गिर्द चार पर्दा है :-

(i) कुरान के अनादर का प्रचार करनेवाली मीडिआ (ii) लोगों को उकसाने वाले उग्रवादी

(iii) उग्र प्रदर्शन करनेवाले लोग और (iv) सरकार

अब अगर गौर किया जाय तो इसमें सर्वाधिक दोष मीडिया का ही नजर आता है क्योंकि जड़ वही है । यह कितनी गलत बात है कि वह इस प्रकार की संवेदनशील घटना को वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक करती है । घटना चाहे झूठ हो या सही । इसे विश्वस्तर पर प्रसारित करने का क्या मतलब ? क्या इसमें मीडिया की दुर्भावना नहीं ? 'कुरान' का अपमान हो रहा है' क्या यह बताकर क्या वह एक असहिष्णु सम्प्रदाय को उत्तेजित करने का अपराध नहीं कर रहा है ? वस्तुत: ऐसा करना मीडिया के मूल सिद्धान्तों का गला घोंटना है ।

अत: कहा जा सकता है कि उग्रवादियों के विरूद्ध जनाक्रोश पैदा करने में मीडिया की कोई भूमिका अब तक नजर नहीं आती जबकि उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि वह आतंकवादियों को उपद्रव फैलाने का मौका जानबूझ कर देती है ।

वस्तुत: आतंकवाद से लड़ने में मीडिया अगर सतर्कतापूर्वक अपने दायित्व का पालन करें तो इस समस्या से निजात पाने में सरकार को भी सहूलियत होगी । यह सब जानते हैं कि मीडिया की थोड़ी सी चूक किसी भी बड़ी घटना का कारण हो सकता है । अत: विश्व के तमाम मीडिया कर्मियों का कर्त्तव्य बनता है कि अपने देश के हित के लिए वे दूसरे देश को संकट में न डालें । वे सदा निष्पक्ष बने रहें तथा समय और परिस्थिति को अच्छी तरह परखते हुए सत्य को सुन्दर बनाकर प्रस्तुत करें । मानव-कल्याण करते हुए अपने हूनर का इस्तेमाल करें और यशस्वी बनें ।

अन्तत: मैं कहना चाहूँगा कि विशेषकर लोकतांत्रिक मुल्कों में मीडियाकर्मी अगर अपने लिए निर्धारित आदेशों पर चलें तो वह ऐसे उग्रवादियों जो मानवता के शत्रु है को परास्त करने में सरकार और जनता की मदद कर सकते है ।

जीवन की सार्थकता

- अशोक आशीष
तक०-III, समाडि
पूर्व रेलवे, आसनसोल

मैं तलाशूँगा
जीवन की सार्थकता
मेरे वजूद में
उमड़ती हवाओं से
पूछूँगा
अपने होने का उद्देश्य
वैसे तो
इस धराधाम में
आना
मेरे अख्तियार में न था
जाना
मेरे वश में न होगा
किन्तु;
वे राहें
जो जाते हैं
मंजिल की ओर
जिनपर आज भी
अंकित है अमर पदचिन्ह
उन अनगिनत पदचिन्हों पर चलकर
अपने कुछ निशां
छोड़ जाना
मेरे अख्तियार में होगा ।

जिन्दगी

- नूतन कुमारी
स्था. 4/का. शाखा
पूर्व रेलवे, जमालपुर

कभी हँसते हुए छोड़ देती है ये जिन्दगी,
कभी रोते हुए छोड़ देती है ये जिन्दगी ।

न पूर्ण-विराम दु:ख में,
बस जहाँ देखो वहाँ अल्प-विराम छोड़ देती है,
ये जिन्दगी ।।

प्यार की डोर सजाऐ रखो,
क्या लेकर जायेगी ये जिन्दगी ।

इस दुनियाँ से मीठे बोल और
अच्छे व्यवहार से रिश्ते को बनाये रखो,

बस इसी को हम कहते हैं जिन्दगी ।।
न लेकर आया न लेकर जायेगी ये जिन्दगी ।
बस यही है जिन्दगी, हाँ ! यही है जिन्दगी ।

हिन्दी विश्व की महान भाषा है ।
- राहुल सांकृत्यायन

अन्न दोष

लघु-कथा



- गोपाल जी
मुकाधी., डीजल लेजर अनुभाग
भंडार विभाग, जमालपुर।

बात बहुत पुरानी है.....

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था तथा सभी कौरव सेना के योद्धा कर्ण, दुर्योधन, शकुनी आदि वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। महाराज धृतराष्ट्र माता गांधारी एवं माता कुन्ती बनवास की ओर जा चुके थे। महाराज युद्धिषठिर अपने पाँचों भईयों भीम, अर्जुन नकुल एवं सहदेव के सथ राज-पाट चला रहे थे। सभी प्रजा खुश थी।

एक दिन की बात है...भगवान श्रीकृष्ण द्वारका से इन्द्रप्रस्थ के राजा युधिषठिर से मिलने आए। भगवान श्रीकृष्ण का पाँचों भाईयों ने द्रोपद्री सहित बहुत ही आदर-सत्कार किया। भगवान श्री कृष्ण ने युद्धिषठिर से कहा सभी योद्धा तो वीरगति को प्राप्त हो चुके हैं केवल एक ही महायोद्धा कुरूक्षेत्र में जीवित पड़े हैं और वो हैं आपके - 'पितामह भीषम'..., तो क्यों न उनसे प्राण त्यागने के पहले कुछ शिक्षा ले ली जाए। सभी भाईयो ने भगवान कृष्ण की बातों पर अपनी समहती दे दी।

सभी भाई दोप्रदी सहित भीष्म पितामह से मिलने कुरूक्षेत्र रात्रि में गए। वहाँ जाकर सभी ने भगवान श्रीकृष्ण सहित भीष्म पितामह को सादर प्रणाम किया। उसके बाद भगवान श्री कृष्ण ने पितामह से पांडवों को कुछ शिक्षा देने का अनुरोध किया। इतना सुनकर दोप्रदी जोर से खिलखिला कर हँस पड़ी और कहा - 'पितामह और शिक्षा'। भीष्म पितामह दोप्रदी की हँसी का अर्थ समझ गए और बोले बेटी तुम क्यों हँसी यह तो मैं बाद में बताऊगाँ पहले एक कहानी सुन लो। कहानी ये है :-

एक राजा थे। उनके गुरु महराज राज दरबार में आए हुए थे। राजा के गुरु महाराज को आदर सत्कार के साथ स्वागत किया जा रहा था। राजा ने अपने गुरु महाराज का शयन कक्ष अपने कक्ष के ठीक सामने रखा।

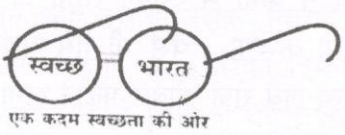
एक दिन की बात है रानी पास ही में तालाब में स्नान करने गई हुई थी, वह अपना सारा वस्त्र खोलकर स्नान कर रही थी, स्नान करते समय गुरु महाराज रानी को देख रहे थे। स्नान करने के बाद रानी अपने श्रृंगार कक्ष के चली गई, लेकिन वह अपना नौ लाख का हार उसी जगह पर छोड़ कर चली गई। इतने में गुरु महराज ने उस हार को लेकर अपने कमर मे रख लिया। जब दासी हार लेने आई तो वहाँ हार नहीं मिला उसने जाकर रानी को यह बात बता दिया कि नौ लाख का हार वहाँ नहीं है। रानी ने यह सूचना राजा को दिया कि उनका नौ लाख का हार चोरी हो चुका है। राजा ने सेनापती को बुलाया और हार खोजने को कहा। लेकिन हार मिलता कहाँ से वह हार तो गुरु महराज के पास है। जिन पर किसी का शक नहीं जा रहा है। अन्त में राजा ने घोषणा कर दिया की पाँच बजे शाम तक अगर रानी का हार नहीं मिला तो श्रृंगार कक्ष की दासियों का कत्ल कर दिया जाएगा।

शाम के पाँच बज चुके थे पर हार नहीं मिला, गुरूमहराज यह सब देख रहे थे। अन्त में सभी दासी को कतार बद्ध खड़ा कर दिया गया और जल्लाद को उन्हें काटने का आदेश दिया। परन्तु जैसे ही जल्लाद ने एक दासी को काटना शुरू किया वैसे ही गुरु महाराज ने उसका हाथ पकड़ लिया और नौ लाख का हार देकर सभी दासियों को छोड़ देने के लिए कहा। यह देख सभी अर्चभित हो गए। गुरु महाराज ने राजा को अपने कक्ष में बुलाया और राजा को यह जाँच कर बताने के लिए कहा गया कि आज मैंने जो अन्न खाया है वह अन्न कहाँ का है .....सही पता लगा कर बताओ।

राजा ने भंडार कक्ष के सिपाही को बुला कर अन्न की जाँच करने की आज्ञा दी। पता चला कि वह अन्न एक निर्दोष विधवा बुढ्ढी का अन्न था जो राजा के सिपाही ने जबरदस्ती लगान वसूल कर लाए थे।

पितामह ने फिर कहा कि बेटी ! देखो एक दिन पाप का अन्न खाने पर गुरु महाराज का मन ऐसा बदल गया कि उन्होंने नौ लाख का हार चोरी कर लिया। मैं तो पापी दुर्योधन का अन्न जिन्दगी भर खाता रहा तो मेरा मन कैसा होता ? द्रोपदी इसलिए हँसी कि जब सभा में इसे नंगा किया जा रहा था परन्तु इस अर्धम पर भी मैंने कुछ नहीं कहा। अब पितामह बोले कि अब रक्त के साथ मेरे शरीर से पापी दुर्योधन का अन्न-जल का अंश बह चुका है और अब मैं निर्माल हो चुका हूँ। अब जो शिक्षा दूँगा उसे सुनो। इसके बाद पितामह ने उन्हें बहुत तरह की शिक्षा दी।

आनन्द



– अवनीन्द्र नारायण लाल (लाल साहेब)
लिपिक - II, गोपनीय कक्ष, जमालपुर

आनन्द गाँव में वाला युवक है । इनके माता पिता पहले ही स्वर्गवासी हो चुके हैं । पिता एक छोटे से किसान थे । बी.ए. की पढ़ाई करने के बाद इनका विवाह इनके माता-पिता ने एक समझदार और पढ़ी-लिखी लड़की से कर दिया । बाद में इन्हें एक पुत्र आशीष भी हुआ । जो अभी सिर्फ दो वर्ष का है । ये अपने पुत्र को अच्छी पढ़ाई के लिये शहर के विद्यालय में पढ़ाना चाहते थे । मगर यह संभव नहीं दिखता था । गाँव में अपनी पुश्तैनी जमीन पर खेती करते थे मगर उससे आर्थिक स्थिति ठीक होने की बजाय बदतर ही होती जा रही थी । उन्हें लग रहा था कि वह अपने बेटे को ठीक से पढ़ा नहीं पायेंगे । उनकी दो बड़ी बहनें थी जो विवाह के पश्चात अपनी जिन्दगी में इतनी व्यस्त हो चुकी थी कि भाई की कुछ भी खबर नहीं लेती थी । इन्हीं दो बहनों की विवाह में जो भी जमीन थी उनमें से ज्यादा की बिक्री हो चुकी थी । मगर शायद उसकी बहनों को इस बात की परवाह नहीं थी भाई की गरीबी का कारण वह दोनों बहनें भी कुछ हद तक थीं क्योंकि अच्छे लड़के से विवाह करने के कारण ही जमीन जायदाद की बिक्री हुई थी ।

एक दिन बड़ी बहन इनसे मिलने राखी के दिन आती है । राखी का दिन भाई-बहनों के लिये भावुक होता है इसी भावना में आकर उसने भाई का हाल देखकर कहा कि चलिये आप मेरे साथ शहर चलिये वहीं आपको कोई नौकरी मिल जायगी । थोड़ी जमीन में खेती करके आपका भरण-पोषण नहीं हो सकता । भाभी को अभी गाँव में ही रहने दीजिये जब आपको नौकरी मिल जायेगी तब अपने परिवार के साथ रहियेगा । शहर में रहने से आशीष भी अच्छी तरह पढ़ सकेगा । आनन्द को दीदी का यह प्रस्ताव अच्छा लगा और वह बहन के साथ शहर आ गया । मगर उसके जीजा को यह ज्यादा अच्छा नहीं लगा । उसे लगता था कि कहीं आनन्द उसके लिये बोझ न बन जाये । उसके रूख को देखकर आनन्द की बहन कहने लगी, अगर आप आनन्द से जल्दी छूटकारा पाना चाहते हैं तो जल्दी से इसके लिये कोई नौकरी ढूँढियें । बहन और जीजा के बीच कलह को आनन्द समझ रहा था । उसने सोचा कि नाहक मैं यहाँ आकर बोझ बन गया हूँ अब अगर गाँव वापस जाता हूँ तो किसी फसल की खेती भी जमीन में नहीं की जा सकती । खरीफ की फसल का तो समय चला गया । वह सोचने लगा कि अपने बहन के बेटा-बेटी को रोज दो-तीन घंटे पढ़ा दूं तो शायद इनका बोझ कम कर सकूँ । यही सोचकर वह रोज इनको तीन घंटे पढ़ाने के पश्चात वह स्वयं नौकरी ढूँढने के लिये घर से निकलने लगा । इसी बीच उसके बहन के बच्चों का विद्यालय में टेस्ट हुआ तो दोनों बच्चों के बेहद अच्छे अंक आये । अब आनन्द ने दीदी से कहा आप घर पर आने वाले शिक्षक को मना कर दीजिये । यह काम मैं करूँगा । शिक्षक की फीस बचाकर भी मैं आपका बोझ कम करना चाहता हूँ । इसी बीच उसकी भांजी की एक दोस्त शिखा उसके घर आयी और आनन्द को कहने लगी आप मुझे भी मेरे घर पर पढ़ा दीजिये मैं पापा को कहूँगी । आपको अच्छी फीस भी मिल जायेगी । आनन्द इस प्रस्ताव से इंकार कर देता है

क्योंकि उसे अब तक नौकरी नहीं मिली थी । वह तो शहर नौकरी करने आया था । मगर शिखा मानने को तैयार नहीं हुई उसने बार-बार कहा । मगर आनन्द इंकार कर देता है । इसके बाद एक दिन वह अपने पिता सुन्दर लाल को साथ लेकर आती है और आनन्द पर पढ़ाने के लिये दबाव बनाती है । आनन्द अब गंभीरता से सोचता है, वह सोचता है कि अपनी दीदी के बच्चों को पढ़ाकर मैं तो सिर्फ उसके कुछ रूपयों की बचत करता हूँ । मेरे पास पॉकिट खर्च के लिये कुछ भी रूपये नहीं रहते । रोज-रोज घर से निकलने के वक्त दीदी से कुछ रूपयों की मांग करते हुए मुझे बेहद शर्म महसूस होती है । यही सोचकर वह सुन्दर लाल की बेटी शिखा को पढ़ाना स्वीकार कर लेता है । शिखा के साथ वह उसके भाई रवि को भी पढ़ाता है । सुन्दर लाल ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था । वह पढ़ाई का विशेष महत्व नहीं समझता था । उसकी गाँव में जमीन-जायदाद थी । वह स्वयं शहर में नौकरी करता था । और उसकी पत्नी गाँव में खेती-बाड़ी संभालती थी । उसकी एक और छोटी बेटी अनिता थी जो माँ के साथ गाँव में ही रहा करती थी । आनन्द शिखा और रवि को पढ़ाता तो उसे उनमें भाँजी-भाँजे की तस्वीर नजर आती । वह बेहद स्नेह के साथ दोनों को पढ़ाता है । वह अब कुछ सरकारी नौकरियों के आवेदन पत्र को भी आवेदित करने लगा । उसे लगने लगा कि मेरी पढ़ाई से अगर बच्चे संतुष्ट हैं और अच्छे अंक पा रहे हैं तो मुझे कोई अच्छी सरकारी नौकरी भी मिल सकती है । मैं क्यों न अपनी योग्यता इस्तमाल करूँ । वह अब स्वयं भी नौकरी परीक्षा के लिये पढ़ने लगा । कुछ दिन बाद वह अपने सीमित रूपयों से अलग छोटा सा कमरा लेकर रहने लगा ताकि दीदी पर बोझ न बने और अपना अध्ययन भी जारी रखे । दीदी में अब आनन्द के प्रति थोड़ा स्नेह जाग चुका था । उसकी बेटा-बेटी भी आनन्द को छोड़ना नहीं चाहते थे । वह उससे ही पढ़ना चाहते थे । इसलिये आनन्द ने कहा मैं अलग रहूँगा तो भी आकर रोज पढ़ा दिया करूँगा । वैसे भी तुम सब तो मेरे अपने हो । आनन्द जब रोज आकर पढ़ाने लगा तो उसकी दीदी भी उसको फीस देने लगी वह आनन्द की आर्थिक दशा जानती थी । अब आनन्द की पैसे की तंगी कुछ कम हुई और उन पैसों में से ही कुछ रूपये अपनी पत्नी को गाँव भेजने लगा ।

शिखा और रवि को वह बेहद स्नेह करता था । शिखा अब मैट्रिक में बेहद अच्छे अंक से पास कर गई है । सुन्दर लाल उसके अच्छे अंक पाने के बावजूद आनन्द को धन्यवाद भी नहीं बोलता और कहता है, कि अब शिखा गाँव जायेगी और शहर पढ़ने के लिये अनिता आयेगी । उसने कहा आप पढ़ाने आते रहियेगा । कुछ दिन बाद अनिता गाँव से आयी और पढ़ने लगी अब शिखा की जगह अनिता पढ़ने लगी । अनिता के घर से आने के बावजूद शिखा तुरन्त घर नहीं गयी । उसका अगले सप्ताह घर जाने का कार्यक्रम था । इसी बीच एक दिन जब आनन्द सुन्दर लाल के घर पढ़ाने आये तो सिर्फ अनिता पढ़ने बैठी और कुछ पल बाद शिखा आयी और कहने लगी आज रवि की तबियत खराब है क्या आज मैं पढ़ने बैठूँ । आनन्द ने कहा हाँ-हाँ बैठ जाओ वैसे भी आनन्द नहीं चाहता था कि शिखा पढ़ाई छोड़ दे वह जानता था कि शिखा पढ़ने में बेहद अच्छी है वह पढ़कर कुछ अच्छा बन सकती है । मगर सुन्दर लाल इस बात को नहीं समझता था । जब शिखा पढ़ने बैठी तो आनन्द ने कहा देखो जब तुमने मैट्रिक की पढ़ाई कर ही ली और अच्छे अंक भी आए तो आगे की पढ़ाई क्यों नहीं करती ? अपने पापा से कहो कि आगे भी नामांकन करा दें । तुम आगे भी अच्छी तरह पढ़ सकती हो पढ़कर कुछ बनके दिखाओ । कुछ देर बाद सुन्दर लाल अपने ऑफिस से आये तो आनन्द ने उन्हें

समझया तो वह मान गये । मगर सुन्दर लाल बेहद कंजूस किस्म का आदमी था । वह बेटी को ज्यादा पढ़ाने की बजाय उसके विवाह के लिये ही पैसे बचाना चाहता था । उसका दिमाग आनन्द की बातों से कुछ पल के लिये तो बदल जाता था मगर बाद में अपनी पुरानी सोच पर पुनः पहुँच जाता था उसने अपनी बेटी का नामांकन इंटरमीडियट में करवा तो दिया । मगर फिर कहने लगा शिखा गाँव में ही रहेगी। फिर आनन्द ने समझाया कि अगर शिखा आगे की पढ़ाई करेगी तो लड़का भी अच्छा मिलेगा । वैसे शिखा पढ़ने में बेहद तेज है अगर नौकरी भी करना चाहेगी तो अवश्य कर सकती है । उनके अच्छी तरह समझाने से सुन्दर लाल मान गया । अब रवि और अनिता के साथ-साथ शिखा रोज पढ़ने के लिये बैठने लगी । तीनों को पढ़ाने में अब आनन्द का ज्यादा समय लगने लगा । वह चाहता था कि शिखा पढ़ लिखकर कुछ बन जाये । रवि को भी वह कुछ बनने के सपने दिखाया करता था । शिखा को वह बेहद स्नेह के साथ पढ़ाता और भांजी की तहर मानता था क्योंकि वह भांजी की ही दोस्त थी । मगर शिखा के मन में आनन्द के प्रति ज्यादा सम्मान नहीं था वह तो सिर्फ आनन्द से पढ़ना चाहती थी । वह करीब दो वर्षो तक तीनों को पढ़ाया और अपनी नौकरी के लिये अध्ययन को जारी रखा । शिखा जब इन्टरमीडिएट की परीक्षा दे दी तो ठीक एक दिन बाद सुन्दर लाल कहता है कि शिखा की शादी तय हो गयी है अगले सप्ताह ही विवाह है यह कहते हुए वह शादी में आने का निमंत्रण भी दे देते हैं । विवाह गाँव से होना तय था । विवाह का नाम सुनते ही उन्हें बेहद ठेस लगा वह चाहते थे कि शिखा पढ़ लिखकर कुछ बन जाये मगर उनके सपने को आघात लगा वे सोचने लगे कितनी बेवकूफी लोग करते हैं महज 18वीं साल पूरे ही हुए कि शादी तय कर दी । अगर लड़की के लिये शादी ही एक रस्म है तो लोग उसे पढ़ाते ही क्यों है ? क्यों बीच में ही पढ़ाई छुड़बा देते हैं । मगर अब आनन्द की सोच के अनुसार कुछ भी संभव नहीं था । विवाह का निमंत्रण पत्र भी बंट चुका था । वह सोचने लगा एक मैं हूँ जो इस उम्र में भी पढ़ रहा हूँ पता नहीं लोगों को हो क्या गया है ? अगले दिन जब आनन्द पढ़ाने गये तो सुन्दर लाल ने कहा हम लोग गाँव जा रहे हैं दस दिन बाद आयेगें ।

विवाह गाँव से हो रहा था । विवाह सुन्दर लाल के परिवार के लिये एक खुशखबरी थी मगर आनन्द के लिये यह दुख की बात थी । फिर वह सोचने लगा अपनी भाँजी के साथ-साथ शिखा को भी मैं भाँजी समझता था दोनों हम उम्र भी थी । अगर मेरी भाँजी (शिल्पा) की शादी होती तो मुझे बहुत कुछ देना पड़ता मगर आजकल तो मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं । चाहे सुन्दर लाल ने शिखा का विवाह तय करके गलती की मगर मुझे तो शिखा के विवाह में कुछ देना चाहिये । उसके लिये अच्छी साड़ी, लहठी (चुड़ियाँ) खरीदने बाजार गये जो साड़ी उन्हें पसन्द आया वह महंगी थी मगर उन्होंने खरीदी, पिछले महीने सुन्दर लाल द्वारा दिये गये सारे फीस शिखा के कपड़े में ही खर्च हो गये । फिर उन्होंने अलग से लहठी खरीदी और सुन्दर लाल के गाँव उसके भाई के द्वारा जो उसी शहर में रहता था, भिजवा दिये ।

दस दिन बाद सुन्दर लाल अपनी बेटी अनिता और रवि के साथ गाँव से आये । आनन्द वहाँ पुनः पढ़ाने गया । सभी ने विवाह के बार में बातचीत की फिर अगले दिन जब वह पढ़ाने गये तो सुन्दर लाल ने कहा अभी-अभी गाँव से खबर आयी है कि शिखा की माँ की तबियत खराब है । हम लोगों को जाना पड़ेगा । और वे सब पुन गाँव चले गये । जब गाँव से आये तो आनन्द पुनः पढ़ाने गये । इनके पास तो पैसे

थे नहीं । इसलिये ये सोचने लगे सुन्दर लाल मुझे पढ़ाने के फीस देंगे तो कुछ जरूरतें पूरी हो जायेगी । मगर सुन्दर लाल ने फीस नहीं दी और एक दिन आकर शर्माते हुए आनन्द को कहने लगे - सर पिछले महीने आपने पढ़ाये ही नहीं इसलिये पढ़ाने की फीस. ..... जैसे ही सुन्दर लाल ने कहा आनन्द समझ गये उन्होंने कहा ठीक है आप मुझे फीस मत दीजियेगा । मगर जरा आप यह बतायें कि अगर आपके बच्चों ने मुझसे नहीं पढ़ा तो क्या मैं दोषी हूँ । आप स्वयं नौकरी करते हैं जब ऑफिस में कर्मचारी उपस्थित हों मगर काम न हो तो क्या सरकार आपको वेतन देती है कि नहीं ? वैसे भी आपके बच्चों ने लगातार मुझसे पढ़ाई नहीं कि पर कुछ-कुछ दिनों के अन्तराल पर मुझसे पढ़ा तो अवश्य ही है । आपके बच्चे नहीं थे, मैं तो यहीं था फिर नहीं पढ़ने के पीछे कौन दोषी है ? फिर जरा आप यह बतायें कि जब आप मुझे नहीं पढ़ाने के बदले मेरी फीस की कटौती कर रहे हैं तो जब मैंने शिखा को दो वर्ष तक नि:शुल्क ज्यादा समय देकर पढ़ाया तो क्या आपने मुझे ज्यादा फीस दिये ? अपनी भाँजी जैसा स्नेह देकर पढ़ाया उसकी कोई कीमत नहीं ? फिर थोड़ी देर रूक कर आनन्द ने कहा वैसे आपने मुद्दा तो उठाया ही है तो मैं फीस नहीं ही लूँगा मगर मेरी बातों पर विचार अवश्य कीजियेगा उन्होंने मुस्कराते हुए कहा । वे मुस्करा तो अवश्य रहे थे मगर दिल पर बेहद ठेस लगी थी ।

जब आनंद घर आये तो उनके दिमाग में रह रह कर एक बात याद आ रही थी कि दो वर्षों तक शिखा को बिना फीस के पढ़ाया । उसको कुछ बनाने के सपने मैं दीखा रहा था । अपनी भाँजी जैसा स्नेह दिया । मुझे याद है कि जब वह अन्तिम बार घर जा रही थी तो मुझसे पाँव छूकर आशीर्वाद भी नहीं लिया ? शायद मैं जितना उससे स्नेह करता था उतना वह मेरा सम्मान नहीं करती थी । मगर मेरा व्यवहार तो मेरे पास था इसलिये मैंने अपने व्यवहार में कोई कमी नहीं की । फिर उनके दिमाग में बात आयी कि देखा तो पिछले महीने की सारी फीस से भी ज्यादा खर्च मैंने शिखा के कपड़े और चूड़ियाँ देने में कर दिये । मगर सुन्दर लाल को इसकी कोई परवाह नहीं ? कैसे-कैसे लोग होते हैं ? किसी की भावना और स्थिति की कोई परवाह नहीं करते ? कोई कैसे किसी गैर के बच्चों को अपना-सा स्नेह देगा जब गैर इसकी कद्र करना ही नहीं जानते ? आनन्द के मन में यह बात बार-बार आ रही थी कि इस स्थिति के लिये दोषी कौन है ? क्या मैंने इन सबको ज्यादा महत्व और स्नेह देकर गलती की ? अगर मेरी गलती है तो अब मैं दुबारा ऐसी गलती नहीं करूँगा यही सोचते-सोचते वे सो गये ।

करीब तीन दिनों तक आनन्द सुन्दर लाल के यहाँ नहीं गया तो सुन्दर लाल ने सोचा क्या कारण हो सकता है ? उसने सोचा कहीं आनन्द की तबियत तो खराब नहीं हो गयी ? वह सोच ही रहा था कि रवि एक झोला हाथ में लेकर सुन्दर लाल को दिखाते हुए कहता है कि यह झोला (थैला) उन्हीं का है उस दिन धोखे से छूट गया था । सुन्दर लाल कुछ देर के लिये सोचता है फिर रवि से थैला लेकर कहता है लाओ मैं उनसे मिलने जा रहा हूँ अगर कहीं वे बीमार होंगे तो थैला मैं उन्हें दे दूँगा । रास्ते में सुन्दर लाल सोच रहा था कि आजतक कभी ऐसा नहीं हुआ कि आनन्द चार दिनों तक मेरे यहाँ नहीं आये हों । कहीं उन्हें मेरी किसी बात की तकलीफ तो नहीं हो गयी । जब वह आनन्द के घर पर जाता है तो कुछ लोग कहते हैं कि मकान मालिक ने उसे निकाल दिया । वह कुछ महीनों से मकान किराया नहीं दे पा रहा था उसके पास कुछ भी पैसे नहीं थे । बेचारे ने घर के कुछ सामान छोड़कर ही मकान किराया चुकता किया और चला गया । बेचारा जाता क्यूँ नहीं ? मकान मालिक ने उसे निकाल दिया ? फिर वे तुरन्त ही

आनन्द की बहन के घर गए और पूछा आनन्द कहाँ है ? तो उसकी बहन ने जबाव दिया आज से तीन दिन पहले आनंद यहाँ आया था उसके सारे सामान उसके साथ थे । उसको देखते ही उसके जीजा मामला समझ गये उन्होंने उसे बहुत भला-बुरा कहा वह सोचने लगे आनन्द फिर से यहीं रहेगा । इसलिये उन्होंने उसे बहुत डाँटा । वह बार-बार कह रहा था कि बस दो तीन दिन ही मुझे रहने दो मैं अब हमेशा के लिये चला जाऊँगा । मगर ये इसके जीजा रखने के लिये तैयार नहीं थे । उसके जीजा उसे कभी यहाँ नहीं रहने देना चाहते थे वे तो मेरे बच्चे और मैं थी जिस कारण वह पहले भी मेरे यहाँ रह सका । अब बच्चे बाहर पढ़ते हैं तो आनंद को कौन पूछेगा ? मेरा वश तो उनके सामने चलता ही नहीं ? बेचारा आनन्द कितने दिक्कत से पिछले एक साल से रह रहा था । पहले तो मैं भी बच्चों के पढ़ाने के बदले उसे ट्यूशन फीस दे रही थी मगर एक साल से वो पैसे भी उसे नहीं मिल रहे थे । मेरे बहुत कहने पर उसके जीजा ने सामान रखने दिया । सामान रखकर वह कहाँ गया यह किसी को पता नहीं । कुछ सोचकर सुन्दर लाल ने कहा यह थैला लीजिये यह मेरे घर पर आनंद से धोखे से छूट गया था । तब जैसे ही आनन्द की बहन थैला अपने हाथ में लेती है कुछ महकने (बदबू) की गंध आती है वह तुरन्त थैला देखती है थैले में मिठाई के डब्बे थे । वे दोनों मिठाई का डब्बा देख ही रहे थे कि आनन्द का एक मित्र दीदी मिठाई खिलाओ, मिठाई खिलाओ कह कर चिल्लाते हुए आ रहा था सुनकर दीदी ने पूछा किस बात की मिठाई ? तो आनंद का मित्र रमेश ने कहा अरे ! कल ही उसके नौकरी की ज्वाईनिंग का पेपर आया था और कल ही वह चला गया । मैंने पूछा कहाँ जा रहे हो तो उसने सिर्फ यही कहा कि समझ ले एक बहुत बड़ी नौकरी मिली है । शायद भगवान को उस पर दया आ गयी । जा रहा हूँ । शायद कभी ना आऊँ । फिर मैंने कहा अरे मिठाई तो खिलाते जा ? तो कहने लगा पैसे ही नहीं है कैसे खिलाऊँ ? हम दोनों धड़फड़ी में थे उसे गाड़ी पकड़ने में विलम्ब हो रहा था इसलिये उससे ज्यादा बात न हो सकी । दीदी ने कहा अरे मुझे भी इसकी जानकारी नहीं । अन्दर-अन्दर उसे बेहद शर्मीन्दगी महसूस हो रही थी कि अपने सगे-भाई को भी वह बुरे वक्त पर मदद न कर सकी, जब खुशी देनी थी तो हम सबने उसे दुखित कर दिया । शायद उसने मुझे नौकरी मिलने की खुशराबरी इसलिये नहीं सुनाया क्योंकि मैंने उसे अपनापन ही नहीं दिया ।

सुन्दर बाल कुछ देर बाद अपने घर पहुँचा । उसे बेहद अफसोस हो रहा था कि एक सच्चे व्यक्ति की कद्र उसने नहीं की । एक लाचार आदमी की मदद के बदले उसके हक को छीनने की कोशिश की । उसे एहसास हो रहा था कि शिखा के विवाह में कीमती कपड़े कितने कष्ट से दिये होंगे । कितनी खुशियाँ उसने दी । मेरी बेटी की उनके पढ़ाने से ही ज्यादा अंक मिले । ऑफिस में शिखा के परीक्षा परिणाम सुनकर सब तारीफ करते थे मगर मैंने कभी नहीं कहा कि ये सब आनन्द का कमाल है । मैंने अपनी किसी खुशी में उसका मुँह मीठा नहीं कराया । मगर उसने अपनी एक खुशी में मिठाई का डिब्बा लाकर रख दिया । यह मिठाई की थैली आनंद से धोखे से नहीं छूटी थी, बल्कि उन्होंने हम लोग के लिये लाया था । उसकी अपनी खुशियाँ सुनाने से पहले ही मैंने उसे दुखित कर दिया । पता नहीं कितनी बड़ी भूल मुझसे हो गयी ? मैंने अपने स्वार्थ में उसकी कद्र कभी नहीं की, उसकी मजबूरी और भावना समझने की कोशिश ही नहीं की ।

●

हिन्दी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली है ।

-वासुदेव शरण अग्रवाल

'स्वच्छता ही देवत्व'



– कृष्ण कुमार कमलेश
टेक-III, ई.डी.जी. केन्द्र
पूर्व रेलवे, जमालपुर

'स्वच्छता ही देवत्व' अर्थात् जहाँ स्वच्छता होती है वहीं देवता का वास होता है । महात्मा गाँधी के इन्हीं सपनों को साकार करने की दिशा में इस साल जमालपुर कारखाना ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया । स्वच्छ भारत मिशन की चौथी वर्षगांठ के अवसर पर केंद्र सरकार ने 15 सितम्बर, 2018 से लेकर 02 अक्टूबर, 2018 के पखवाड़े के दौरान "स्वच्छता ही सेवा है", का राष्ट्रव्याप्ती स्वच्छता अभियान चला कर देशवासियों को सफाई के प्रति जागरूक करने की मुहिम छेड़ी, जिसमें जमालपुर कारखाने के सभी विभागों ने उत्साहपूर्वक सफाई की तथा सभी कार्यकर्मों में अपनी भागीदारी निभाई ।

"स्वच्छता ही सेवा" 15 सितम्बर, 2018 से 02 अक्टूबर, 2018 (15 दिन) तक पखवाड़े में कुल 12 दिनों के कार्यकलाप जैसे-प्रभात फेरी, स्वच्छता शपथ, स्वच्छ संवाद, स्वच्छ परिसर, स्वच्छ नीर-आहार, चित्रकारी प्रतियोगिता, वृक्षारोपन, नुक्कड़ नाटक, लाइव कॉन्फ्रेंस इत्यादि आयोजित किए गए । इन कार्यकलापों को क्रियान्वित करने में ई.डी.पी. केंद्र ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । प्रशासनिक निर्देशानुसार कम्प्यूटर सेंटर में उप मु. यॉ. इंजी. परि.) श्री पी.एन. मांझी और एस.एस.ई. श्री राजेश कुमार की निगरानी में प्रत्येक कार्यकलापों की फोटो तथा विडियो को जमालपुर कारखाने की वेबसाइट पर श्री विकाश कुमार, श्री प्रभाकर कुमार, श्री राहुल रमन तथा श्री के. कमलेश द्वारा बनाया और अपलोड किया गया, जिसे http://www.er.indianrailways.gov.in >About Us > Workshop > Jamalpur > Gallery वेबसाइट पर देखा जा सकता है तथा विडियो को YouTube पर EDP Centre Channel अथवा EDP Jamalpur को सर्च करके डॉक्यूमेंटरी वीडियो देखा जा सकता है ।।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं, जन्मोत्सव के अवसर पर कारखाना के मुख्य परिसार को लेजर लाइटों से लैस कर बहुत ही आकर्षक तरीके से सजाया गया तथा पोर्टिको के ऊपर गांधीजी एवं उनके स्वच्छता के संदेशों के भव्य पोस्टरों को लगाया गया जिसकी एक झलक इस पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर लगाया गया है ।

इन सभी गतिविधियों का उद्देश्य अधिक-से-अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़कर इसे एक जन आंदोलन बनाना है जिससे 2 अक्टूबर, 20198 में गांधीजी के 150वीं जन्मदिवस पर स्वच्छ भारत का सपना पूरा किया जा सके ।

"मन की सफाई जरूरी है, तन की सफाई जरूरी है ।
घर की सफाई से पहले, गलियां की सफाई जरूरी है ।।"

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है ।

-सुभाषचन्द्र बोस

नारी सम्मान का महत्व

– नन्दलाल सिंह
काधी/प्रभुकाधि
कोलकाता

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारतीय समाज में नारियों की स्थिति को लेकर पिछले कई दशकों से आत्ममंथन चल रहा है । यदि और पीछे जाएं तो देखने को मिलता है कि सती प्रथा के विरूद्ध जागरूकता आरंभ हुई थी । भारतीय बौद्धिक जनमानस द्वारा महिला समाज पर शिक्षा से लेकर उन पर हो रहे अपराधों पर वैज्ञानिक दृष्टिपात करने की आवश्यकता है ।

प्रागैतिहासिक काल में भारत में महिलाओं के शिक्षित होने के कुछ प्रमाण मिलते है एवं भारत के मंदिरों और चित्रों में अधिकांशत: देवी व देवता एक साथ ही दिखाई देते हैं । स्वयंवर-विवाह जिसमें कन्या को वर चुनने की स्वतंत्रता होती थी, का उल्लेख धार्मिक तथा प्रोगैतिहासिक दस्तावेजों में उपलब्ध है ।

कालांतर में राजनैतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक एवं तत्कालीन परिस्थितियों के कारण नारी समाज की स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिल रहा है ।

सती प्रथा का झूठा महिमामंडन कर देवी का रूप देने के अतिरिक्त और भी कई कारण थे उसमें, मेरी समझ से, संपत्ति के अधिकार से विधवा को वंचित रखने का एक अमानवीय और क्रूर तरीका अपनाना गया था । देवी रूप देने की कुचेष्टा को बहुतायत द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था । वैधव्य की अवस्था में दु:खी मन कैसे जलने के लिए तैयार हो जाएगा । यह तर्क का विषय है न कि धार्मिक अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा को निरापद रखने का ।

विधवाओं की समाज में जो अवस्था है वह सर्वविदित है । इस पर सामूहिक रूप से गंभीर एवं विस्तृत चर्चा की आवश्यकता है । इस पर प्रेमचंद की एक पंक्ति याद आती है जो इस तरह है 'वैध व्य की व्यथा को स्वामित्व के बोझ से दबा देना चाहते हैं' । अर्थात स्वामी के दिवंगत होने पर बहु को उसका ससुर घर की चाबी देकर जिम्मेवारी सौंप उसके दु:ख को कम करना चाहता है । जैसे बच्चों को खिलौना देकर फुसलाया जाता है । हाल ही में मथुरा के मंदिरों में नितांत गरीबी और असहाय स्थिति में रह रही विधवाओं के लिए माननीय न्यायालय को आदेश पारित करने की आवश्यकता पड़ी ।

पर्दा प्रथा के बारे में मेरा यह मानना है कि पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था का दुस्परिणाम जिसमें महिला के पहचान को नष्ट करके मात्र पत्नी के रूप में पहचान बनाए रखने का पुरूष दंभ को बरकरार रखने की हारी हुई कुचेष्टा है । संभव है अत्याचारियों और अपराधियों की कुदृष्टि से बचने हेतु इस प्रथा का आरंभ हुआ हो । पुरूष अपनी प्रभाव जो उसे जैविक कारणों से मिलता है वह तुलनात्मक रूप से महिला के शारीरिक गठन एवं आकर्षण से बहुत पीछे है । पुरूष स्वाभाविक रूप से पुरूष को देखकर आकर्षित नहीं होता है लेकिन एक सुगठित शरीर वाली महिला को देखकर आकर्षण संभव है । यह भी कई कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है जो पुरूषों में हीन भावना को पनपने का अवसर प्रदान करती है । शिक्षा के प्रचार प्रसार से महिलाओं में आत्मविश्वास विकसित हुआ है जो निश्चित तौर पर पर्दा प्रथा को समापत करने में अहम भूमिका निभा रहा है । को-एजुकेशन की व्यवस्था का पुरूष-महिला के बीच खाई को भरने में बहुत बड़ा योगदान है । शारीरिक रूप से बलशाली होना, नारी महत्व को समझने में पुरूष समाज को असहज कर देती है जबकि यह एक प्राकृतिक कारण है न कि मानव निर्मित और हथियार व आर्थिक रूप से संपन्नता के युग में शारीरिक बल का महत्व तो बेमानी लगता है । नारी-पुरूष संबंध को स्वस्थ्य बनाने में शिक्षा के महत्व को शीर्ष स्थान प्राप्त है ।

जिस समाज ने नारी को अपने पिता या पति अथवा पुत्र या अन्य रक्त संबंधित रिश्तों के अंतिम संस्कार में जान पर रोक लागई हो उस समाज से नारी अधिकार की क्या आशा की जा सकती है । लेकिन ऐसे समाज में परिवर्तन होना बहुत जरूरी है । महिलाओं को महत्व देते हुए उन्हें समाज के रीति-रिवाजों में भागीदार बनाने में समाज का ही हित है ।

कानून की दृष्टि से भले लड़कियों को सम्पत्ति में अधिकार मिल गया हो, लेकिन अभी भी व्यापक सामाजिक तौर पर इसकी स्वीकृति एवं अनुपालन बहुत हद तक नहीं हो पा रहा है ।

मंदिरों में देवदासी प्रथा आज भी व्याप्त है जिसे समाप्त करने के लिए सामाजिक चेतना व जागरूकता की आवश्यकता है ।

कन्या भ्रूण हत्या एक बहुत बड़ा अपराध है जो अभी भी समाज को ग्रसित किए हुए है । इससे भारत के कई राज्यों में लिंगानुपात बिगड़ गया है जो महिलाओं के महत्व के विपरीत जाता है । विवाह संस्था को इससे धक्का पहुँचेगा जिससे समाज में नारी के प्रति अपराध की वृद्धि स्वाभाविक रूप से पनपेगा इससे एक कुरूप सामाजिक व्यवस्था का ताना-बाना बिडगने का अंदेशा जाग सकता है ।

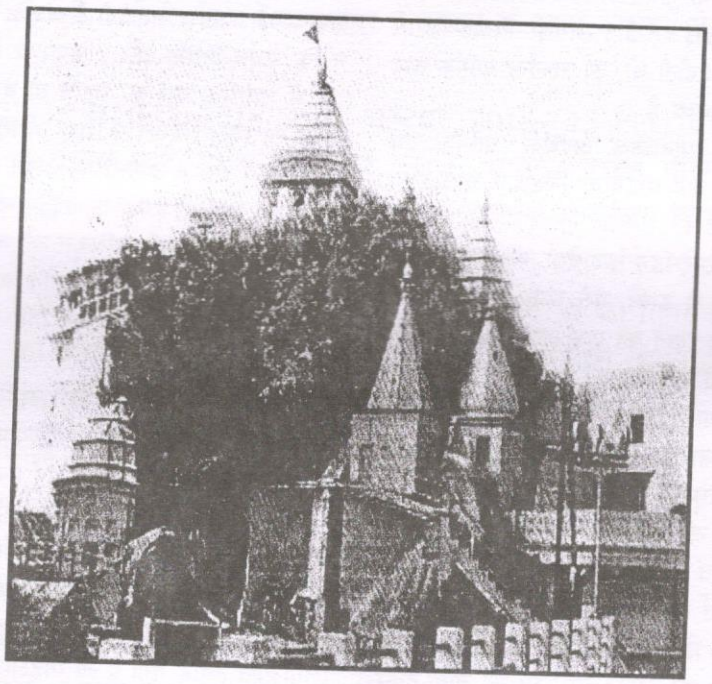
आज महिलाओं का शिक्षा और रोजगार में प्रतिशत भी क्रमश: बढ़ रहा है । इससे दहेज प्रथा जैसी कुंठाग्रस्त रीतियों को कम करने में मदद मिलेगी तथा महिलाओं को अपनी एक पृथक व्यक्तित्व की पहचान बनाने में सफलता मिलेगी । जैसे गार्गी, लोपामुद्रा, रजिया सुल्तान, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, लतामंगेशकर, इंदिरागांधी, इत्यादि ने समाज में अपनी पहचान बनाया है, संभव है नारियाँ और आगे बढ़ सकें ।

अजगैबी नाथ धाम

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

– कौशल किशोर शुक्ल
वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग, जमालपुर

अजगैबी नाथ धाम अंग-क्षेत्र का एक विख्यात शिवधाम है । पुण्यसलिला, त्रैलोक्यतारिणी, जीवनदायिनी, उत्तरवाहिनी गंगा के बीच अवस्थित एक शिवधाम-**"अजगैबीनाथ"** । भागलपुर जिला के सुलतानगंज शहर में यह धाम स्थित है । मालदा मंडल के अन्तर्गत सुलतानगंज स्टेशन है । इस स्टेशन से डेढ़ कि.मी. पश्चिम दिशा में अवस्थित है - यह अजगैबीनाथ । स्टेशन से रिक्शा द्वारा भी यहाँ पहुँचा जा सकता है । इसी स्थान पर गंगा को 'जाह्नवी' की संज्ञा प्राप्त हुई । धर्मपरायण देश भारत वर्ष के कण-कण में ईश्वर का वास है । भारतवासियों के मन में आस्था का स्थाई निवास है । उसी आस्था का एक विश्व-व्यापी पुण्य-क्षेत्र है-अजगैबीनाथ ।



यों तो सुलतानगंज गंगाघाट से काँवर-यात्रा पूरे वर्ष भर होती रहती है । फिर भी, सावन महीने में जितनी भी रेलगाड़ियाँ सुलतानगंज स्टेशन पर रुकती हैं, उन सभी गाड़ियों में भगवा वस्त्रधारी काँवर यात्रियों का बड़ा समूह यहाँ उतरते हैं और 'बोल बम' के नारों से चतुर्दिक वातावरण भक्तिमय हो जाता है । इस समय रेलवे द्वारा रेलगाड़ियों के ठहराव का समय बढ़ा दिया जाता है ताकि किसी तीर्थयात्रियों को उतरने में कोई असुविधा न हो । न सिर्फ रेलमार्ग से बल्कि बस मार्ग से भी अनगिनत वाहनों में बैठकर देश के कोने-कोने से और कुछ संख्या में विदेशी यात्री जोगिया वस्त्र धारण कर भक्त बनकर यहाँ पधारते हैं । उस समय ऐसा लगता है मानो सुलतानगंज बाँहें फैलाकर कह रहा हो – 'पधारो म्हारो देश' । जितनी दूर तक आँखें देख सकती हैं वहाँ तक भगवा-मय लोग दिखाई देते हैं – 'जित देखौं तित लाल' की उक्ति साकार रूप ले लेती है । सावन में छोटे और बड़े व्यापारी अपने व्यापार में रात-दिन लगे रहते हैं । हजारों की संख्या में दुकानें सज-धजकर काँवरियों के स्वागत में पलक-पाँवड़े बिछाए रहते हैं । इत्र-उत्र-सर्वत्र साधु-संत, पीर-फकीर, पंडे और व्यापारी सभी अपनी- अपनी दुनियाँ में मशगूल । जगह-जगह प्रशासन के चुस्त और तत्पर वर्दीधारी सुलतानगंज से देवघर तक मेला में सदैव चौकस अपनी कर्तव्यपरायणता की मशाल थामे खड़े मिल जाते हैं । यात्रियों की सेवा के लिए अनेक सेवादल चौबीसों घंटे तैयार मिलते हैं । काँवर यात्री सुलतानगंज से लगभग 105 कि.मी. की पैदल यात्रा खाली पाँव चलकर पूरा करते हैं और बाबा बैद्यनाथ धाम (देव घर) में शिवलिंग पर सुलतानगंज से लाये गए गंगाजल से अभिषेक करते हैं ।

जह्नु ऋषि, चिरंजीवी परशुराम, बाबा हरनाम भारती आदि अनगिनत ऋषि-मुनियों और साधकों द्वारा पूजित-अजगैबी धाम । गंगाघाट से ही इसकी अद्‌भुत मनोहारी दृश्य बरबस ही अपनी ओर खींचता है । सुलतानगंज आने वाले लगभग सभी काँवरये यात्रा आरंभ करने के पूर्व इस अद्‌भुत धाम की पूजा अवश्य करते हैं । कहा जाता है कि काँवर यात्रा के पूर्व अजगैबीनाथ की पूजा करना अनिवार्य है अन्यथा देवघर में विराजमान 'वैद्यनाथ' उस भक्त की पूजा स्वीकार नहीं करते । बूढ़े-बच्चे-'अवाल-वृद्ध नर-नारी' उत्तरवाहिनी गंगा में गोता लगाते हैं । 'बोल बम', 'बोल-बम' का उच्चारण उनमें अजस्र उर्जा का संचार करती है और वे खड़ी सीढ़ी चढ़कर अजगैबी नाथ के दर्शन कर भाव-विभोर हो जाते हैं, अनवरत गूंजता रहता है एक उद्‌घोष 'बोल बम' । प्रशासन और सेवादल प्रसारण-यंत्रों से काँवरियों को बीच-बीच में दिशा-निर्देश देकर उनकी यात्रा सुगम बनाते हैं ।

कई धर्मों और सम्प्रदाओं का समागम स्थली है - इस अजगैबीनाथ धाम की आश्रय-स्थली-'सुलतानगंज' । यह स्थान शैव, वैष्णव, जैन (श्वेताम्बर एवं दिगम्बर) एवं इस्लाम का समागम स्थल है । महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने यहाँ कई स्थलों पर खुदाई करवाई थी । उनका अनुमान था कि शायद 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' यहीं अवस्थित है । कुछ वर्ष पूर्व सुलतानगंज स्टेशन परिसर के विस्तारीकरण एवं सौंदर्यीकरण के क्रम में खुदाई में बुद्ध की एक प्रतिमा मिली थी । इससे यहाँ बौद्ध-विहार होने का अनुमान लगाया गया । स्टेशन के समीप ही दिगंबर एवं श्वेताम्बर जैन मंदिर एवं आश्रमों से यह प्रमाणित होता है कि यह स्थली जैनियों से भी संबंध रखता है । अजगैबीनाथ मंदिर के ठीक सामने घाट के समीप स्थित मस्जिद का होना इस स्थान को इस्लाम से भी जोड़ता है । इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि अतीत में कई सम्प्रदाओं के बीच या तो सौहार्द्र रहा हो अथवा उनके बीच एक-दूसरे को जानने-परखने के लिए शास्त्रार्थ की उत्कृष्ठ परंपरा रही हो ।

गंगा-अवतरण

भागीरथ प्रयास से मोक्षदायिनी गंगा का अवतरण हुआ । गंगा को प्रणाम कर भगीरथ ने उनसे अपने पीछे-पीछे चलने का अनुरोध किया । शंख बजाते हुए भगीरथ आगे-आगे चल रहे थे और पीछे-पीछे गंगा घहराती हुई चल रही थी । अजगैबीनाथ पहाड़ी के नीचे जह्नु ऋषि पूजा के बर्तन धो रहे थे । बेगवती एवं गर्ववती गंगा के जल में जब बर्तन डूबने लगे तो गंगा अवतरण से अनभिज्ञ ऋषि ने मंत्र पढ़कर तीन बार गंगा जल पी लिया । गंगा सूख गई । गंगा के वेग की ध्वनि शांत हो गई । आश्चर्य से भगीरथ ने पीछे पलटकर देखा अनुगामिनी गंगा विलुप्त हो चुकी थी । विक्षिप्त अवस्था में उन्होंने खिन्न भाव से ऋषि के समीप हाथ जोड़कर ऋषिवर से गंगा के विलुप्त होने का कारण पूछा । गंगा का नाम सुनकर ऋषि स्तंभित हो गए । भगीरथ ने उन्हें अपना संपूर्ण परिचय दिया और गंगा को धराधाम पर उतारने के लिए किए गए कठिन तप और परिश्रम का आख्यान सुना दिया । ऋषि किंकर्तव्यविमूढ़-सा भगीरथ का मुँह देखते रह गए । उन्होंने उसे बैठने का संकेत दिया । ऋषि सोच रहे थे यदि वमन करता हूँ तो गंगा अपवित्र हो जाएंगी और यदि मूत्र द्वारा उसे (गंगा) बाहर निकालता हूँ तो भी गंगा अपवित्र होंगी । उनकी स्थिति 'भई गति साँप छुछुन्दर केरि' जैसी थी ।

भगीरथ का हृदय क्रन्दन कर रहा था । उसकी सारी तपस्या और परिश्रम पर पानी फिरता देखकर उसकी दयनीय दशा ऋषि से देखी नहीं जा रही थी... ऋषिवर ध्यानस्थ हो गए । ध्यान टूटने के बाद उन्होंने अपनी दाहिनी जंघा पर ताली मारी और गंगा की धार वहाँ से फूट पड़ी । गंगा का गर्व चूर हो गया । इतना ही नहीं वह धारा जहाँ जाकर गिरी वह घाट आज भी 'जहाँगिरा' घाट के नाम से विख्यात है और अब भी अपने अस्तित्व में है । इस तरह इस स्थली पर गंगा का पुनर्जन्म हुआ । सुलतानगंज में गंगा का रूप 'बाल रूप' है । भगीरथ की आँखें प्रसन्नता से छलक गईं । प्रफुल्लित होकर उन्होंने ऋषि के चरण छुए । गंगा ऋषि के समक्ष प्रस्तुत हुई और गद्‌गद् कण्ठ से अपने उद्‌गार प्रकट किया - "हे ! ऋषिवर, आपने मुझे पुनः अपनी जंघा से प्रकट किया है और जांघ पर बैठने का अधिकार पुत्री का है । इस नाते मैं आपकी पुत्री हूँ; मेरा प्रणाम

स्वीकार करें । यह पुण्य-स्थली युगों-युगों तक मेरे बाल रूप का साक्षी रहेगा । यहाँ मुझे जह्नु ऋषि की पुत्री नाम से पुकारा जाएगा ।" इस संदर्भ में एक श्लोक इसकी सत्यता को प्रमाणित करता है :-

"सिद्धि साध्ये शतामस्तु प्रसादा तस्य धुर्जटे ।
जाह्नवी फेन लेखेव जन मूर्धनि शशिन: कला ।।"

पुलकित हृदय ऋषिवर के मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे; उनकी खुशी को अनवरत बहते हुए अश्रुधार ही व्यक्त कर रहे थे । गंगा ने उनसे पुन: आग्रह के स्वर में कहा-आपके आँगन में आपकी पुत्री पद्मा का जन्म हुआ है । हे पिताश्री ! जब मैं आपकी पुत्री हुई तो पद्मा मेरी बहन हुई । आपकी दोनों पुत्रियाँ नदी रूप में बहती हुई यहाँ से आगे की यात्रा पूरी कर सके यह आशीर्वाद दें । इसी स्थल से गंगा और पद्मा दोनों नदी रूप में आगे गईं ।

जह्नु ऋषि ने अपनी दोनों पुत्रियों (गंगा और पद्मा) को यथायोग्य वस्तुएं भेंट कर विदा किया । गद्‌गद् भाव से भगीरथ अपनी आगामी यात्रा की ओर अग्रसर हुए । वर्तमान में पद्मा नदी बाँगला देश की पावन नदी के रूप में पूजित है । फरक्का से कुछ मील दूर जाकर गंगा और पद्मा अलग-अलग दिशाओं में विभक्त होकर बह रही हैं ।

काँवर यात्रा का श्रीगणेश

देवघर स्थित वैद्यनाथ (वैद्यों के नाथ) धाम का पूरा नाम - 'रावणेश्वर वैद्यनाथ' है । पौराणिक कथा के अनुसार जब रावण कैलाश पर्वत से शिव प्रदत्त शिवलिंग लेकर लंका जा रहे थे तब विष्णु भगवान की माया से उन्हें लघुशंका के जोर ने विकल कर दिया और उन्होंने (रावण) समीप में खड़े एक चरवाहे (बैजू) को कुछ क्षण के लिए शिवलिंग को हाथ में उठाकर रखने का अनुरोध किया । रावण की लघुशंका रूकने का नाम ही नहीं ले रहा था । आज भी देवघर में एक तालाब है जिसे 'रावणाजोर' कहते हैं । मान्यतानुसार यह तालाब रावण की लघुशंका के परिणाम स्वरूप अस्तित्व में आया है । भगवान शिव ने शिवलिंग देते समय रावण के समक्ष एक शर्त रखी थी कि इसे यदि लंका के पहले कहीं रखोगे तो मैं वहीं स्थापित हो जाऊँगा । इधर शिवलिंग के भार से बैजू की स्थिति दयनीय हो रही थी । उसने शिवलिंग को वहीं जमीन पर रख दिया । कहते हैं, देवी सती का वक्षस्थल उसी स्थान पर गिरा था, इसलिए कहा गया है कि-चिता भूमौ वैद्यनाथं च' । इसी स्थल पर शिवलिंग स्थापित हो गया । कैलाश पर्वत को शिव सहित उठाने का दुस्साहस करने वाले रावण ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर वह शिवलिंग को हिला न सके । कालांतर में उसी स्थल पर विश्वकर्मा जी (जो रावण के ससुर थे) द्वारा भव्य मंदिर का निर्माण हुआ जो आज भी अस्तित्व में है । महापंडित रावण ने कंगूरे पर रखने के लिए कई बहुमूल्य रत्न दिए । उन रत्नों का ऐसा प्रभाव है कि प्रत्येक एक घंटे बाद वहाँ से एक बूंद जल निकलता है और ठीक शिवलिंग पर गिरता है । वैद्यनाथ धाम मंदिर निर्माण के बाद सर्वप्रथम रावण ने सुलतानगंज घाट से देवघर तक पैदल काँवर यात्रा की और रावणेश्वर वैद्यनाथ धाम में उत्तरवाहिनी गंगा जल से अभिषेक किया था ।

काँवर यात्रा की दूसरी कथा श्रीराम से जुड़ी है । लंकापति रावण-बध के उपरांत उनके अनुज विभीषण को लंका का राजा बनाने के बाद वे सीता एवं लक्ष्मण सहित अयोध्या पहुँचे । वे अपने चारों भाइयों एवं पत्नी सीता के साथ इस पुण्य स्थली (सुलतानगंज) से वैद्यनाथ धाम तक पैदल काँवर यात्रा कर शिव का जलाभिषेक किया था । इस दोनों धार्मिक घटनाओं के कारण काँवर-यात्रा की उत्कृष्ठ परंपरा का जन्म हुआ । जन-मानस में इस यात्रा के लिए होड़-सी लग गई । कुई युग बीत गए लेकिन यह परंपरा आज तक अक्षुण्ण रूप से चल रही है । आज इस परंपरा ने विराट रूप धारण कर लिया है । सावन मास में प्रत्येक दिन लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन 'बोल बम' का जयधोष करते हुए देवघर तक आनंद पूर्वक काँवर यात्रा करते हैं । दिनानुदिन भक्तों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है ।

अजगैबीनाथ नाम की सार्थकता

धर्मग्रंथों के अवगाहन से ज्ञात होता है कि परशुराम जी के धनुष का नाम 'अजगब' था । जिसे उनके गुरू स्वयं शिव ने उन्हें शस्त्रशिक्षा के उपरांत उपहार स्वरूप प्रदान किया था । इसी धनुष से उन्होंने

सात बार क्षत्रीय संहार किया था । क्षत्रीय संहार के बाद जब उनका क्रोध शांत हुआ तब उन्होंने अपने 'अजगब धनुष' को इसी मंदिर में विश्राम दे दिया । इसी अजगब धनुष के कारण इस स्थान का नाम 'अजगैबीनाथ' के रूप में विख्यात हुआ । चिरजीवी परशुराम इसी स्थान पर तपस्या में लीन हो गए । अजगब धनुष को विश्राम मिला और परशुराम को अपने गुरू शिव की भक्ति का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ । अब तार्किक बुद्धि एक प्रश्न अवश्य उठाएगी कि जब धनुष इसी स्थान पर रखा गया था तो अब वह धनुष कहाँ है ? इस प्रश्न का उत्तर 'रामचरित मानस' के सीता स्वयंवर प्रसंग में प्राप्त होता है । जब श्रीराम ने राजा जनक की शर्तों के अनुसार स्वयंवर में शिव का धनुष तोड़ा तो मेघगर्जना की भांति भीषण ध्वनि हुई । इस ध्वनि से संपूर्ण वातावरण गुंजायमान हो गया । तपस्यारत परशुराम की आँखें खुल गईं । पलक झपकते ही वे समझ गए कि किसी ने शिव का धनुष तोड़ दिया । क्रोध से उनका देह काँपने लगा । उनके मन में विचार आया कि क्या अभी भी क्षत्रियों का प्रभुत्व शेष है ? वे तत्क्षण अजगब धनुष के साथ वर्तमान में सीतामढ़ी जिलांतर्गत 'धनुषा' नामक स्थान पर पहुँच गए । यह प्रसंग 'मानस' में सविस्तार वर्णित है । परशुराम ने स्वयंवर स्थल पर जब धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए उसे कंधे से उतारा तो वह अनायास श्रीराम की ओर स्वयं ही चला गया । परशुराम जी का क्रोध पानी की तरह बह गया उन्हें ज्ञात हो गया कि श्रीराम और कोई नहीं 'श्रीहरि विष्णु' के अवतार हैं । उन्होंने श्रीराम की स्तुति की -

"राम रमापति कर धनु लेहू खैंचहू चाप मिटै संदेहू।"

इस तरह अजगब धनुष श्रीराम के पास ही रह गया तो फिर वर्तमान समय में उसका इस स्थल (अजगैबीनाथ) पर होना कैसे संभव होगा ?

कालापहाड़ और बाबा हरनाम भारती

इतिहास साक्षी है कि अततायी कालापहाड़ ने सुलतानगंज के मंठघाट पर स्थित पार्वती मंदिर को अपने सैनिकों से ध्वस्त करावाया और मंदिर के मलवे से वहाँ एक मस्जिद का निर्माण करवाया । इसके बाद वह अपने सैनिकों के साथ नाव पर सवार होकर अजगैबीनाथ मंदिर को तोड़ने की योजना के साथ आगे बढ़ने ही वाला था, तभी मंदिर के ऊपर खड़े बाबा हरनाम भारती ने उसे ऐसा नहीं करने की चेतावनी दी । उन्होंने कई तरह से उसे समझाने की कोशिश भी की, अनुरोध किया । किन्तु वह कब मानने वाला था ? तब उन्होंने अपनी साधना की शक्तियों का हवाला दिया कि मैं तुम्हें तुम्हारे सैनिकों सहित जलाकर भस्म करने की क्षमता रखता हूँ । इस पर वह बोला एक बानगी तो दिखा । बाबा को क्रोध आ गया परन्तु उन्होंने संयत होकर कहा किसी जीव की हत्या करना मेरी साधना का उद्देश्य नहीं है । फिर भी, तुम्हारे सामने मैं इस वृक्ष को आधा जलाकर दिखाता हूँ । आधा इसलिए कि यह पेड़ जीवित रह सके । उन्होंने अपने कमंडल से जल निकाला और मंत्र पढ़कर उस वृक्ष पर फेंक दिया । आधा वृक्ष धू-धूकर जलने लगा । इस दृश्य ने कालापहाड़ और उसके सैनिकों को स्तंभित कर दिया । इस पहाड़ी पर आज भी वह वृक्ष जीवित खड़ा है ।

इसके बाद बाबा ने उसे कहा - इस मंदिर को न तोड़ने का फरमान बादशाह सलामत (औरंगजेब) ने दिया है । तब कालापहाड़ ने उस फरमान को दिखाने की जिद्द की । उसे ठहरो कहकर बाबा गंगा में कूद गए और कुछ देर उपरांत एक ताम्रपत्र पर अंकित फरमान उसके सामने रख दिया । वह अचंभित हो गया। उसने प्रश्न किया - ऐ पंडित ! यह बता कि तुमने मेरे ही सामने नदी में छलांग लगाया । कैसे दरबार में हाजिर हुए और बादशाह सलामत से यह फरमान लेकर इतनी जल्दी कैसे वापस यहाँ दाखिल हो गए ? बाबा ने उसे समझाते हुए कहा - यह कठिन साधना और सिद्धि के कारण हुआ जो तेरी समझ के बाहर है । कालापहाड़ ! तुम जितनी जल्दी हो सके यहाँ से कूच कर जाओ और बादशाह सलामत के दरबार में हाजिर होओ । इतिहास गवाह है कि कालापहाड़ आगरा तक नहीं पहुँच पाया । उसकी मृत्यु कैमूर की पहाड़ियों पर ही हो गई ।

बाबा हरनाम भारती

बाबा हरनाम भारती अनन्य शिव साधक थे । अपने भाई के साथ प्रतिदिन सुलतानगंज घाट से काँवर

लेकर बाबा वैद्यनाथ का जलाभिषेक करते थे । यह सिलसिला वर्षों से चल रहा था । एक दिन की बात है- रास्ते में एक कुष्ट रोगी उन दोनों भाइयों के सामने खड़ा हो गया और कहा बहुत प्यासा हूँ, पानी पिलाओ । आसपास कहीं जल का स्रोत नहीं था । सर्वत्र पहाड़ी और पथरीली जमीन थी । अंत में, उन्होंने काँवर पर रखा एक लोटा जल उसे पिला दिया । सामने वाला और पानी की मांग करने लगा । पुनः दूसरे लोटा का जल भी उन्होंने उसे पिला दिया । उस व्यक्ति के तृष्णा का ज्वार जैसे बढ़ गया हो - तीसरा लोटा और अंत में चौथा लोटा पानी पीकर वह (कुष्ट रोगी) तृप्त हो गया । बाबा हरनाम भारती अपने भाई से विमर्श करने लगे । यह तय हुआ कि चलो ! फिर से काँवर भरकर यात्रा आरंभ करते हैं । तब वही कुष्ट रोगी शिव रूप में साक्षात् सामने खड़े होकर मुस्कुरा रहा था । दोनों भाई साष्टांग दण्डवत् कर आश्चर्य और श्रद्धा के मिश्रित भाव लेकर हाथ जोड़े उनके समक्ष खड़े हो गए । भगवान भोले नाथ ने उन्हें समझाया - 'जहाँ से तुम दोनों काँवर उठाकर जहाँ जलभिषेक के लिए जा रहे थे । मैं तो उन दोनों स्थानों पर उपस्थित हूँ । फिर प्रत्येक दिन इतना कष्ट क्यों उठाते हो ? तुम मेरी आराधना, पूजा, ध्यान, साधना आदि वहीं बैठ कर करो, तुम्हारी पूजा अवश्य स्वीकार होगी ।

प्रथा के अनुसार आज भी वैद्यनाथ धाम में पूजा-आरती का समय अजगैबीनाथ की पूजा आरती के पन्द्रह मिनट बाद ही निर्धारित की गई है । मान्यता है कि यहाँ पूजा-आरती के समय बाबा वैद्यनाथ इसी मंदिर में उपस्थित रहते हैं । यहाँ की पूजा समाप्त होने के उपरांत वे वैद्यनाथ धाम में उपस्थित होते हैं ।

मंदिर में स्थापित तीन शिवलिंग

प्रायः शिव मंदिरों में एक शिवलिंग स्थापित की जाती है किन्तु अजगैबीनाथ पहाड़ी पर स्थित मंदिर के गर्भगृह में तीन-तीन शिवलिंग स्थापित हैं । यह बताना कठिन है कि इसकी स्थापना कब और किनके द्वारा को गई है । पूरब दिशा में स्थापित प्रथम लिंग 'कामना लिंग' है जिन्हें 'अजगैबीनाथ' कहते हैं । दूसरा और तीसरा शिवलिंग वर्तमान में खंडित रूप में विद्यमान हैं जिसे हाल में सीमेंट और बालू आदि से कामना लिंग का आकार दिया गया है ।

ऐसा प्रतीत होता है कि 'अजगब' धनुष को विश्राम देने के उपरांत अजगैबीनाथ शिव-लिंग की स्थापना स्वयं परशुराम जी ने की हो । शिव उनके परम गुरू एवं आराध्य देव हैं । दूसरा और तीसरा शिवलिंग क़ालांतर में किसी समर्थ ऋषि या महात्मा द्वारा स्थापित किया गया हो । इस संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि एक लिंग जह्नु ऋषि ने और तीसरा लिंग स्वयं बाबा हरनाम भारती ने स्थापित की हो । यह तो शोध का विषय है ।

यह छोटा-सा शहर सुलतानगंज अपने क्रोड़ में कितनी गंभीर प्रागैतिहासिक इतिहास समेटे हुए है जिस पर गंभीर गवेषनाओं की आवश्यकता है । यहाँ की धरती में कितना कुछ छिपा है यह तो जाँच, परख और शोध के बाद ही सामने आएगा । इस स्थान को किसी विद्वान खोजी की आवश्यकता है जो इस परम-पावन धाम के ऊपर पड़ी समय की धूल हटाकर हमारे समक्ष नवीन दर्शन प्रस्तुत कर सके । अंत में, पुष्यदंत के शब्दों में शिव को नमन -

"असित गिरि समं स्याद् कज्जलं सिंधुपात्रे,
सुर-तरुवर शाखा; लेखनी पत्र मुर्वी ।
लिखति यदि गृहित्वा शारदा सर्व कालम्,
तदपि तब गुणानाम् ईश पारं न याति ।।"

फक्कड़ कवि कबीर ने उपर्युक्त पंक्तियों का भावानुवाद निम्न पंक्तियों में किया है :-

"असि समुद्र की मसि करौं, लेखनी सब बनराई ।
धरती सब कागद करौं, हरि गुण लिखा न जाई ।।"

हमें जगह-जगह से और विभिन्न भाषाओं से अच्छे-अच्छे विचारों को चुनना चाहिए ।

-महामना मदन मोहन मालवीय

राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर

Question and Answer on Rajbhasha for Departmental Examinations

1. भारत संघ की राजभाषा क्या है ?/What is the Official Lanaguage of Union of India ?
देवनागरी लिपि में हिन्दी/Hindi in Devnagari script

2. संसद में संविधान का भाग XVII किस तारीख को पारित हुआ ?
On which date Part XVII of the Constitution was passed in Parliament ?
14.09.1949

3. राजभाषा अधिनियम 1963 कब पारित हुआ ?
When was Offical Lanaguages Act 1963 passed ?
10.5.1963

4. राजभाषा अधिनियम 1963 कब संशोधित हुआ ?
When was Official Languages Act 1963 amended ?
1967

5. राजभाषा नियम के अधीन वर्गीकृत तीन क्षेत्र क्या-क्या हैं ?
What are all the three regions classified under Official Language Rules ?
क, ख, व ग क्षेत्र/A, B & C Regions

6. हर साल "हिंदी दिवस" कब मनाया जाता है ?
When is 'Hindi Day' celebrated every year ?
सितंबर 14/September 14

7. राजभाषा नियम के अनुसार, अंदमान व निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में आता है ?
According to Official Language Rules, under which region Andaman & Nicobar Islands come ?
क क्षेत्र/Region A

8. ख क्षेत्र में वर्गीकृत एकमात्र संघ राज्य क्षेत्र क्या है ?
Which is the only Union Territory classified under Region 'B' ?
चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र/Union Territory of Chandigarh

9. अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा क्या है ?
What is the Official Language of Arunachal Pradesh? अंग्रेजी/English

10. हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के निवासियों को दिए गए आश्वासनों को कानूनी रूप देने के लिए पारित अधिनियम क्या है ?
What is the Act passed to give legal form to the assurances given to Non-Hindi speaking people ?
राजभाषा (संशोधित) अधिनियम-1967/Official Languages Act (Amended) 1967

11. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) कब से प्रवृत्त हुई ?
From when did the Sec 3(3) of Official Languages Act take effect ?
26 जनवरी 1965/26 January 1965

12. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (IV) किससे संबंधित है?
With which section IV of Official Languages Act 1963 is concerned?
संसदीय राजभाषा समिति के गठन से संबंधित है।
It is concerned with the constitution of Parliamentary Committee on Official Language

13. राजभाषा नीति की जानकारी देने वाले अनुच्छेद 343-351 संविधान के किस भाग में हैं?
In which part of the Constitution are the Articles 343-351 that give information about Official Language available?
भाग-XVII-(सत्रहवें भाग)/Part XVII (Seventeenth Part)

14. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 7 का संबंध किसके साथ है?
With which Section 7 of Official Languages Act 1963 is concerned ?
उच्च न्यायालयों के निर्णयों में हिंदी या अन्य राजभाषा के वैकल्पिक प्रयोग से संबंधित है ।
It is concerned with the optional use of Hindi or Other official Language in Judgements in High Courts.

15. राजभाषा अधिनियम 1963, की धाराएं 6 व 7 किस राज्य में लागू नहीं होती ?
In which state Sections 6 & 7 of Official Language Act 1963 do not apply ?
जम्मू व कश्मीर/Jammu and Kashmir

16. किन-किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया है?
In which states Urdu has been declared as Official Language ?
आंध्रप्रदेश व बिहार/Andhra Pradesh & Bihar

17. आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के नाम लिखिए
Please write the languages available in the 8th schedule ?

1. असमिया 2. बंगाल 3. गुजराती 4. हिंदी 5. कन्नड
6. कश्मीरी 7. कोंकणी 8. मलयालम 9. मणिपुरी 10. मराठी
11. नेपाली 12. उड़िया 13. पंजाबी 14. संस्कृत 15. सिंधी
16. तमिल 17. तेलुगु 18. उर्दू 19. बोडो 20. संताली
21. मैथिली 22. डोगरी

1. Assameese 2. Bengali 3. Gujarati 4. Hindi 5. Kannada
6. Kashmiri 7. Konkani 8. Malayalam 9. Manipuri 10. Marathi
11. Nepali 12. Oriya 13. Punjabi 14. Sanskrit 15 Sindi
16. Tamil 17. Telugu 18. Urdu 19. Bodo 20. Santhali
21. Mythili 22. Dogri

18. ख क्षेत्र में आने वाले राज्यों को बताइए/Pease mention the States coming under "B" region?
गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़ के संघ राज्य क्षेत्र दमन-दीव तथा दादर नगर हेवली
Gujarat, Maharashtra, Punjab, Union Territory of Chandigarh, Daman & Diu and Dadra Nagar Haveli

19. फिलहाल संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएं सम्मिलित हैं ?
At present how many languages are enlisted in the Eighth Schedule of the constitution ?
बाइस/22

20. संविधान के भाग-V में राजभाषा नीति संबंधित उपबंध किस अनुच्छेद में हैं?
In which article is the provision regarding OL policy available in Part V of constitution ?
अनुच्छेद 120/Article-120

21. संविधान की आठवीं अनुसूची संबंधी प्रावधान उपलब्ध अनुच्छेद का नाम बताइए ?
Name the article in which the provision of the Eighth schedule of the constitution is available ?
अनुच्छेद 344(1) & 351, Article-344 (1) & 351

22. राजभाषा अधिनियम 1963 क्यों पारित हुआ ?
Why was the OL Act 1963 passed ?
1965 के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने का प्रावधान करने के लिए
To use English along with Hindi even after 1965.

23. राजभाषा नियम कब पारित हुआ ?
When was the Official Languages Rules passed ?
1976

24. संविधान के XVII भाग में कितने अनुच्छेद हैं ?
How many articles are there in Part XVII of the Constitution ?
नौ/9

25. अनुच्छेद 344 के अनुसरण में राजभाषा आयोग की नियुक्ति कब हुई ?
In Compliance of article 344 when was t he Official Language Commission formed?
वर्ष 1955 में/In the year 1955

26. राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?
Who was the First Chairman of the Official Language Commission ?
बी.जी. खेर/B.G. Kher

27. राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए गठित समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?
Who was the First Chariman of the Committee which was formed on the recommendation of the Official Languages Commission?
जी.बी. पंत/G.B. Pant

28. संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद कौन करता है?
As per the Constitution, who is translating the statutory rules, regulations and orders?
विधि मंत्रालय/Law Ministry

29. 1965 तक संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए कौन-सी भाषा मुख्य राजभाषा थी तथा कौन-सी भाषा सहायक राजभाषा?
Which were the main language & co-official language used for the Official purpose of the Union of India upto 1965?
अंग्रेजी मुख्य राजभाषा तथा हिंदी सहायक राजभाषा
English was the Main language & Hindi co-official language

30. Part VI में कौन-सा अनुच्छेद है ?
Which Article comes under Part VI?
अनुच्छेद 210/Article 210.

31. वर्ष 1973 में गठित पहली रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की अध्यक्षता किसने की ?
Who chaired the first Railway Hindi Salahkar Samiti constituted in 1973 ?
श्री ललित नारायण मिश्र/Sri Lalit Narayan Mishra

32. वर्ष 1976 में गठित संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन थे ?
Who was the Chairman of the Parliamentary Committee on Official Language constituted in the year 1976?
तत्कालीन गृह मंत्री श्री ओम मेहता
The then Home Minister Shri Om Mehta.

33. संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी समिति प्रतिवेदन का मसौदा तैयार करती है?
Which committee of the Committee of Parliament on Official Language prepares the draft?
संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति
Drafting & Evidence Sub-Committee of the Committee of Parliament on Official Language

34. राष्ट्रपति के 1952 के आदेशों के अनुपालन के लिए रेलवे बोर्ड में किस वर्ष हिंदी सहायक के एक पद का सृजन हुआ था ?
In which year the post of Hindi Asst. was created in Railway Board in compliance of President's order?
वर्ष 1952 में रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा में
In the General Branch of Railway Board in the year 1952.

35. रेलवे बजट का हिंदी अनुवाद सबसे पहले कब तैयार हुआ था तथा उस समय रेल मंत्री कौन थे ?
In which year the Hindi translation of Railway Budget was prepared and who was the Railway Minister?

51. संसदीय राजभाषा समिति की मुख्य ड्यूटी क्या है?
What is the main duty of the Committee of Parliament on Official Language?
हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा करना
To review the progressive use of Hindi

52. प्रमुख नगरों में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?
Who is the Chairman of the Town Official Language Implementation Committee constituted in major cities?
नगर के केन्द्र सरकार कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी
Senior most Central Govt. Officer of the city

53. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की आवधिकता क्या है ?
What is the periodicity of the meetings of Town Official Language Implementation Committee?
3 महीने में एक बार/Once in 3 Months.

54. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की आवधिकता क्या है?
What is the periodicity of the meeting of Town Official Language Implementation Committee?
6 महीने में एक बार/Once in 6 months

55. राजभाषा पर वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है?
Who prepares the Annual Programme on Official Language?
गृह मंत्रालय/Ministry of Home Affairs

56. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम क्या-क्या हैं?
What are the Hindi courses prescribed for Central Govt. employees?
प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ
Prabodh, Praveen & Pragya

57. केंद्र सरकार के लिपिकीय कर्मचारियों के लिए निर्धारित अंतिम पाठ्यक्रम क्या है?
Which is the final Hindi course prescribed for Clerical cadre employees of Central Govt.?
प्राज्ञ/Pragya

58. हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित होने के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को कौन-सी प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं?
What are all the training facilities available to a Central Govt. employee to get trained in the Hindi courses?
नियमित, गहन, पत्राचार एवं प्राइवेट
Rgular, Intensive, Correspondence and Private

59. साल में कितनी बार नियमित पाठ्यक्रम की हिंदी परीक्षाएँ चलाई जाती हैं?
How many times are the Regualr Hindi examinations conducted in a year?
दो बार/2 times

60. नियमित हिंदी परीक्षाएँ किन-किन महीनों में चलाई जाती हैं?
In which months Regular Hindi examinations are conducted?
मई व नवंबर/May and November

61. हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित होने के लिए कौन योग्य होंगे?
Who are eligible to be trained in the Hindi courses?
केंद्र सरकार के श्रेणी III कर्मचारी व उससे ऊपर के अधिकारी
All the Central Govt. employees in Class III and above.

62. कोटि "क" में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं?
Who are all the employees classified under Category 'A'
जिनकी मातृभाषा हिंदी या हिन्दुस्तानी या उसकी बोली है
Those employees whose mother trngue is Hindi or Hindustani or its dialect.

63. कोटि "ख" में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं?
Who are all the employees classified under Category 'B'?
जिनकी मातृभाषा उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, पुश्तो, सिन्धी या सह भाषा है
Those employees whose mother tongue is Urdu, Punjabi, Kashmiri, Pusto, Sindhi or other allied languages.

64. कोटि "ग" में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं?
Who are all the employees classified under category 'C'?
जिनकी मातृभाषा मराठी, गुजराती, बंगाली, उड़िया या असमिया है
Those employees whose mother tongue is Marathi, Gujarati, Bengali, Oriya or Assameese

65. कोटि "घ" में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं?
Who are all the employees classified under category 'D'?
जो दक्षिण भारत की भाषा या अंग्रेजी बोलते हैं
Those employees who speak a South Indian Languages or English.

66. कोटि "ग" के कर्मचारियों को किस पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित होना अपेक्षित है?
From which course a category 'C' employee required to be trained?
प्रवीण/From Praveen

67. कोटि "घ" के कर्मचारियों को किस पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित होना अपेक्षित है?
From which course a category 'D' employee required to be trained?
प्रबोध/From Prabodh

68. प्राज्ञ पास करने पर मिलने वाला एकमुश्त पुरस्कार क्या है?
What is the lumpsum Award for passing Pragya?
₹ 2400/-

वर्ष 1956 में, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी
In the year 1956, Late Lal Bahadur Shastri.

36. रेलव बोर्ड में हिंदी (संसद) अनुभाग का गठन कब हुआ था?
In which year Hindi (Parliament) section was established in Railway Board?
वर्ष 1960 में/In the year 1960.

37. "क" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?
What are all the States that come under Region "A"?
बिहार, झारखंड, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल और अंदमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र
Bihar, Jharkhand, Delhi, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chattisgarh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttranchal & Andaman & Nicobar island group.

38. "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?
What are all the States that come under Region "C"?
"क" और "ख" क्षेत्र में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, गोवा, जम्मू व कश्मीर, असम, नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, पांडिचेरी के संघ राज्य क्षेत्र व लक्षद्वीप
Region "C" means the States and Union Territories other than those referred to in Region A & B, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andhra Pradesh, Orissa, West Bengal, Goa, Jammu & Kashmir, Assam, Nagaland, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Sikkim, Tripura, Mizoram, Manipur, Union Territory of Pondicherry & Lakshadweep.

39. रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उप समिति करती है?
Which Sub-Committee of the Comittee of Parliament on Official Language inspects Railway Ministry?
दूसरी उप समिति/Second Sub-Committee

40. हिंदी में कार्यालयीन काम करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा लागू की गई योजना क्या है?
What is the scheme implemented by Railway Board for doing work in Hindi?
राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना/Rajbhasha individual Cash Award Scheme

41. प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाएं पास करने पर मिलने वाली पुरस्कार राशि
Amount of Award for Passing Prabodh, Praveen & Pragya Examinations

	प्रबोध Prabodh	प्रवीण Parveen	प्राज्ञ Pragya
70 या उससे अधिक अंक/ 70 or more marks	₹ 1600/-	₹ 1800/-	₹ 2400/-
60-69 अंक/marks	₹ 800/-	₹ 1200/-	₹ 1600/-
55-59 अंक/marks/	₹ 400/-	₹ 600/-	₹ 800/-

42. राजभाषा विभाग का राभाकास से क्या मतलब है?
What is the expansion for OLIC used by Dept. of Official Language?
राजभाषा कार्यान्वयन समिति/Official Language Implementation Committee

43. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कितने पाठ्यक्रम निर्धारित हैं?
How many Hindi courses are prescribed for Central Govt. employees?
तीन/Three

44. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित प्रारंभिक पाठ्यक्रम क्या है?
Which is the elementary Hindi course prescribed for Central Govt. employees?
प्रबोध/Prabodh

45. केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन हैं?
Who is the Chairman of Central Hindi Committee?
प्रधानमंत्री/Prime Minister

46. संबंधित मंत्रालय/विभाग में हिंदी के प्रचार में प्रगति की समीक्षा किस समिति द्वारा की जाती है?
Which Committee reviews the progress made in the propagation of Hindi in a particular Ministry/Department?
हिंदी सलाहकार समिति/Hindi Salahkar Samiti

47. वर्तमान संसदीय राजभाषा समिति का गठन कब हुआ?
When was the present Parliamentary Committee on Official Language constituted?
जनवरी 1976/Jannuary 1976

48. राजभाषा की संसदीय समिति के कितने सदस्य हैं?
How many members are there in the Parliamentary Committee on Official Language?
30

49. संसदीय राजभाषा समिति में लोक सभा के कितने सदस्य हैं?
How many Lok Sabha Members are there in the Committee of Parliament on Official Language?
20

50. फिलहाल राजभाषा की संसदीय समिति की कितनी उप-समितियां हैं?
At present, how many Sub-Committees are there in the Parliamentary Committee on Official Language?
3 उप समितियां/3 Sub-committees

69. रेलवे बोर्ड की राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के अधीन दक्षिण रेलवे से हर साल कितने कर्मचारी/अधिकारी पुरस्कृत होते हैं?
How many Officers/Employees are awarded every year from Southern Railway under Railway Board's Rajbhasha individual Cash Award Scheme?
आठ/Eight

70. सामूहिक नकद पुरस्कार योजना के अधीन दिए जाने वाले प्रथम पुरस्कार की रकम क्या है?
What is the cash award amont for the first prize under Collective Cash Award Scheme?
₹ 1500/- (मुख्यालय में/In HQrs)

71. सामूहिक नकद पुरस्कार योजना के अधीन दिए जाने वाले द्वितीय पुरस्कार की रकम क्या है?
What is the cash award amount for the second prize under Collective Cash Award Scheme?
₹ 1200/- (मंडलों में/In Divisions)

72. सामूहिक नकद पुरस्कार योजना के अधीन दिए जाने वाले तृतीय पुरस्कार की रकम क्या है?
What is the cash award amount for the third prize under Collective Cash Award Scheme?
₹ 800/- (कर्मशालाओं में/In Workshops)

73. साल में 10,000 शब्द से ज्यादा लिखने के लिए एक यूनिट में कितने प्रथम पुरस्कार दिए जाते हैं?
How many first prizes are given in a year for writing more than 10,000 words in one unit?
दो/Two (रुपए 5000/- प्रति कर्मचारी/each employee)

74. साल में 10,000 शब्द से ज्यादा लिखने के लिए एक यूनिट में कितने द्वितीय पुरस्कार दिए जाते हैं?
How many second prizes are given in a year for writing more than 10,000 words in one unit?
तीन/Three (रुपए 3000/- प्रति कर्मचारी/each employee)

75. साल में 100,000 शब्द से ज्याद लिखने के लिए एक यूनिट में कितने तृतीय पुरस्कार दिए जाते हैं?
How many third prizes are given in a year for writing more than 10,000 words in one unit?
पांच/Five (रुपए 2000/-प्रति कर्मचारी/each employee)

76. नाम, पदनाम, साइन बोर्ड को किस क्रम में प्रदर्शित किया जाना है?
In which order Name, Designation and Sign Boards are to be exhibited?
1. प्रादेशिक भाषा 2. हिंदी 3. अंग्रेजी
1. Regional Language 2. Hindi 3. English

77. आम जनता द्वारा प्रयोग किए जाने वाले फार्मों को किस क्रम में तैयार किया जाना है?
In which order forms used by Public are to be prepared?
त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)
Trilingual from (1. Regional Language 2. Hindi 3. English)

78. रबड़ मुहरों को किस प्रकार तैयार किया जाना है?
In which order Rubber Stamps are to be prepared?
हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में-एक लाइन हिंदी एक लाइन अंग्रेजी
Hindi-English Bilingual from-one line Hindi and one line English

79. प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाएं निजी तौर पर उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली एकमुश्त पुरस्कार राशि क्या है?
Amount of lumpsum award for Passing Prabodh, Praveen & Pragya by private study.
प्रबोध व प्रवीण के लिए/For Prabodh & Praveen
₹ 1000/- प्रत्येक के लिए/For each
प्राज्ञ/Pragya ₹ 1200/- प्रत्येक के लिए/For each

80. हिंदी टंकण परीक्षा निजी तौर से उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली एकमुश्त पुरस्कार राशि क्या है?
What is the lumpsum award for passing Hindi Typewriting Examination by private study?
₹ 800/-

81. अष्टम अनुसूची में शामिल विदेशी भाषा क्या है?
What is the Foreign Language included in the Eighth Schedule?
नेपाली/Nepali

82. मंडल रेल कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन हैं?
Who is the Chairman of the Divl. Official Language Implementation Committee?
मंडल रेल प्रबंधक/Divisional Railway Manager

83. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कौन-सा मंत्रालय/कार्यालय हिंदी परीक्षाएं चलाता है?
Which Ministry/Office is conducting the exams for the Central Govt. employees?
गृह मंत्रालय के अधीन हिंदी शिक्षण योजना/Hindi Teaching Scheme under Home Ministry

84. एकमुश्त पुरस्कार के लिए कौन अर्हक होंगे?
Who si eligible for lumpsum award?
ऐसे कर्मचारी जो हिंदी परीक्षा प्राइवेट तौर पर पास करते हैं
Those employees who pass the Hindi exams by private efforts.

85. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)/चेन्नै के अध्यक्ष कौन हैं?
Who is the Chairman of Town Official Language Implementation Committee (offices)/Chennai?
महाप्रबंधक/दक्षिण रेलवे/General Manager/Southern Railway

86. स्टेशन उद्घोषणाओं को किस भाषा के क्रम में करना है?
In which order are the Station announcements made?

त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)/Trilingual (Regional, Hindi & English)

87. रूफ बोर्ड किस अनुपात में प्रदर्शित करना है?
In which proportion the Roof Board has to be displayed?
समानुपात में - त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)
In equal proportion - Trilingual (Regional, Hindi & English)

88. गाड़ियों के पैनल बोर्ड को किस प्रकार प्रदर्शित किया जाना है?
How the panel Board of a train has to be displayed?
त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)/In trilingual (Regional, Hindi & English)

89. वैयक्तिक वेतन के लिए कौन अर्हक होंगे?
Who are all eligible for Personal Pay?
केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा, या जब उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निर्धारित परीक्षा में विनिर्दिष्ट प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण होने पर ।
On passing Pargya Examination organised by the HTS of the Central Government or on passing the prescribed exam duly securing the specified % of marks for certain categories by the Central Government.

90. राजभाषा कार्यान्वयन समिति लिपिकों को दिए जाने वाले मानदेय की राशि क्या है?
What is the amount of Honorarium given to the OLIC Clerks?
₹ 300/-

91. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण पाने के लिए कौन योग्य हैं?
Who are eligible to undergo training in Hindi conversation course?
चालू लाइन के सभी कर्मचारी जो आम जनता से सीधे संपर्क करते हैं। (वर्ग IV के कर्मचारी सहित)
All the open line staff (including Class-IV) who come in contact with public directly.

92. केंद्र सरकार के अधिकारी/कर्मचारी को क्यों हिंदी प्रशिक्षण दिया जाता है?
Why training in Hindi is imparted to Central Government officers/Employees?
ताकि वे हिंदी में अपना दैनंदिन काम करें/By which they can do their day-to-day work in Hindi.

93. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम की अवधि क्या है?
What is the duration for Hindi conversation course?
30 घंटे/30 Hrs.

94. कार्यशाला में प्रशिक्षित होने के लिए कौन योग्य है?
Who are eligible to undergo training in Hindi workshop?
सभी श्रेणी III के कर्मचारी और राजपत्रित अधिकारी जिन्हें हिंदी कार्यसाधक ज्ञान/प्रवीणता प्राप्त है
All class-III and Gazetted staff who have working knowledge/proficiency in Hindi.

95. हिंदी आशुलिपि पास करने पर आशुलिपिक, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, को क्या वैयक्तिक वेतन दिया जाता है?
What is the Personal Pay given for passing Hindi Stenography, to a stenographer whose mother tongue is not Hindi?
वैयक्तिक वेतन के रूप में 12 महीनों के लिए 2 वेतनवृद्धि के समतुल्य राशि
Personal Pay equivalent to 2 increments for a period of 12 months.

96. हिंदी प्रोत्साहन भत्ते के पात्र बनने के लिए टंकक/आशुलिपिक को कितना टंकण कार्य करना चाहिए?
What is the quantum of Hindi Typing work to be done by a Typist/Steno to become eligible for Hindi incentive allowance?
हिंदी में प्रतिदिन पांच नोट या तिमाही में 300 नोट
5 notes in Hindi in a day or 300 Notes in Hindi in a quarter.

97. 90% से ज्यादा और 95% से कम अंक सहित हिंदी टंकण पास करने पर मिलने वाला नकद पुरस्कार क्या है?
What is the amount of Cash Award for passing Hindi typing with 90% or more but less than 95% or marks?
₹ 400/-

98. हिंदी आशुलिपि में 95% से ज्यादा अंक प्राप्त करने पर क्या नकद पुरस्कार मिलेगा?
What is the amount for passing Hindi Stenography with 95% or more marks?
₹ 1200/-

99. अंशकालिक हिंदी पुस्तकपाल को दिया जाने वाला मानदेय क्या हैं?
What is the honorarium amount given to Part-time Hindi Librarian?
500/- प्रतिमाह/per month

100. हिंदी आशुलिपि पास करने पर मिलने वाला एकमुश्त पुरस्कार क्या है?
What is the lumpsum award given for passing Hindi Stenography Examination?
हिंदी आशुलिपि/Hindi Stenography ₹ 1500/-

- रेल राजभाषा (अंक-110) से साभार

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता -विनोवा भावे



दि० 19.12.2018 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह 2018 के अवसर पर मु०का०प्र० श्री डी० मारांडी सभा को संबोधित करते हुए एवं परिलक्षित अधिकारीगण



दि० 11.09.2018 को कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता का संचालन करते हुए उप मुराधि श्री पी० एन० मांझी एवं राजभाषा कर्मीगण



दि० 14.09.2018 को हिन्दी संदेश वाचन के उपरान्त जमालपुर कारखाना के प्रांगण में मंचित नाकट प्रस्तुत करते हुए काराखाने के रंगकर्मी



दि० 12.09.2018 को चिकित्सा संगोष्ठी के अवसर पर व्याख्यान देते हुए डॉ० डी० डी० गोस्वामी । मंच पर बैठे हैं–पूर्व उप मुराधि श्री पी०के० राव एवं डॉ० जी०सी० केसरी तथा वरिष्ठ अनुवादक श्री एम०के० झा (खड़े हैं)



दि० 19.09.2018 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के अवसर पर निबंध लिखते हुए प्रतिभागी एवं निरीक्षण करते हुए पूर्व उप मुराधि श्री पी०के० राव एवं राजभाषा कर्मीगण



दि० 19.12.2018 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह 2018 के अवसर पर प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए मु०का०प्र० श्री डी० मारांडी

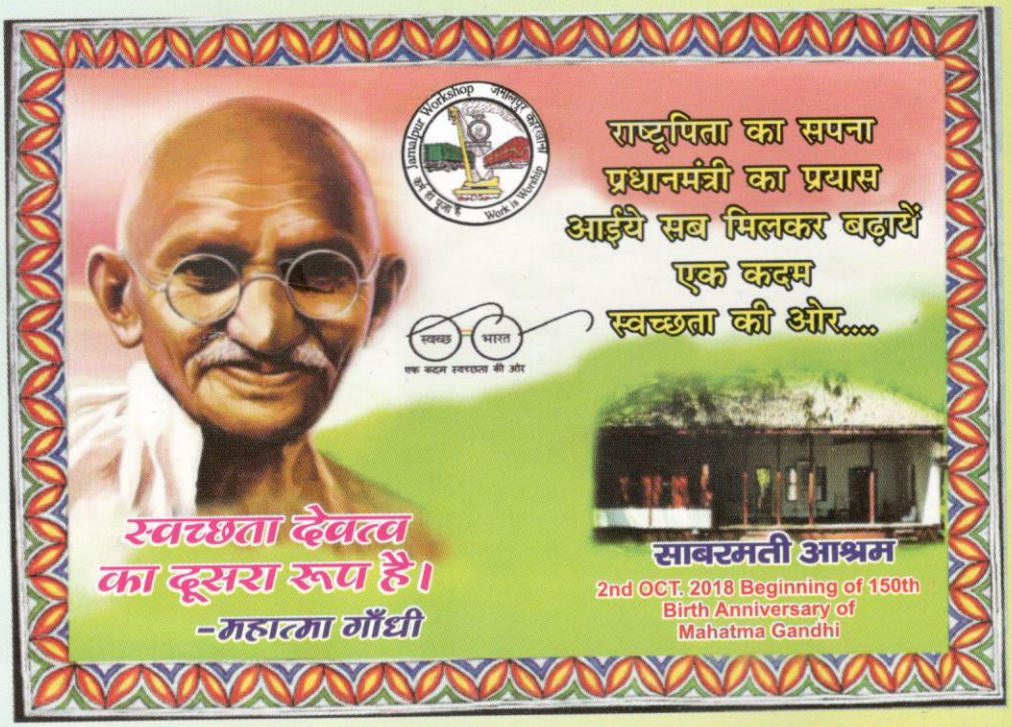


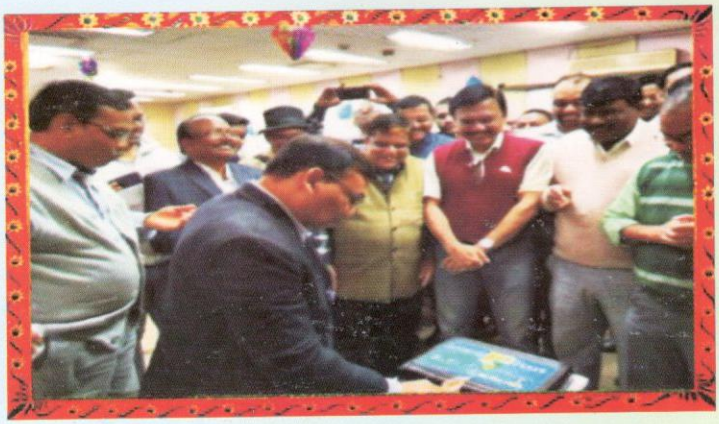
स्वच्छता पखवाड़ा में मंचित नाटक में गाँधी जी की भूमिका में छात्र एवं अन्य कलाकारों के साथ पूर्व मु० का० प्र० श्री ए० के० पाण्डेय



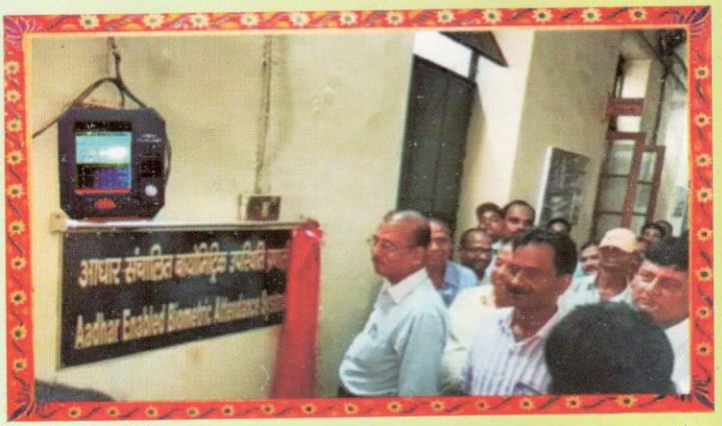
स्वच्छता अभियान के अवसर पर प्रभात फेरी एवं सफाई करते हुए रेलकर्मी

महात्मा गाँधी की 150वीं वर्षगाँठ के अवसर पर जमालपुर कारखाना के प्रांगण के ऊपर लगाया गया गाँधी जी एवं उनके स्वच्छता-संदेश का पोस्टर





मु० का० प्र० श्री डी० मारांडी के द्वारा ई०डी०पी० केन्द्र की 30वीं वर्षगाँठ के अवसर पर कम्प्यूटरनुमा केक काटते हुए।



जमालपुर कारखाना में आधार संचालित उपस्थिति प्रणाली का उद्घाटन